राष्ट्रीय विचारों से ओतप्रोत युवा जागरण का अग्रदूत
RNI no. UPHIN45193/24/1/2014

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत

जय विजय
मासिक

वेबसाइट : www.jayvijay.co, www.jayvijay.co.in

वर्ष-२, अंक-१ लखनऊ अक्तूबर २०१५ विक्रमी सं. २०७२ युगाब्द ५११७ पृष्ठ-२४ रु. १०

१०वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन : सही राह और सच्चे सरोकारों का आईना

भोपाल। १०वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन अब तक के विश्व हिंदी सम्मेलनों में मील के पत्थर की तरह एक महत्वपूर्ण पड़ाव था। १०वें विश्व हिंदी सम्मेलन के संबंध में अभिभूत, गद्‌गद्, भाव-विभोर, अभूतपूर्व, श्रेष्ठतम जैसे किसी एक शब्द का प्रयोग किया जाए तो बात अधूरी होगी। शायद ये सभी शब्द मिलकर भी कमजोर पड़ जाएँ। भोपाल में आयोजित १०वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन न केवल अब तक का सर्वश्रेष्ठ हिंदी सम्मेलन कहा जा सकता है बल्कि यह कहा जाए कि भारत में शायद ही कभी इतना बड़ा, भव्य और सार्थक सम्मेलन हुआ होगा तो भी शायद गलत न होगा। लगता था कि सारा शहर पलक पांवड़े बिछा कर बैठा था। भोपाल में गाड़ी से उतरकर बाहर निकले ही थे कि सम्मेलन के कार्यकर्ताओं ने जिस तरह आगे बढ़कर बुलाया बैठाया और फिर चाय-पानी के बारे में पूछा तो एकबारगी लगा कि शायद इनमें कुछ परिचित हैं जो आवभगत कर रहे हैं, पर ऐसा था नहीं। फिर पूछा कहाँ जाना है, तत्काल गाड़ी की व्यवस्था और वह भी एक कार्यकर्ता सहित। भारत में और वह भी इतने बड़े सम्मेलन में हर व्यक्ति के प्रति ऐसा प्रेम और सद्‌भाव कल्पना से दूर था। मैंने पूछा आप कौन से विभाग से हैं, तो उन्होंने कहा साहब हम स्थानीय भाजपा और संघ के कार्यकर्ता हैं। हमारे देश, हमारे राज्य और हमारे शहर में विश्व हिंदी सम्मेलन हो रहा है यह गर्व और गौरव की बात है। 'अतिथि देवो भव'। हर दिन हर पल ऐसे ही अनुभव थे।

रास्ते भर हिंदी के लेखकों, कवियों व साहित्यकारों की तस्वीरें लगता था कि पूरा शहर हिंदीमय हो गया है। पंडाल हिंदी के रचनाकार साहित्यकारों की अमर रचनाओं से गुंथा हुआ था। सरकारी अधिकारियों और कार्यकर्ताओं की टोलियाँ विनम्रता व सम्मान के साथ सेवा परोसती दिखीं। संख्या की दृष्टि से भी यह सम्मेलन संभवतः सबसे बड़ा सम्मेलन होगा। विदेशों में जहाँ पांच-सात सौ लोग होते हैं तो यहाँ उससे दस गुना लोग थे। कोई सभागार, कोई परिसर इन्हें कहाँ समेट सकता था। इसलिए लाल परेड मैदान को एक विशाल सभा परिसर का स्वरूप प्रदान किया गया था। सुरक्षा ऐसी कि पंछी तक पर न मार सके, खातिरदारी ऐसी कि जैसे बारातियों की होती है। स्वयं मुख्यमंत्री व्यवस्था को इस प्रकार देख रहे थे जैसे बारात में लड़की का पिता काम करता है। उस पर भव्यता स्वच्छता और संयोजन भी उत्कृष्ट था। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान दिन रात इसके आयोजन में लगकर पूरे समय व्यक्तिगत तौर पर इस पर ध्यान दे रहे थे। इस सम्मेलन में सरकार ने आवभगत, भव्य आयोजन करके और देश और प्रदेश की समृद्ध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक झांकी प्रस्तुत कर जिस प्रकार देश-विदेश के प्रतिनिधियों व अतिथियों को

(शेष पृष्ठ २ पर)

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सफल अमेरिका यात्रा

नई दिल्ली। अपना सफल अमेरिका दौरा पूरा कर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भारत लौट आये हैं, इस दौरे पर पर शानदार मेजबानी के लिए मोदी ने अमेरिका का लोगो का शुक्रिया अदा किया।

प्रधानमंत्री मोदी ने संयुक्त राष्ट्र सभा में देश की स्थिर अर्थव्यवस्था और विश्व में बड़े लोकतांत्रिक देश का हवाला देते हुए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थाई सदस्यता की मांग की, उनकी इस मांग का फ्रांस, ब्रिटेन और अमेरिका ने पूरा सर्मथन भी किया।

इस दौरे पर मोदी ने दुनिया की दिग्गज कम्पनियों के सीईओ से मुलाकात कर भारत में निवेश को लेकर चर्चा की तथा साथ ही भारत मे बिजनेस शुरू करने में आ रही कठनाईयों को दूर करने की प्रतिबद्धता जताई।

एप्पल कम्पनी के प्रमुख टिम कुक ने भारत में मेनुफैकच्युरिंग के मुद्दे पर मोदी से बात की, साथ ही गूगल कम्पनी के सीईओ सुंदर पिचई ने १०० रेलवे स्टेशन पर इंटरनेट मुहैया कराने के लिए मोदी को आशान्वित किया। भारत में निवेश के लिए निवेशकों को उत्साहित करने के लिए मोदी ने कहा कि भारत की ६५ प्रतिशत आबादी ३५ वर्ष से कम उम्र की है।

प्रधानमंत्री ने ड़िजीटल इंड़िया के अपने सपने को पूरा करने के लिए मार्क जुकरबर्ग, सत्य नड़ेला और सुंदर पिचई सहित अन्य तकनीक उद्‌मियों को भागीदारी करने के लिए आमंत्रित किया। इसके अलावा मोदी जी ने १६ महीने की अपनी सरकार पर भ्रष्टाचार का कोई भी आरोप ना लगने की बात की। ■

मुंबई धमाकों के आरोपियों को फांसी और उम्र कैद की सजा

मुंबई। ११ जुलाई २००६ को शहर की लोकल ट्रेनों में हुए सीरियल ब्लास्ट के दोषी १२ में से पांच लोगों को फांसी की सजा सुनाई गई है। बाकी सात को उम्रकैद की सजा दी गई है। बुधवार को स्पेशल मकोका कोर्ट के जज यतिन डी शिंदे ने सजा का एलान किया। बचाव पक्ष के वकील ने कहा कि वे हाईकोर्ट जाएंगे। बता दें कि वेस्टर्न सब-अर्बन रूट पर चलने वाली ट्रेनों के ७ कोच में हुए सीरियल ब्लास्ट में १८६ पैसेंजरों की मौत हो गई थी। ८२४ लोग जख्मी हो गए थे।

जिन लोगों को फांसी की सजा सुनाई गई है, उन पर बम प्लान्ट करने का आरोप साबित हुआ है। इन दोषियों के नाम हैं- कमाल अहमद अंसारी (३७) मोहम्मद फैजल शेख (३६), ऐहतेशाम सिद्दीकी (३०), नवेद हुसैन खान (३०) और आसिफ खान (३८)।

उम्रकैद पाने वालों पर इस साजिश में मदद करने और रेकी करने के आरोप साबित हुए हैं। जिन्हें उम्रकैद हुई, वे हैं-तनवीर अहमद अंसारी (३७), मोहम्मद माजिद शफी (३२), शेख आलम शेख (४१), मोहम्मद साजिद अंसारी (३४), मुजम्मिल शेख (२७), सोहेल महमूद शेख (४३) और जमीर अहमद शेख (३६)।

डिफेंस के वकीलों ने कोर्ट से नरमी बरतने की अपील की थी। उनका कहना था कि असली मास्टरमाइंड पाकिस्तानी आतंकी चीमा है, जिसके इशारों पर इस वारदात को अंजाम दिया गया। ११ सितंबर को इस मामले में आरोपी १३ में से १२ को दोषी करार दिया गया था। एक आरोपी को बरी कर दिया गया था। २३ सितंबर को स्पेशल मकोका कोर्ट ने इस मामले में फैसला सुरक्षित रखा था। ■

वैश्विक प्रतिस्पर्धा सूचकांक में ५५वें स्थान पर पहुंचा भारत

जिनेवा। अर्थव्यवस्था के पटरी पर लौटने और कंपनियों के बीच प्रतिस्पर्धा में तेजी आने की बदौलत विश्व आर्थिक मंच (डब्ल्यूईएफ) के दुनिया की सर्वाधिक प्रतिस्पर्धी अर्थव्यवस्था की सूची में इस वर्ष भारत १६ पायदान की छलांग लगाकर ५५वें स्थान पर पहुंच गया।

डब्ल्यूईएफ की जारी वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मक रिपोर्ट २०१५-१६ में कहा गया है कि हाल में भारतीय अर्थव्यवस्था के पटरी पर लौटने, कंपनियों एवं संस्थानों के बीच प्रतिस्पर्धा में तेजी आने और वृहद् आर्थिक वातावरण सुधरने की बदौलत भारत की रैंकिंग में पिछले पांच साल जारी गिरावट थम गई और यह सूचकांक में १६ पायदान की छलांग लगाकर ५५वें स्थान पर पहुंचने में सफल रहा है। रिपोर्ट के अनुसार, दुनिया के सर्वाधिक प्रतिस्पर्धी अर्थव्यवस्था के सूचकांक में स्विट्जरलैंड ने लगातार सातवें वर्ष अपना शीर्ष स्थान बरकरार रखा है। ■

विदेशी निवेश में भारत है नंबर वन

लंदन। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के लिहाज से २०१५ की पहली छमाही में भारत, चीन और अमरीका को पीछे छोड़ते हुए दुनिया का सबसे आकर्षक देश बन गया है.

लंदन से प्रकाशित फाइनेंशियल टाइम्स ने आंकड़ों के हवाले से कहा है कि जनवरी से जून के बीच भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश ३१ अरब डालर, जबकि चीन में २८ और अमरीका में २७ अरब डालर रहा. पिछले कई सालों से एफडीआई के मामले में अमरीका और चीन के बीच बराबर की टक्कर रही है.

भारत ग्लोबल कम्पिटिटिव इंडेक्स में १६ पायदान की छलांग लगाई है और अब वह १४० देशों में ५५वें नंबर पर है. यह सूचकांक संस्थानों, आर्थिक माहौल, शिक्षा, बाजार का आकार और बुनियादी सुविधाओं जैसे मानकों के आधार पर तैयार किया जाता है. ■

कार्टून

शक्ति प्रदर्शन...! -- मनोज कुरील

(पृष्ठ १ का शेष)

विश्व हिन्दी सम्मेलन

लुभाया उससे राज्य सरकार ने सम्मेलन के बहाने राज्य में पर्यटन को बढ़ावा देने का कार्य भी कुशलतापूर्वक किया है।

पहले ही दिन भारत के प्रधानमंत्री ने सम्मेलन में पधारकर राजभाषा हिंदी के प्रति अपने सरोकार प्रकट कर दिए और अपने ओजस्वी भाषण के माध्यम से हिंदी को उचित स्थान दिलवाने का निश्चय भी प्रकट कर दिया था। प्रधानमंत्री, विदेश मंत्री, गृहमंत्री, गृह राज्यमंत्री, विदेश राज्य मंत्री, सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री, तीन राज्यपाल और अनेक सांसद और विधायकों सहित हिंदी के लिए देश और राज्य सरकार के तमाम बड़े चेहरे पूरी तन्मयता से लगे थे। समापन में तो हरियाणा और छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भी मौजूद थे। स्वयं मुख्यमंत्री एक सत्र की संगोष्ठी संचालक के रूप में और तीनों दिन एक कुशल श्रोता के रूप में विद्वानों और प्रतिभागियों के विचार व सुझाव सुन रहे थे।

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का भाषण तो प्रभावमय था ही समानान्तर प्रशासन सत्र में स्वयं बैठकर एक कुशल संगोष्ठी संचालक के रूप में भी उनकी भूमिका प्रभावी व महत्वपूर्ण थी। वे प्रतिनिधियों और विद्वानों के विचार सुनने व सभी को अवसर देने के लिए प्रयासरत थे और शायद सर्वाधिक प्रतिनिधियों ने अपनी बात रखी। उन्होंने सम्मेलन के दौरान बार-बार यह संकल्प व्यक्त किया कि वे सम्मेलन में लिए गए सभी निर्णयों को अपनी राज्य में लागू करेंगे। इससे सम्मेलन में पधारे प्रतिनिधियों का उत्साह तो बढ़ ही रहा था अन्य मंत्रियों व नेताओं को भी संदेश जा रहा था। निश्चय ही हरियाणा और छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री तक भी संदेश पहुंचा होगा और कुछ वैसा ही वहाँ भी होने की आस तो पैदा होती है।

पहली बार ऐसा हुआ विभिन्न सत्रों में लिए व दिए गए सुझाव सम्मेलन में ही निष्कर्ष रुप में और सिफारिश रुप में प्रस्तुत किए गए और उन्हें लागू करने का संकल्प भी व्यक्त किया गया। अंत में भारत के गृह मंत्री ने आगे बढ़कर यह कहा कि हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा होनी चाहिए। उन्होंने यह संकल्प भी व्यक्त किया कि जिस प्रकार योग दिवस के लिए विश्व के विभिन्न देशों का समर्थन प्राप्त किया गया है, उसी प्रकार हिंदी के लिए भी समर्थन जुटाने के प्रयास किए जाएंगे। निश्चय ही सार्थकता की दृष्टि से भी यह सम्मेलन बाकी सम्मेलनों से काफी आगे दिखाई देता है। सभी पक्षों में सबसे आगे होने के चलते १०वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन भुलाए न भूलेगा। ■

सुभाषित

सुकुले योजयेत् कन्या, पुत्रं विद्यासु योजयेत्।
व्यसने योजयेत् शत्रुं, मित्रं धर्मं नियोजयेत्।। (चाणक्य नीति)

अर्थ– अच्छे कुल में कन्या को प्रदान करे और पुत्र को उत्तम विद्याओं के अभयास में लगाये, दुष्ट शत्रु को आपत्तियों में फंसाये रखे और मित्र को सदा उत्तम धर्म के कार्यों में लगाये।

पद्यार्थ– कन्या कर दान भले कुल में, जिससे सुख जीवन में अति पावै।
पुत्र सदा सुख से विचरे, इससे शुभ ज्ञान उसे करवावै।
शत्रु न भूल चढ़े सिर पै, नित झंझट बीच उसे उलझावै।
मित्र मिले हित का कर ज्ञान, सदा उससे शुभ काम करावै।।

(आचार्य स्वदेश)

सम्पादकीय

अच्छे दिनों की स्पष्ट आहट

मोदी जी के जिन अच्छे दिनों के जुमले का विरोधी दल आये दिन मजाक उड़ाते रहते हैं, अब उनकी आहट स्पष्ट सुनाई पड़ने लगी है। मोदी जी के लगातार प्रयत्नों से और ऊपरी स्तर पर भ्रष्टाचार पर पूरी तरह लगाम लगाने से भारत की अर्थव्यवस्था तमाम आशंकाओं को दूर करती हुई और संकटों को पार करती हुई निरंतर मजबूती की ओर अग्रसर है। इसके कई प्रमाण इन दिनों प्राप्त हो रहे हैं।

हाल ही में भारत ने सबसे अच्छे निवेश योग्य देशों की सूची में ७१वें स्थान से १६ स्थान ऊपर छलांग लगाते हुए ५५वां स्थान प्राप्त किया है। यह विश्व आर्थिक मंच की नवीनतम रिपोर्ट से पता चला है। इसकी पुष्टि इस बात से भी होती है कि चालू वित्तीय वर्ष की पहली छमाही में भारत विदेशी निवेश प्राप्त करने में सबसे आगे रहा है और इसमें उसने चीन और अमेरिका जैसे धुरंधर देशों की अर्थव्यवस्थाओं को भी पीछे छोड़ दिया है।

ये दो प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय सूचक इस बात के स्पष्ट प्रमाण हैं कि प्रधानमंत्री मोदी जी ने देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए जिन नीतियों का पालन किया है और विदेशा यात्राओं तथा अन्य रूपों में जो अनथक प्रयास किये हैं वे सही दिशा में हैं और उनके सुपरिणाम मिलने लगे हैं।

इतने स्पष्ट प्रमाणों के होते हुए भी कई विरोधी दल मोदी जी की सफल विदेश यात्राओं की खिल्ली उड़ाकर और अर्थ व्यवस्था को चौपट करने के प्रयासों का आरोप लगाकर अपनी मूर्खता और क्षुद्रता का परिचय दे रहे हैं। देश की जनता इन बातों को पूरी तरह समझ रही है और मंहगाई के बावजूद उसको मोदी जी की नीतियों पर भरोसा बढ़ा है। यही कारण है कि आये दिन होने वाले चुनावों में विरोधी दलों को मुंह की खानी पड़ी है और भाजपा लगातार जीत रही है, चाहे वे विधानसभा चुनाव हों, या नगर निगम और नगर पालिका अथवा पंचायत स्तरीय।

अक्तूबर और नवम्बर में बिहार जैसे बड़े और महत्वपूर्ण राज्य के विधानसभा चुनाव हो रहे हैं, जिनका बिगुल बज चुका है और प्रक्रिया प्रारम्भ हो गयी है। इनमें एक ओर भाजपा और उसके स्थानीय सहयोगी दलों का राजग है, तो दूसरी ओर लालू प्रसाद के राजद, नीतिश कुमार की जनता दल (यू) और राहुल गांधी की कांग्रेस का महागठबंधन है। इसी में पहले मुलायम सिंह की सपा भ ीशामिल थी, लेकिन जैसा कि बेमेल गठबंधनों में प्रायः होता है, वे सीटों की बंदरबांट से असंतुष्ट होकर निकल गये और कुछ छोटे-छोटे दलों को मिलाकर एक तीसरा मोर्चा बना लिया है, जो मैदान में ताल ठोंक रहा है।

देखना बस यह है कि बिहार की जनता इन चुनावों में मोदी जी और राजग के साथ आते हुए विकास के रास्ते पर चलना पसंद करती है या लालू-नीतिश के जंगलराज-मंडलराज भाग-२ के पक्ष में बटन दबाती है।

-- विजय कुमार सिंघल

आपके पत्र

उच्चकोटि की इतनी साहित्यिक सामग्री एक साथ देखकर मन हर्षित हो उठता है. उत्ष्ट बाल रचनाएं बच्चों के कोमल मन को छूने में समर्थ हैं. प्रवासी पन्ने से भी देश की माटी की महक ने भावाभिभूत किया. -- **लीला तिवानी**

आपने 'तुम्हारी अर्चना' की समीक्षा को पत्रिका में स्थान देकर इस किताब का मान बढाया है। पूरी पत्रिका भी पढ़ी - कवर टू कवर ! बहुत ही उत्ष्ट रचनाएँ एवं बहुत उम्दा संपादन। आपको साधुवाद! -- **अर्चना पांडा**

विजय जी, दूर जाकर भी पत्रिका के द्वारा आप हमारे साथ हैं। सम्पर्क में बने रहें। दुआ करता हूं। -- **मनोज मौन, लखनऊ**

'जय विजय' में सामग्री उत्तम है, लेकिन कविताओं की भरमार खटकती है। कवितायें कम करके अन्य सामग्री अधिक छापें। 'सामान्य ज्ञान' का स्तम्भ क्यों बंद कर दिया? वह बहुत अच्छा स्तम्भ था। उसे फिर से शुरू करें। -- **नफ़ीसा नाज़**

सम्पादकीय में यह लाइन बहुत पसंद आई कि "मुसलमान चाहे हिंदुस्तान का हो या पाकिस्तान का उसकी औरंगजेबी मानसिकता में कोई अंतर नहीं है।" यह वास्तव में एक कटु सत्य है, जिस पर हर हिंदुस्तानी को आज गम्भीरता से सोचना होगा। अगर नहीं सोचा तो कहना पड़ेगा कि देश के हालात ठीक नहीं हैं।

-- **चंद्रशेखर पंत, मुम्बई**

सब कुछ है पत्रिका में जो परिवार के मध्य रहकर सभी पढ़ सकते हैं।

-- **सुधीर सिंह, राष्ट्रीय संयोजक, मंजिल ग्रुप साहित्यिक मंच**

उत्तम अंक। आपके स्थानांतरण का कोई असर पत्रिका की गुणवत्ता पर नहीं पडा. ये आपके पुरुषार्थ, सार्थकता और स्पष्ट दृष्टिकोण को दर्शाता है। 'तनावग्रस्तता या चिंतित होना' लेख प्रेरणा दायक तो है ही बहुत कुछ संवाद करता सा प्रतीत होता है। जो लोग इसे पढ़ेंगे वे लाभान्वित हुए बगैर नहीं रहेंगे।

मनोज कुरील का कार्टून बहुत कुछ कहता है। समझदार के लिए इशारा बहुत होता है। हमारे राजनीतिज्ञ, तुष्टीकरण नीति में विश्वास रखने वाले लोग, जातिवादिता में आस्था रखने वाले, कट्टरवादी, समाजवादी सब जानते हुए भी अनजान बने रहना चाहते हैं। जो देश की वर्तमान हालत दुर्दशा के लिए जिम्मेदार हैं।

तरुण विजय का आर्टीकल उत्तम है। कुल मिलाकर 'जय विजय' पत्रिका दिन ब दिन तरक्की कर रही है। बधाई। -- **देवकी नन्दन 'शांत'**

एक साल की अवधि में 'जय-विजय' का १२वां अंक! पत्रिका ने साहित्य के शिखर को छुआ है। साहित्य की सभी विधाओं जैसे कविता, कहानी, लघु कथा, हाइकु, आलेख, सामयिक लेख आदि से सुज्जित है। इससे आपकी कर्मठता का परिचय मिलता हैं। विश्व के सभी साहित्यकारों से में जुड़ जाती हूँ। मेरी भी गजल प्रकाशित हुई है। आपका आभार। -- **मंजू गुप्ता**

मेरी रचना सहित अर्चना जी की किताब की समीक्षा को इस अंक में स्थान देने के लिए बहुत बहुत धन्यवाद। आपने लिखा भी बहुत अच्छा है। अंक तो अच्छा है ही इतने कम पृष्ठों में इतनी साहित्यिक सामग्री का समावेश सामान्यतः अन्यत्र नहीं दिखता। ये आपके साहित्यिक समर्पण का द्योतक है। -- **डॉ. कमलेश द्विवेदी**

इस अंक में अपनी एक भी रचना न पाकर थोड़ी सी निराशा तो है पर इतने सारे लेखकों की रचनाओं को पढ़कर प्रसन्नता हुई। पत्रिका हेतु रचनायें चुनना भी काफी मुश्किल काम है, ऐसे में कुछ रचनाओं का छूट जाना स्वभाविक ही है।

-- **माधव अवाना**

हाइकु पर लेख देखकर अनुगृहीत हूँ, आभारी हूँ। -- **विभा रानी श्रीवास्तव**

मेरी रचना को पत्रिका में स्थान देने के लिए हार्दिक आभार। -- **पूनम पाण्डेय**

सितम्बर अंक में मेरी बाल कहानी प्रकाशित करने हेतु आपका हार्दिक आभार।

-- **नीरजा मेहता**

बहुत बहुत आभार आपका मेरी कहानी को पत्रिका में स्थान देने के लिए।

-- **गीता पुरोहित**

(सभी कृपालु पत्र-लेखकों का हार्दिक आभार! - सम्पादक)

कहां ले जा रहे हैं हम हिन्दी को?

एकता सारदा

एक तरफ हिन्दी को हम राष्ट्रभाषा बोलते है। और हिन्दी दिवस की महत्ता समझाते हुऐ सम्मेलन, गोष्ठियों का आयोजन करते है। वैश्विक रुप से इसका विस्तार चाहते है और तो और हिन्दी के लिए हर आम आदमी एक क्रान्ति लाना चाहता है। मगर हम इसे वास्तविकता में कितना अपनाते हैं ?

अभी हाल ही में विश्व हिन्दी सम्मेलन हुआ। कई जगह सुनने में आया कि हिन्दी भाषा को लेकर कई गोष्ठियाँ भी हुईं। पर क्या कहीं कुछ असर होगा? नहीं! क्यूंकि यह वो कार्य है जो दिखाने के लिए हम कई सालों से कर रहे हैं मगर परिणाम आज तक नहीं दिखे। फिर क्या मतलब इस तरह के दिवस मनाने का या इसके लिए आयोजन करने का?

हिन्दी हर हिन्दुस्तानी द्वारा बोली जाने वाली आम भाषा है। मुझे नहीं लगता इसे सीखने में भी हमारे आस पास के माहौल में कहीं कोई कमी रहती होगी या हमारी सोच पर भारी पड़ती होगी। मगर हम इसे अपने परिवेश में नहीं लाना चाहते। क्यूं? क्यूंकि हमारे दिलो दिमाग में हिन्दी के लिए कोई जगह नहीं। अंग्रेजी पढ़ने एवं बोलने में हम अपनी शान समझते हैं। हमारा स्टेटस बनता है। हम स्वयं को पूर्ण मानते हैं। अरे भई एक तरफ हम हिन्दी को मां का दर्जा देते हैं, दूसरी तरफ उसकी अवहेलना करते हैं तो हमारी आने वाली पीढ़ी भी यही सीखेगी। हम कहते हैं आजकल के बच्चे संस्कृति, सभ्यता भूल रहे हैं और पाश्चात्य संस्कृति को अपना रहे हैं, तो उन्हें यह थाली हमने ही परोस कर दी है।

आज आप किसी से भी हिन्दी और अंग्रेजी में लेख लिखने को बोलिये जहां आपको अंग्रेजी में अच्छा खासा लेख मिलेगा वही हिन्दी में एक ही पंक्ति छोटे से लेख में चार बार घुमा फिराकर मिल जायेगी वो भी अनेक गलतियों के साथ। क्यूं भई, ऐसा क्या हो गया जो आप अपनी भाषा छोड़कर पराई भाषा पर बल देते हैंं

हम इसकी जड़ में जायेंगे तो बहुत कटु तथ्य मिलेंगे। विदेशी सभ्यता हम पर इस कदर हावी हो चुकी है कि हम स्वयं ही इसे नकारना चाहते हैं। अपने बच्चों को अंग्रेजी विद्यालय में दाखिल करवायेंगे भले ही वहां अत्यधिक पैसे देने पड़ें, मगर हिन्दी विद्यालय में नही डालेंगे क्यूंकि हमारा 'सो कोल्ड स्टेटस' खराब होता है समाज में। वैसे इसमें पूर्णत आम आदमी भी दोषी नही आज हिन्दी को हमारी हर व्यवस्था में मुंह की खानी पड़ती है फिर वह नौकरी हो, कहीं दाखिला हो या कहीं अन्यत्र कार्य। कार्य प्रणाली हमारे देश की, प्रगति हमारे देश की, सोच समझ हमारी अपनी मगर हावी इन सब पर अंग्रेजी ?

ये कहां जा रहे हैं हम और कहां ले जा रहे है अपनी भाषा को? आज अपने ही देश में हिन्दी को अपने वर्चस्व की लड़ाई लड़नी पड़ रही है। हमारे अपने घर में ही तिल तिल मर रही है हिन्दी। हमारे बच्चे अपने संस्कारों में नमस्ते, नमस्कार छोड़कर हाय, हैलो अपना रहे है। हर वो चीज हो रही है जो हमारी सभ्यता में है ही नहीं।

मैं यह नहीं कहती कि अंग्रेजी को पूर्णत अस्वीकार किया जाये। यह हो भी नहीं सकता। इसे नकारना तो अंसभव है मगर इसका मतलब यह भी नही की हम इसे मालिकाना हक दे दे। यह तो फिर वो मकान हुआ जो किराये पर लिया था पर पीढ़ी दर पीढ़ी रहते आ रहे हैं, तो अब ये हमारा हो गया?

या तो हिन्दी के नाम पर किये जाने वाले ढकोसले बंद ही कर दो अन्यथा उसके लिए यूं दिखावा मत करो, जैसे जीते जी माँ की परवाह की नही पुण्यतिथि पर भोज करवाया। बड़े शर्म की बात है कि आज हमारी भाषा हमारे ही देश में अपनी पहचान पाने के लिये लड़ रही है और परिणाम भी लगभग तय है कि कुछ नही मिलेगा। अपने ही देश में अपनों के ही आगे वो अंग्रेजी के प्रभाव से तड़प तड़प कर मरेगी।

अब जरूरत क्रान्ति की नही अहसास की है । कहां तक आंदोलन या परिचर्चा करेंगे यह जड़ से उखड़ चुकी है। कुछ नहीं बस इतनी इल्तजा है की यह पूर्णत न दब जाये इससे पहले इसे अपनाओ। हम हिंदुस्तानियों में इतनी सक्षमता है कि हम अपने (हिन्दी भाषा के) बलबूते पर सब हासिल कर सकते हैं जरूरत नहीं हमें किसी विदेशी शक्ति (अंग्रेजी भाषा) की। बस जरूरत है आपने अंदर छुपे अपने गुणों को पहचानने की और अपनी भाषा को अपना उचित स्थान दिलाने की। ■

बुखार

विजय कुमार सिंघल

बुखार सामान्य तौर पर सबको हर मौसम में हो जाने वाली शिकायत है। ऐलोपैथिक डाक्टर इसका कोई कारण नहीं बता पाते। टालने के लिए कह देते हैं कि इन्फैक्शन है या वायरल फीवर है। वास्तव में बुखार कोई बीमारी नहीं बल्कि दवा है। जब शरीर में विकार एक सीमा से अधिक एकत्र हो जाते हैं और किसी अन्य रूप में नहीं निकल पाते, तो प्रकृति उन्हें अन्दर ही अन्दर जलाने का प्रयास करती है। इसी से शरीर का तापमान बढ़ जाता है। यदि हम प्रकृति के इस कार्य में सहयोग करें और बाहर से नये विकार न डालें, तो पुराने विकार जल जाने के बाद बुखार अपने आप ठीक हो जाता है।

यदि हम बुखार को स्वाभाविक रूप से निकलने दें, तो वह शरीर को स्वस्थ करके स्वयं ही चला जाता है। इसके विपरीत उसे दवाओं से दबा देने पर विकार किसी नये और अधिक भयंकर रूप में निकलने लगते हैं। गोलियाँ खाकर बुखार को दबा देना ठीक वैसा ही है जैसे आग में पानी डालना। इससे उस समय तो आग बुझ जाती है, लेकिन जिस ईंधन (अर्थात् विकार) के कारण आग लगी थी वह शरीर में ही रुका रहता है और आगे चलकर बहुत परेशान करता है। प्रायः यह देखा गया है कि गोलियाँ खाकर दबाया गया बुखार कुछ घंटे या कुछ दिन बाद और अधिक तीव्रता से आ जाता है, जिससे रोगी के जीवन को ही खतरा उत्पन्न हो जाता है।

बुखार की चिकित्सा उसकी तीव्रता के अनुसार करनी चाहिए। सबसे पहली बात तो यह है कि बुखार चाहे कम हो या अधिक रोगी को बुखार आते ही उपवास प्रारम्भ कर देना चाहिए। बुखार रहने तक और उसके एक दिन बाद तक भी रोगी को केवल उबाला हुआ पानी ठंडा करके पिलाना चाहिए। इस बीच उसे खाने को कुछ न दिया जाय तो बेहतर है, क्योंकि बुखार में भूख वैसे भी नहीं लगती। लेकिन यदि भूख लगी हो और कुछ देना ही हो, तो मौसमी फलों का रस या सब्जियों का सूप कम मात्रा में देना चाहिए। बुखार के रोगी को दूध और उससे बनी हुई कोई वस्तु देना बहुत हानिकारक है। इसके स्थान पर पतला दलिया या दाल का पानी दिया जा सकता है।

यदि बुखार १०० डिग्री तक हो तो चिन्ता की कोई बात नहीं है। ऐसा बुखार कुछ न करने पर और केवल उपवास करने पर दो या तीन दिन में अपने आप चला जाता है। यदि आप इसके साथ दिन में दो या तीन बार पेडू पर ठंडे पानी की पट्टी १५-२० मिनट तक रखें, तो रोगी को बहुत आराम मिलता है।

बुखार में प्रत्येक दिन रोगी का शरीर गुनगुने पानी में गीले किये हुए कपड़े से रगड़कर पोंछ देना चाहिए। इसकी विधि यह है कि एक भगौने में गर्म पानी लें और दूसरे में साधारण। अब एक रूमाल जैसे तौलिये को गर्म पानी में भिगोकर हलका निचोड़ लें और उससे किसी एक अंग जैसे एक हाथ, या एक पैर, या सिर या पेट या पीठ को रगड़कर पोंछ दें। इसके तुरन्त बाद उस अंग को एक सूखे तौलिये से पोंछकर पानी साफ कर दें। अब गीले तौलिये को सादा पानी में खूब धोकर निचोड़ लें और फिर उसे गर्म पानी में गीला करके कोई दूसरा अंग पोंछें। इस तरह करते हुए पूरे शरीर को पोंछ देना चाहिए। अन्त में रोगी को साफ धुले हुए ढीले कपड़े पहना देने चाहिए। इस तरह गर्म पानी में भीगी तौलिया से रगड़ने पर शरीर के सभी रोम छिद्र खुल जाते हैं और विकारों को पसीने के रूप में निकलने का मार्ग मिल

(शेष पृष्ठ २० पर)

वेद और धर्म सम्मत शासन प्रणाली

मनमोहन कुमार आर्य

महर्षि दयानन्द की मान्यता है कि वेद एवं इसके अनुपूरक वैदिक साहित्य में राजकीय शासन व्यवस्था पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। वेद एवं मनुस्मृति के आधार पर ही सृष्टि के आरम्भ से महाभारत काल तक लाखों-करोड़ों वर्षों तक आर्यावर्त वा भारत ही नहीं अपितु संसार के सभी देशों का राज्य संचालन हुआ है। हम महर्षि रचित सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास से वेद एवं वेदमूलक मनुस्मृति के शासन व्यवस्था सम्बन्धी विचार व मान्यतायें प्रस्तुत कर रहे हैं।

राजर्षि मनु ने अपने विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ मनुस्मृति में चारों वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र एवं चारों आश्रमों ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास के व्यवहार का युक्तिसंगत कथन किया है। इसके पश्चात् उन्होंने राजधर्मों वा राजनियमों का विधान किया है। महर्षि मनु लिखते हैं कि जैसा परम विद्वान् ब्राह्मण होता है वैसा ही सुशिक्षित विद्वान क्षत्रिय को होना योग्य है कि जिससे कि वह सब राज्य वा देश की रक्षा यथावत् करें। ऋग्वेद के मण्डल ३ सूक्त ३८ मन्त्र ६ में कहा गया है कि 'त्रीणि राजाना विदथे पुरूणि परि विश्वानि भूषथः सदांसि।।' ईश्वर सृष्टि के आरम्भ में अग्नि नाम के ऋषि को इस मन्त्र द्वारा यह उपदेश करते हैं कि राजा और प्रजा (देश की समस्त जनता) मिल कर सुख प्राप्ति और विज्ञान वृद्धिकारक राजा प्रजा के सम्बन्धरूप व्यवहार के लिए तीन सभा प्रथम विद्यार्यसभा, द्वितीय धर्मार्यसभा तथा तृतीय राजार्यसभा नियत वा गठित करें। राजा, प्रजा व तीनों सभायें समग्र प्रजा वा मनुष्यादि प्राणियों को बहुत प्रकार की विद्या, स्वातन्त्रय, धर्म, सुशिक्षा और धनादि से अलंकृत करें।

अथर्ववेद के काण्ड १५ के मन्त्र 'तं सभा च समितिश्च सेना च।' और अथर्ववेद के ही काण्ड १६ के मन्त्र 'सभ्य सभां मे पाहि ये च सभ्याः सभासदः।' में कहा है कि इस प्रकार से राजा व तीन सभाओं द्वारा निर्धारित राजधर्म का पालन तीनों सभायें सेना के साथ मिलकर करें व संग्राम आदि की व्यवस्था करें। राजा तीनों सभाओं के सभासदों को आज्ञा करे कि हे सभा के योग्य मुख्य सभासदों ! तुम मेरी सभा व सभाओं की धर्मयुक्त व्यवस्था का पालन करो। यहां वेद कहते हैं कि तीनों सभाओं के सभासदों को सभेश राजा की धर्मयुक्त आज्ञाओं का सहर्ष पालन करना चाहिये।

वेद मन्त्रों की इन शिक्षाओं पर टिप्पणी कर महर्षि दयानन्द कहते हैं कि इसका अभिप्राय यह है कि एक व्यक्ति वा राजा को स्वतन्त्र राज्य का अधिकार न देना चाहिए किन्तु राजा जो सभापति, तदधीन सभा, सभाधीन राजा, राजा और सभा प्रजा के आधीन और प्रजा राजसभा के आधीन रहें। यदि ऐसा न करोगे तो 'राष्ट्रमेव विश्या हन्ति तस्माद्राष्ट्री विशं घातुकः।। विशमेव राष्ट्रायाद्यां करोति तस्माद्राष्ट्री विशमत्ति न पुष्टं पशुं मन्यत इति।।' (शतपथ ब्राह्मण काण्ड १३/२/३३) यदि प्रजा से स्वतन्त्र व स्वाधीन राजवर्ग रहे तो वह राज्य में प्रवेश करके प्रजा का नाश किया करे और अकेला राजा स्वाधीन वा उन्मत्त होके प्रजा का नाशक होता है अर्थात् वह राजा प्रजा को खाये जाता है। इसलिये किसी एक को राज्य में स्वाधीन न करना चाहिये। जैसे मांसाहारी सिंह हृष्ट पुष्ट पशु को मार कर खा लेते हैं, वैसे स्वतन्त्र राजा प्रजा का नाश करता है अर्थात् किसी को अपने से अधिक न होने देता, श्रीमानों व धनिकों को लूट-अन्याय से दण्ड देके अपना प्रयोजन पूरा करेगा।

अथर्ववेद के मन्त्र ६/१०/९८/१ के अनुसार राजा को मनुष्य समुदाय में परम ऐश्वर्य का सृजनकर्ता व शत्रुओं को जीतने वाला होना चाहिये। वह शत्रुओं से पराजित कभी नहीं होना चाहिये। इसके साथ ही राजा ऐसे व्यक्ति को बनाना चाहिये जो पड़ोसी व विश्व के राजाओं से अधिक योग्य वा सर्वोपरि विराजमान व प्रकाशमान होने के साथ सभापति होने के अत्यन्त योग्य हो तथा वह प्रशंसनीय गुण, कर्म, स्वभावयुक्त, सत्करणीय, समीप जाने और शरण लेने योग्य सब का माननीय होवे। इससे यह आभास मिलता है कि राजा में एक सैनिक व सेनापति के भी उच्च गुण होने चाहिये। यजुर्वेद के मन्त्र ९/४० में विद्वान राज-प्रजाजनों को सम्मति कर ऐसे व्यक्ति को राजा बनाने को कहा गया है कि जो बड़े चक्रवर्ति राज्य को स्थापित करने में योग्य हो, बड़े-बड़े विद्वानों को राज्य पालन व संचालन में नियुक्त करने योग्य हो तथा राज्य को परम ऐश्वर्ययुक्त, सम्पन्न व समृद्ध कर सकता हो। वह सर्वत्र पक्षपातरहित, पूर्ण विद्या विनययुक्त तथा सब प्रजाजनों का मित्रवत् होकर सब भूगोल को शत्रु रहित करे।

ऋग्वेद के मन्त्र १/३९/२ में ईश्वर ने उपदेश किया है कि हे राजपुरुषो ! तुम्हारे आग्नेयादि अस्त्र, तोप, बन्दूक, धनुष बाण, तलवार आदि वर्तमान के नामान्तर आणविक हथियार, मिसाइल व अन्य घातक सभी प्रकार के अस्त्र-शस्त्र शत्रुओं की पराजय करने और उन्हें युद्ध से रोकने के लिए प्रशंसित और दृढ़ हों और तुम्हारी सेना प्रशंसनीय होवे कि जिस से तुम सदा विजयी हों। ईश्वर ने यह भी शिक्षा भी की है कि जो निन्दित अन्यायरुप काम करते हैं उस के लिए पूर्व चीजें अर्थात् अस्त्र-शस्त्र न हों। इस पर महर्षि दयानन्द ने यह टिप्पणी की है कि जब तक मनुष्य धार्मिक (सत्य व न्यायपूर्ण आचरण करने वाले) रहते हैं तभी तक राज्य बढ़ता रहता है और जब दुष्टाचारी होते हैं तब नष्ट भ्रष्ट हो जाता है। यहां धार्मिक होने का अर्थ हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई आदि मत को माननेवाला न होकर सच्चे मानवीय गुण सत्यवादी, देशहितैषी, देशप्रेमी, ईश्वरभक्त, वेदभक्त व ज्ञानी आदि अनेक गुणों से युक्त मनुष्य हैं।

मनुस्मृति के सातवें अध्याय में तीनों सभाओं के अध्यक्ष राजा के गुणों पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है कि वह सभेश राजा इन्द्र अर्थात् विद्युत के समान शीघ्र ऐश्वर्यकर्ता, वायु के समान सब को प्राणवत् प्रिय और हृदय की बात जाननेहारा, पक्षपातरहित न्यायाधीश के समान वर्तुतनेवाला, सूर्य के समान न्याय, धर्म, विद्या का प्रकाशक, अन्धकार अर्थात् अविद्या अन्याय का निरोधक हो। वह अग्नि के समान दुष्टों को भस्म करनेहारा, वरुण अर्थात् बांधनेवाले के सदृश दुष्टों को अनेक प्रकार के दण्ड देकर बांधनेवाला, चन्द्र के तुल्य श्रेष्ठ पुरुषों को आनन्ददाता, धनाध्यक्ष के समान कोशों का पूर्ण करने वाला सभापति होवे। राजा में यह गुण भी होना चाहिये कि वह सूर्यवत् प्रतापी व सबके बाहर और भीतर मनों को अपने तेज से तपाने वाला हो। वह राजा ऐसा हो कि जिसे पृथिवी में वक्र दृष्टि से देखने को कोई भी समर्थ न हो। राजा ऐसा हो कि जो अपने प्रभाव से अग्नि, वायु, सूर्य, सोम, धर्मप्रकाशक, धनवर्द्धक, दुष्टों का बंधनकर्ता तथा बड़े ऐश्वर्यवाला होवे, वही सभाध्यक्ष, सभेश वा राजा होने के योग्य है।

सच्चे राजा के गुण बताते हुए वेदभक्त महर्षि मनु कहते हैं कि जो दण्ड है वही राजा, वही न्याय का प्रचारकर्ता और सब का शासनकर्ता, वही चार वर्ण और आश्रमों के धर्म का प्रतिभू अर्थात् जामिन है। वही राजा व दण्ड प्रजा का शासनकर्ता, सब प्रजा का रक्षक, सोते हुए प्रजास्थ मनुष्यों में जागता है, इसीलिए बुद्धिमान

(शेष पृष्ठ २३ पर)

सामान्य ज्ञान

प्रश्न

१. सुमात्रा द्वीप किस देश का भाग है?
२. महाभारत में किसका मूल नाम देवव्रत था?
३. हमारे शरीर का कौन सा अंग संतुलन बनाने में सहायता करता है?
४. रामायण में अहिल्या किसकी पत्नी थीं?
५. किस देश के झंडे को 'यूनियन जैक' कहा जाता है?
६. किस बल के कारण ऊपर फेंकी गयी गेंद नीचे आती है?
७. ईडनगार्डन तथा विक्टोरिया मेमोरियल किस शहर में हैं?
८. 'तुलु' भाषा किस राज्य की है?
९. लोदी वंश के किस शासक ने आगरा शहर की स्थापना की थी?
१०. मारीशस देश की राज्य भाषा क्या है?

उत्तर

१. इंडोनेशिया; २. भीष्म; ३. कान; ४. गौतम; ५. यूनाइटेड किंगडम; ६. गुरुत्वाकर्षण; ७. कोलकाता; ८. कर्नाटक; ९. सिकंदर लोदी; १०. फ्रेंच

अरे यह क्या ?
तुम मेरे साथ-साथ इस रेत पर
कब से निशां बना रहे हो
मैं तो कभी का तुम्हें पीछे छोड़ आई थी
फिर तुम्हारे क़दमों के निशां मेरे साथ-साथ कैसे ?
क्या मैं तुम्हें छोड़ ना सकी ?
या तुम ही अलग ना हो सके ?
हाँ, सच ही तो है
आत्मा शरीर से
अलग हुई है कभी ?

-- **अनिता अग्रवाल**

(कविता संग्रह '**अन्तर्मन के स्पन्दन**' से साभार)

मेरे भूत, वर्तमानए और भविष्य के साथ
कई कुछ ही जुडता रहा/बेतरतीब सा
दिल करता है कभी कभी/फिर से इस सारी किताब के
वर्क वर्क बिखेर कर/पन्नों को फिर से तरतीब दूँ
टुकड़ों को खोलूँ/फिर से तरतीब में जोड़ूं
तो और भी उलझ जाते हैं मेरे ख्याल...
तब मैं इस सारी सोच से बाहर निकल
मुस्करा कर कहती हूँ
कि इतना काफी नहीं जिंदगी
कि तुम मुझे
अपने ढंग से मिली थी
और मैंने तुम्हें
अपने ढंग से जी लिया...!

-- **रितु शर्मा**

इधर हम और उधर वो भी/तड़पते तो होंगे
बिन बोले बिन बात किये/अगर इक आंसू उधर
तो दो आंसू उधर भी/टपकते तो होंगे
माना की मुमकिन नहीं/इक दूजे बिन रहना
मिलने की चाह में दर्द भरे अरमान/उमड़ते तो होंगे
जब भी चलती होगी/ठंडी हवा तन्हाईयों में
साँसों में महसूस करके/एक दूसरे के लिए
मचलते तो होंगे/जाने कब मुलाकात होगी
होगी भी या नहीं होगी/गर जान जाती है
यह बात सोच सोच कर मेरी
तो कम से कम दम तो उनके भी
घुटते तो होंगे
इधर हम तो उधर वो भी
तड़पते तो होंगे

-- **महेश कुमार माटा**

प्रिय प्रेमिका! अब ना मिलन होगा,
जब तक देश न उठे, ये भाव दफन होगा,
चाहता हूं तू भी शामिल हो इस दावानल में
लगेगा जब जंगल में, सिर पर कफन होगा
बहुत भाग लिए अब जाग लगी है,
शयन नहीं है शेष, केवल जागरण होगा..
जन मानस की दुखद व्यंजना, कराह उठी,
अब यह अनशन आमरण होगा!
प्रिय प्रेमिका! अब ना मिलन होगा..!!

-- **सूर्यनारायण प्रजापति**

आते हर पांच वर्ष बाद, सुनते जनता के सवाल
पहन मुखौटा हर एक बार, गोल-मोल देते जवाब
पीनेवालों को पिलाते शराब, खानेवालों को खिलाते कबाब
बंटी जनता भ्रमित होती, तनिक लोभ में बिकी होती
लोभ का पांसा चहुं ओर, कौन खरीदे लगती होड़
बाहुबल वोट का धन, खरीदने को आतुर गरीब का मन
वोट का धन जीतता, गरीब का मन हारता
अगले पांच वर्ष तक
नहीं दिखता कोई रास्ता
गरीब बना रहता गरीब,
अमीर बनने और अमीर
अगले पांच वर्ष के वास्ते
नेता व गरीब के होते अलग रास्ते

-- **संगीता कुमारी**

(कविता संग्रह '**हृदय के झरोखे**' से साभार)

पूछे हर बिटिया के दिल की धड़कन
जिस घर खेला महका बचपन
खिले हुए बड़े अरमां सारे
भाभी बोले नहीं अब ये घर परिवार उसका
हो विदा जिस घर आई नयी दुनिया बसाने
सास बोले नहीं ये घर परिवार उसका
न पीहर न सासरा/फिर कौन सा है
घर परिवार एक बेटी का नसीब
कोई तो कहे कोई तो बताये
कोई तो सुने उस की खामोश/सिसकती आहों को और
बताये कौन सा है फिर उसका/घर और परिवार
थी जो कभी सोन चिरिया
अपने बाबुल की
जिसे बना रौनक दूसरे घर की
किया दूर जिगर का टुकड़ा
आज क्यों फिर नहीं
कोई भी आशियाँ उसका!

-- **मीनाक्षी सुकुमारन**

दर्द मुझ से गुनगुनाते हुये
तन्हाई में अक्सर पूछता है
मैं तो पूरी शिद्दत से वफा निभाता हूँ
भोर-संध्या सा हमारा नाता है
तुम क्यों मुझे ठुकरा कर
बेवफाई का खिताब पाने को आतुर रहती हो
मैं कहती हूँ-
जिंदगी पूरी गुजर गयी तेरे ही साथ
अंतिम बेला में चंद पल मैं भी
हर्ष को महसूस करना चाहती हूँ
दर्द ठठा कर हँस पड़ता है
ना बहना ये तो होना संभव नहीं
मुझ को भाता कोई और नहीं है
तेरे सिवा ना कोई इस लोक में दूसरा आसरा है
जब तक जीवन है तेरा मेरा नाता
जन्म-जन्मांतर का है

-- **मंजु शर्मा**

मुश्किल हो गया है अपनों के बीच रहना
सामान्य बात पर भी हंसना
और मुश्किल हो गया है
सपाट धरती पर चलना
जबसे तुमने टांक दिये हैं हौले से
स्मृतियों के बेल-बूटे
मेरे श्वेत आंचल पर और
भर दिया है उनमें रंग केसरिया

-- **डा. रचना शर्मा**

(कविता संग्रह '**अन्तर-पथ**' से साभार)

तुम्हें जाना था सो तुम चले गये
चाहा तो बस इतना ही था/तुम रहो साथ हर दिन
फिर जी लूं/एक सदी सी जिन्दगी
ख्वाब टूटा साथ छूटा एक पल में
ताश के पत्तों सी/बिखर गई सब खुशी
तुम्हें जाना था सो चले गए
मैं चुप सी खड़ी देखती रही जाते/नीर बहाते
रोकना चाहती थी/तुम रुक भी जाते
पर तुम्हें ले गयी/गलतफहमी की हवा
जो बह रही थी मेरे विरुद्ध/तुम बढ़ते चले गये
ओझल होते देखती रही/मैं बुत बनके खडी
तुम्हें जाना था चले गये तुम/बिखरे हुए मोती सी
मेरी जिन्दगी तकती है/राह तुम्हारी काश
तुम स्नेह का धागा लाओ
फिर एक बार आओ
पिरोने जीवन माला
और मैं फिर एक बार
जियूं सदी सी जिन्दगी

-- **सरिता दास**

प्रेम पर लिखना आसान नहीं
मन को कुरेदना होता है
वही लिखना है जो सोचते हो
पर शब्द नहीं मिलते हैं
लिखी बातों में/सिर्फ जिक्र किया जाता है
प्रेम में लिखा क्या जायें/जब नाम प्रेमी का लिखो
फिर इश्क हो जाता है/उसी इश्क से
जिस पर लिखने का मन होता है
फिर वही खयालों की दुनिया
वो मदहोश दुनिया/दर्द से लिखना
और दर्द पर लिखना/इश्क से बेहतर है
सुकून रूह को इसी में जब/दर्द हो रूह में
फिर आह निकलती है/हर शब्द में
फिर रचती है रचना
देखो फिर सुनने वालों से
निकलें कितने वाह
आह से वाह
तक का सफर है नहीं आसान
प्रेम पर लिखना नहीं आसान

-- **अंजलि शर्मा 'अंजुमन'**

लम्बी कहानी (दूसरी और अंतिम किस्त)

विजयी सैनिक

कालीपद प्रसाद

वह करवट बदलकर बिस्तर पर सीधा बैठ गया। अपना फोन उठाया और सबसे पहले बड़े बेटे को फोन लगाया। उधर से बेटे ने पूछा, “बाबा कैसे हो?”

“अभी तक जिन्दा हूँ।” सुबीर के स्वर में तीखापन झलक रहा था। “तुम, तुम्हारा भाई, तुम्हारी माँ में से किसी ने अभी तक जानने की कोशिश नहीं की कि मैं जिंदा हूँ या मर गया हूँ? एक सप्ताह से यहाँ पड़ा हूँ। कैसा हूँ? क्या कर रहा हूँ? क्या तकलीफ है? डाक्टरों ने क्या कहा? क्या कुछ भी जानने की कोशिश की तुम लोगों ने? सब मरीज के परिवार के लोग कोई न कोई यहाँ २४ घंटे बैठे हुए हैं और मरीज का ख्याल रख रहे हैं और तुम लोग हो कि तुम्हें एक मिनिट का समय नहीं मिलता कि कम से कम फोन करके पूछ ले कि कैसे हो। मैं यहाँ आया था यह सोचकर कि मेरे दोनों बेटे यहाँ हैं, वे आसानी से मेरा ख्याल रख सकेंगे। तुम्हारी माँ भी जब चाहे आ सकेंगी, परन्तु मैं गलत था। अब शायद तुम लोगो को मेरी जरूरत नहीं है। अच्छा हुआ, तुम लोगों ने अपने व्यवहार से मुझे बता दिया। अगर मैं यहाँ मर गया तो सब समस्या का समाधान हो जायेगा। अगर नहीं मरा तो तुम लोग मुझे मरा ही समझ लेना। मैं यहाँ से सीधा अपने घर चला जाऊंगा अपने गाँव, तुम्हारे यहाँ नहीं आऊंगा।’ उसने फोन काट दिया।

बच्चे और माँ की कोई भी मजबूरी रही होगी, उसे पता नहीं, परन्तु शाम तक कोई नहीं आया। रात १० बजे छोटा बेटा आया परन्तु बाप बेटे में कोई बातचीत नहीं हुई, दोनो चुपचाप सो गए। छः बजे सुबह उठ गए और सात बजे बेटे ने कहा, “बाबा मुझे कालेज जाना है, मैं जारहा हूँ।”

“ठीक है” कहकर सुबीर ने सिर हिला दिया।

बेटा चला गया। दिन में डाक्टर आया और सुबीर को बताया कि उसका ऑपरेशन करना पड़ेगा परन्तु उसके पहले दूबारा बायोप्सी करना पडेगी।

सुबीर ने कहा, “डा साहब, आप जो उचित समझे वही करे, मैं तैयार हूँ।”

शाम तक डाक्टर ने घाव के स्थान से एक टुकड़ा निकलकर बायोप्सी के लिए भेज दिया और पांच दिन के बाद आने लिए निर्देश देकर उसे हास्पिटल से छुट्टी दे दी गई। शाम को डिस्चार्ज होने के पहले दोनों बेटे और सुबीर की पत्नी आ गई थी। हास्पिटल का वातावरण था इसीलिए सुबीर चुप रहा, कुछ बोला नहीं परन्तु उसके मन के भाव उसके चेहरे पर स्पष्ट झलक रहे थे। चारों घर चले गए।

पांचवें दिन जब सुबीर हास्पिटल आया तो उसकी पत्नी और दोनों बेटे साथ थे। डाक्टर ने बायोप्सी की रिपोर्ट देखी और कहा कि शल्य क्रिया तो करनी ही पड़ेगी, उसके बाद कीमोथेरेपी से भी इलाज करना पड़ेगा। सुबीर मानसिक रूप से तैयार था इसीलिए कहा, ‘डा साहब मैं हर प्रकार के इलाज के लिए प्रस्तुत हूँ। आप जो उचित समझें, वही करें।’

डाक्टर ने अपने असिस्टंट को उसे भर्ती करने और ऑपरेशन की तैयारी करने के लिए आवश्यक निर्देश दिए। असिस्टेंट डा. ने सभी कागजात तैयार कर सुबीर के दस्तखत लेकर उसे उसी समय भर्ती कर लिया। दूसरे दिन ११ बजे ऑपरेशन का समय दिया गया। दोनों लड़के शाम को घर चले गए परन्तु सुरेखा पति के साथ हास्पिटल में ही रही। दुसरे दिन ११ बजे के पहले ही दोनों लड़के आ गए। सुबीर आज खुश था पत्नी और दोनों बेटे आज साथ थे। ऑपरेशन के बाद जब उसे बाहर लाया गया तब वह बेहोश था उसे आईसीयू वार्ड में रखा गया। जब उसे होश आया तब उसे जनरल वार्ड में शिफ्ट किया गया। वहाँ मरीज के साथ एक व्यक्ति को रहने की अनुमति दी गई। अब सुरेखा पति साथ दिन रात रहती और पति के हर आवश्यकता का ध्यान रखती। नर्स समय पर दवा खिलाकर चली जाती।

सातवें दिन सुबीर को डिस्चार्ज कर दिया गया और तीन कीमो का दिन भी निश्चित कर दिया गया। अबकी बार सुबीर नियमित रूप से निर्धारित दिन में आकर कीमो ले लेता। हर कीमो के समय उसकी पत्नी उसके साथ हास्पिटल में ही रहती और उसका देखभाल करती। बेटे सुबह शाम आकर मिलकर जाते। इस प्रकार तीनो कीमो के समाप्ति के बाद डॉ ने कई प्रकार की जाँच करवाई। अंततः सभी सेल स्वस्थ पाए गए।

डाक्टर ने उसे कैंसर से मुक्ति दिला दी। एक सैनिक विजयी हुआ। कैंसर को तो उसने हराया ही, परिवार के लोगों में सहानुभूति और अपनापन के भाव भरने में भी विजय पा ली। (समाप्त)

गुरु दक्षिणा

मंजु गुप्ता

मानस पटल पर महाभारत काल की घटना याद आती है जब गुरु द्रोणाचार्य ने उपेक्षित जाति के एकलव्य के हाथ का दांया हाथ का अंगूठा गुरु दक्षिणा में लेकर चोरी से सीखी धनुर्विद्या का बदला लिया। युगों के अंतराल के बाद समाज सेविका- शिक्षिका राधा ने इस खाई को पाटा।

भारत के पड़ोसी मित्र देश नेपाल के जिला धनगढी, गाँव बिगाऊ से एक नेपाली, अनपढ़ नवयुवक बहादुर काम की तलाश में वाशी, नवी मुम्बई में आया।

उसे वाचमैन का काम ‘सत्संग सोसाइटी’ में मिल गया। उसके काम करने और अच्छी आदतों की वजह से सभी लोगों की आँखों का तारा बन गया। वह इतना शर्मिला था कि आँख उठाकर बात भी नहीं करता था। ठीक से हिंदी भी नहीं बोल पाता था। वह गँवार-निरक्षर और गरीब था।

एक दिन दोपहर में जब राधा स्कूल से पढ़ाकर घर आई। तभी उसकी नजर बहादुर पर पड़ी। जो मुख्य दरवाजे की ओट में छिप कर ‘हिंदी सीखो’ की किताब पढ़ रहा था। उसने जिज्ञासा से उससे पूछा, ‘तुम क्या पढ़ रहे हो?’ उसने डरते, शर्माते और तुतलाते हुए कहा- ‘मैं हिंदी पढ़ना चाहता हूँ, किताब से पढ़ने की कोशिश कर रहा हूँ, स्कूल तो कभी गया नहीं हूँ।’

उसे उसकी बात दिल को छू गई, राष्ट्रीय भाषा हिन्दी के प्रति उसका लगाव ऐसा लगा जैसे एकलव्य का धनुर्विद्या से था और उसे कहा- ‘हिंदी सीखने मेरे घर आ जाना।’ यह सुनकर उसका दिल खुशी से झूम उठा और आँखें चमक उठीं। कहावत है- अंधा क्या चाहे दो आँखें। यही दशा बहादुर की भी थी। उसने ऐसा महसूस किया कि मन की उमंग आनंदोत्सव मना रही हो।

अगले दिन उनके घर हाथ में कापी-पैन लिए आया और हिंदी की वर्णमाला के ‘स्वर’ से पहले पाठ का श्री गणेश किया। वह रोज पढ़ने के लिए आने लगा। वह समझदार और प्रतिभाशाली था. जो भी समझाया जाता उसे याद करके लाता, हिन्दी का गृह कार्य भी करके लाता, शिकायत का मौका नहीं देता।उसकी प्रतिभा देख दंग हो जाती। धीरे- धीरे उसने शब्द, वाक्य रचना और व्याकरण, संवाद आदि सब सीख लिया। अब तो हिंदी फराटे से बोलता और लिखता। उसकी पढ़ाई में ऐसी चेष्टा रहती जैसे बगुले की पानी में पड़ी मछली पर ताक। पढ़ाई में इतनी तल्लीनता को देखकर यह श्लोक उस पर खरा उतरता है-

काकचेष्टा, वकोध्यानं, स्वान निद्रा तथैव च।
अल्पाहारी गृहत्यागी विद्यार्थी पंचलक्षणम्।

पढ़ाई के साथ-साथ उसमें आत्मनिर्भरता, साहस, सत्य, सेवा और शिष्टाचार आदि गुणों का विकास हुआ। संसार की पाठशाला का महत्त्व समझ आने लगा।

जब उसे तनख्वाह का चेक मिलता तो वह पूछता, “कैसे इस चेक को भरूं?” वह उसे भरना सिखाती। अब उसे हर लम्हा खुशियों, शिक्षा की उपलब्धियों से भरपूर लगता।

मेहनती बहादुर पर अपने परिवार की जिम्मेदारी होने के कारण रात में भी हिंदी माध्यम के स्कूल में

(शेष पृष्ठ १५ पर)

कैसे-कैसे गुलाब जर्द हुए, कल थे अनमोल आज गर्द हुए
भव्य भारत की बात क्या कहने, राम जैसे यहां पर मर्द हुए
अपनी हिन्दी गुलाबी भाषा है, इसके चेहरे कभी न जर्द हुए
बेवफाई जो कर गईं खुशियां, अपने हमदर्द सारे दर्द हुए
कल जो मिलते थे गर्म जोशी से
आज मतलब नहीं तो सर्द हुए
आह! बेदर्द इस जमाने में
दिल-जिगर में भी जमा दर्द हुए
जो थे गमख्वार हमनवा 'नासिर'
वो जुदा हमसे फर्द-फर्द हुए

-- डा. मिर्ज़ा हसन नासिर

(ग़ज़ल संग्रह '**ग़ज़ल गुलज़ार**' से साभार)

मेरे जिस बच्चे को पल की दूरी बहुत सताती थी
जीवन के चौथेपन में वह सात समन्दर पार हुआ
रिश्ते नाते-प्यार की बातें, इनकी परवाह कौन करे
सब कुछ पैसा ले डूबा, अब जाने क्या व्यवहार हुआ
दिल में दर्द नहीं उठता है भूख-गरीबी बातों से
धर्म देखिये कर्म देखिये सब कुछ तो व्यापार हुआ
मेरे प्यारे गुलशन को ना जाने किसकी नजर लगी
युवकों को अब काम नहीं है बचपन अब बीमार हुआ
जाने कैसे ट्रेन्ड हो गए मम्मी पापा फ्रेंड हो गए
शर्म हया और लाज न जाने
आज कहाँ दो चार हुआ
ताई-ताऊ, चाचा-चाची,
अब मौसा-मौसी दूर हुए
हम दो और हमारे दो का
ये कैसा परिवार हुआ

-- मदन मोहन सक्सेना

क्या हसीं मैं गुनाह कर बैठी
हसरतों से निकाह कर बैठी
उसको माँगा है जो नहीं मिलना
मैं भी कैसी ये चाह कर बैठी
खुल गया राज यूं तबाही का
यकबयक मैं ही आह कर बैठी
जा मिला वो ही मेरे कातिल से
जिसको अपना गवाह कर बैठी
इश्क में बेवफा के क्यों 'शुभदा'
जिन्दगी मैं तबाह कर बैठी

-- शुभदा बाजपेयी

दिल मेरा तुमने चुराया न होता
मैं भी किनारों पे आया न होता
दिखाकर मुझे अपनी सारी अदाएं
दीवाना बनाकर रिझाया न होता
बताकर हुनर सादगी में तुम सयानी
मुझे पास अपने बुलाया न होता
फिजाओं में चाहत की खुशियाँ बिछाकर
दिशाओं को यूँ फुसलाया न होता
जमाना कहें चाहे मुझको दीवाना
इशारों ने मन बहलाया न होता

-- महातम मिश्र

ये घर के फूल महकते रहें खिले ही रहें
तुम्हारी आंखों के जलते सदा दिये ही रहें
ये चल रहे हैं अभी कल ये साथ दौड़ेंगे
दुआ है इनके कदम वक्त से मिले ही रहें
कि इनको चांद सितारों की उम्र लग जाये
हजारों साल ये रोशन जहां किये ही रहें
चिराग घर का न जब तक बने मशाले-वतन
अपने सब्र के दामन
को बस सियें ही रहें
हमारी भूल पे कह
लीजिए हमें जो भी
दुआएं 'शान्त' इन्हें जद
में बस लिये ही रहें

-- देवकी नन्दन 'शान्त'

(हिन्दी ग़ज़ल संग्रह '**तलाश**' से साभार)

कोशिश कर भी लो आदत खानदानी नहीं जाती
चोर चोरी से जाए मगर बेईमानी नहीं जाती
खजाने खत्म हुए सारे जागीरें लुट गईं लेकिन
मिजाजों से अब भी उनके सुल्तानी नहीं जाती
पा सकते थे हम मंजिल अगर वो साथ देते तो
मगर हर बात पर उनकी आनाकानी नहीं जाती
कहने को यहां यूँ तो सब फरजंद हैं अपने
कोई भी बात अपनी पर यहां मानी नहीं जाती
बंट जाता है सब पैसा नेता और दलालों में
गरीबों तक हुकूमत की
मेहरबानी नहीं जाती
जिन्हें समझा था मैंने
अपनी परेशानियों का हल
उन्हीं की अब मेरे सर
से परेशानी नहीं जाती

-- भरत मल्होत्रा

जिनके मन में सच की सरिता बहती है
उनकी कुदरत भी होती हमजोली है
जब-जब बढ़ते लोभ, पाप, संत्रास, तमस
तब-तब कविता मुखरित होकर बोली है
शब्द, इबारत, कागज चाहे चुराए कोई
गुण, भावों की होती कभी न चोरी है
होते वे ही जलील जहाँ के तानों से
बेच जमीर जिन्होंने 'वाह' बटोरी है
खोदें खल बुनियाद लाख अच्छाई की
इस जमीन में बंधु! बहुत बल बाकी है
बनी कौन सी सुई सिये जो सच के होंठ
किए जिन्होंने जतन, मात ही खाई है
पानी मरता देख कुटिल बेशर्मों का
माँ धरती भी हुई
शर्म से पानी है
कलम 'कल्पना' है
निर्दोष रसित जिसकी
रचना उसकी खुद
विज्ञापन होती है

-- कल्पना रामानी

अमीरी है तो फिर क्या है हर इक मौसम सुहाना है
गरीबों के लिए सोचो कि उनका क्या ठिकाना है
उसे जो मिल गया था बाप-दादा से विरासत में
वही अब तक बिछौना है, वही कम्बल पुराना है
इसी फुटपाथ पर जीना, इसी फुटपाथ पर मरना
कहाँ जायें न इसके घर न कोई आशियाना है
तुम्हारा शहर है फिर भी वही चेहरा है उतरा-सा
हुकूमत भी तुम्हारी है, तुम्हारा ही जमाना है
मेरे शेरों का क्या मेयार है वो क्या समझ पाये
वो जालिम है मगर उसको भी आईना दिखाना है.
लुटेरे हम फकीरों से भला क्या ले के जायेंगे
कि दिल भी जोगिया है
और मन भी सूफियाना है
न कुंडी है, न ताला है,
न पहरा है, न पाबंदी
यहाँ पर सब बराबर हैं,
ये उसका शामियाना हैं

-- डॉ डी.एम. मिश्र

सब से मिलता है, अजनबी की तरह
आदमी हो गया है, खुशी की तरह
अब कोई अपना सा, लगता ही नहीं
बेवफा सब हो गये, जिन्दगी की तरह
जाने खुदगर्जी के किस दौर में चले आए
लोग रिश्ते निभाते हैं दुश्मनी की तरहा
अब तेरे फन से गिरगिटों में भी बेचैनी है
कैसे रंग वो बदलेगा आदमी की तरह
कैसी हवा चली कि बदल गया सब कुछ
उनकी नफरत भी पुज रही बंदगी की तरह
पत्थरों में तलाशते हो, भावना का वजूद
कुछ नहीं पाओगे मेरी
आवारगी की तरह
जिसको अपना वजूद
अपनी जिन्दगी समझा
वो सनम भी निकला
हर किसी की तरह

-- सतीश बंसल

खामोशी से दुआ करो तो खुदा सुन लेता है
उसका दिल मेरी आँखों की सदा सुन लेता है
तुम खोल के तो देखो कफस के दरवाजे
मंजिल का पता खुद परिंदा चुन लेता है
सर झुकाकर पहन लिया करो उसे रूह में
माँ का दिल लिबास के साथ दुआ बुन देता है
गेहूँ की लहलहाती बालियों पर चमके तो
सूरज की किरण आना
ज्यादा सुकून देता है
तुम्हें अपने में लपेट
कर लाता है शायद
मेरी गजल को झोंका
सबा का धुन देता है

-- अनिता मंडा

डर

बात उन दिनों की है जब मेरे पतिदेव का ट्रांसफर चंडीगढ़ हो गया था और मैं पहली बार घर से बाहर अपने लोगों से दूर आई थी। मेरा बेटा सिर्फ ६ महीने का ही था, जलवायु परिवर्तन की वजह से बेटा काफी बीमार हो गया। पडौसी से डाक्टर की जानकारी लेकर हम उसके यहाँ चले गये। चेक-अप व दवा लेने के बाद क्योंकि इन्हें वहाँ से सीधे ऑफिस जाना था अतः इन्होनें मुझे एक रिक्शे में बिठा दिया और ये अपने ऑफिस चले गये। चुंकि मैं पहली बार घर से बाहर निकली थी उपर से अंजाना शहर, मैं मन ही मन बहूत डरी हुई थी।

अभी हम थोड़ी ही दूर पहुंचे थे कि लगा कोई पीछा कर रहा है और कुछ बोल भी रहा है। एक तो पहले ही डर लग रहा था, अब तो मैं और ज्यादा डर गई और रिक्शे वाले से कहा कि 'भैया थोड़ा तेज चलाओ' पर ये क्या? रिक्शा जितना तेज होता, पीछे आने वाला उतनी ही तेजी से आ रहा था। मैं इतनी डरी हुई थी कि पीछे मुड़कर भी नहीं देखा कि कौन है और वो क्या कहना चाह रहा है? उस ठंड के मौसम में भी मैं पूरी तरह से पसीने से भीग गई थी।

तभी एकदम से एक साईकिल सवार रिक्शे के बगल में आ गया, अब तो मेरे होश-फाख्ता हो गये।

तभी वो जोर से चिल्ला कर बोला कि 'मैडम, अपनी साड़ी का पल्लू सम्भालिये, वो रिक्शे के पहिये में आ जायेगा', ये बोलता हुआ वो आगे निकल गया। मेरी आँखें भीग गई ये सब सुनकर। कुछ पल तो मैं हैरान सा उसे जाते हुए देखती व सोचती ही रह गई कि 'अरे, ये तो कोई भला-मानुष था और मैं सोच रही थी कि वो मेरा पीछा कर रहा है, जरूर छीना-झपटी का इरादा है उसका?' मन ही मन उससे और प्रभु से माफी मांगी और ईश्वर का शुक्रिया अदा किया।

कभी-कभी हमारा भय ही हमें इतना डरा देता है कि हम कुछ भी अनुमान लगा लेते है। जबकि हमें पहले स्थिति का जायजा लेना चाहिये उसका सामना करना चाहिये। डरना तो बिल्कुल भी नहीं चाहिये, डर हमारे विचारों को कुंद कर देता है, दिमाग को बंद कर देता है। सारी स्थिति को समझ कर जब हम कुछ भी करेंगे तो वो कभी भी गलत नही होगा। खैर जीवन में आने वाली कई परिस्थितियों ने ही आज मुझे अंदर से मजबूत बना दिया

है। शायद तभी कहा गया है कि जीवन सबसे बडा गुरू है और जीवन में घटित होने वाली घटनायें हमारे अहम सबक !

-- शशि शर्मा 'खुशी'

दरकते रिश्ते

कमला के पति का लंबी बीमारी के बाद देहावसान हो गया, पति की बीमारी में बहुत व्यस्त रहती, पर अब बिलकुल खाली हो गई। कोई काम ही नही रह गया सिवाय सोचने के। औरतें चाहे दादी नानी बन जाये पर मायके का मोह नहीं छूटता, कमला का भी ये ही हाल था पर मायके में सिवाय एक पिता समान भाई साहब के और कोई नहीं था, वे भरे पूरे परिवार के धनी थे, पर बीमार रहते थे, तो कमला की दुःख की घड़ी में नहीं आ सके।

कमला ने खुद ही भाई साहब को देखने जाने की इच्छा बेटे-बहू को बताई, अँधा क्या चाहे दो आँखें। फौरन टिकट करवा दिया। बहू ने राहत की साँस ली कि चलो कुछ दिन फ्री। जाते हुए कह दिया कि अब राखी में ज्यादा दिन नही हैं। आप राखी कर के ही आना। मामा जी बीमार हैं, अगली राखी क्या भरोसा। कमला को भला क्या एतराज था। भाई साहब से मिली ४-५ दिन भतीजे-भतीजों की बहुओं ने आव-भगत की।

फिर एक दिन भाई ने पूछ लिया कि कमला क्या विचार है और भतीजे भी बोले कि 'हां भुआ जी बता दें कब का रिजर्वेशन करवा दें?' कमला निरुत्तर बोली- 'देख लें जब भी आप भेजें'। पर मन में बहू को क्या कहेगी की चिंता। बहु और भाई के दरकते रिश्तों के भवर में फंसी बेचारी कमला।

-- गीता पुरोहित

प्रेम

एक डलिया में संतरे बेचती बूढ़ी औरत से एक युवा अक्सर संतरे खरीदता। अक्सर, खरीदे संतरों से एक संतरा निकाल उसकी एक फाँक चखता और कहता, 'ये कम मीठा लग रहा है, देखो!' बूढ़ी औरत संतरे को चखती और प्रतिवाद करती 'ना बाबू मीठा तो है!' वो उस संतरे को वहीं छोड़, बाकी संतरे ले गर्दन झटकते आगे बढ़ जाता।

युवा अक्सर अपनी पत्नी के साथ होता था, एक दिन पत्नी ने पूछा, 'ये संतरे हमेशा मीठे ही होते हैं, पर यह नौटंकी तुम हमेशा क्यों करते हो?'

युवा ने पत्नी को एक मधुर मुस्कान के साथ बताया, 'वो बूढ़ी माँ संतरे बहुत मीठे बेचती है, पर खुद कभी नहीं खाती, इस तरह उसे मैं संतरे खिला देता हूँ।'

एक दिन, बूढ़ी माँ से, उसके पड़ोस में सब्जी बेचनें वाली औरत ने सवाल किया, ये झक्की लड़का संतरे लेते इतनी चख चख करता है, पर संतरे तौलते

(शेष पृष्ठ १७ पर)

जुगलबंदी

दो बगुले एक नदी किनारे मछलियाँ पकड़ते थे समझने वाले उन्हें बड़ा विद्वान और तपस्वी भी मानते। नदी किनारे गाय, बकरी, भालू आदि जो भी पानी पीने आता जंगल में जाकर कहता, 'स्वामी जी बड़े तपस्वी हैं।'

बगुलों के मन में लड्डू फूटते- 'आहा! कितना मधुर है स्वयं को विद्वान कहलवाना!' उनमें से एक बगुला बोला- 'मुझे पानी में खड़े होकर ज्ञान प्राप्त हो गया है। कल से मैं और अधिक समय दूंगा और ज्ञान प्राप्त करूँगा।' दूसरा बगुला हंसा और कहने लगा- 'अरे पानी में भी कोई ज्ञान प्राप्त होता है।' मगर बगुला कहाँ मानने बाला था वो सुबह से शाम तक पानी में खड़ा रहता।

पहले बाले बगुले को बहुत गुस्सा आता उसका मन भी नहीं लगता एक दिन उसने नदी किनारे एक दुकान सजा ली और पोथी वाचना भी चालू किया धीरे धीरे बगुले का नदी किनारे महल तैयार हो गया ।

एक दिन बगुला तपस्या से जागा देखकर दंग रह गया। भागा भागा पहुँचा। पूछने लगा- 'ये सब कैसे संभव हुआ। मुझे तो चार मछलियाँ भी नहीं मिलती थीं सो मैंने सोचा तपस्वी ही बन जाऊँ इज्जत मिलेगी और मछलियाँ मिलेंगी ब्याज में और तू तो... !!'

दूसरा बगुला बोला ये दुनिया ऐसी ही है। यहाँ

ज्ञान की नहीं ज्ञानवान की कद्र है। तूने तपस्या की और मैंने उसे वाचा। देख तू कहाँ रह गया और मैं कहाँ पहुँच गया।

-- अंशू प्रधान

परिश्रम का फल

छोटेलाल अपने गॉव में गरीबों में गिने जाने वाले एक सीधे इंसान थे। उनकी पत्नी मुन्नी देवी तथा एक सात साल का लड़का उनके परिवार में थे। छोटेलाल बहुत ईमानदार थे इसलिए सभी गॉववाले इनसे खुश रहते थे और ये गरीबों के नेता भी थे। अगर किसी को कोई भी परेशानी होती तो ये उसे अपनी परेशानी समझकर दूर करते थे। इसी कारण से कुछ लोग इनके कट्टर दुश्मन थे।

छोटेलाल की पत्नी गर्भ से थीं। कुछ दिनों बाद मुन्नी देवी ने एक बालक को जन्म दिया, इसका नाम राकेश रखा गया तथा खूब खुशियाँ मनाई गई। राकेश जब छः महीने का ही हुआ था कि लोगों ने इस मासूम बच्चे से इसके पिता को छीन लिया। छोटेलाल के न होने पर जमीदार लोगों ने इनसे इनका खेत भी छीन लिये। मुन्नी देवी पर तो जैसे पहाड़ टूट पड़ा। इन सबसे परेशान होकर अपने दोनों बच्चो को लेकर गाँव छोड़कर शहर चली गई और एक सेठ के यहां घर का काम करने

(शेष पृष्ठ ११ पर)

काम प्यारा होता है चाम नहीं/हर वक्त माँ चिल्लाती थी
जब डांट लगाती/यही कुछ बड़बड़ाती थी
बड़े लाड-प्यार से पाला था
चार लड़कों के साथ हमें भी दुलारा था
पर जब होने लगे हम बड़े
रसोई के आस-पास नही होते खड़े
तब गुस्से में आ कभी-कभी/खूब झाड़ पिलाती थी
काम प्यारा होता है/चाम होता नहीं प्यारा
ससुराल में शक्ल नहीं देखेंगे
काम ही करवा कर दम लेगें
थोड़ा तो कुछ काम सीख लो
लड़कों सी पल रही हो
नाज नखरे सब जो कर रही हो
शादी कर जब दूजे घर जाओगी
नहीं यह सब कर पाओगी/शक्ल देख कोई नहीं जियेगा
अपनी भाभी की तरह तुम्हें भी वहा रहना पड़ेगा
सुन्दरता लेकर नहीं चाटना है
अभी काम बहुत तुम्हें सीखना है
सब काम सीख लोगी तो हाथों-हाथ रहोगी
वरना सास हमेशा कोसती ही रहेगी
काम प्यारा होता है होता नहीं चाम प्यारा
अच्छा होगा सीख लो घर का काम सारा !

-- सविता मिश्रा

मैं जानती हूँ जो खूबसूरती ढूंढती हैं
तुम सब की नजरें /वो नहीं मिलती मुझमें...
पर क्या इस से तुम्हें मेरी अवहेलना करने का
हक मिल जाता है?/या तो खुले आम कह दो
या मुझे आजाद कर दो/ऐसे रिश्तों से
नहीं सह सकती मैं और/तिरस्कार उस बात के
लिए जिसमें मेरा कोई हाथ नहीं
ये भगवान की देन है
किसी को ज्यादा किसी को कम
मैं जानती हूँ मेरा मन खुबसुरत है
मैं प्यार और इज्जत करती हूँ सबकी
तो क्यों सहूँ मैं ये तिरस्कार ?

-- रेवा टिबड़ेवाल

एक सपना है अधूरा सा/एक टूटी सी आस है शायद
टूटी है आरजू - आइने की तरह
'राज' गमे-इश्क में डूबा सा है
जब हर हसीन मंजर आँखों से छिन गया हो
ये भी कोई सफर है-या कोई बद्दुआ है
जिंदगी में रंग नहीं बिन आपके,
रखो कदम और इसे सजाने लगो
चाहा भी तो बस उसे हमने
मुझसे नहीं जिसे प्रीत है
गम आसूं सब कुछ पी लिया
नहीं पी पाया तो खुद के मन के गम को
गर मन की गंगा सूख गयी फिर वो कहाँ बहती है
मौसम के नजारे, दिन-रैन ये सारे
हर पल यही सिखाते हैं/जाने वाले कब वापस आते हैं?

-- राज मालपानी

आसमान की नई कहानी, धरती पर ले आतीं बूँदें
तपी ग्रीष्म में भाप बनीं वो, फिर बादल बन जाती बूँदें
श्वेत श्याम भूरे लहंगे, इधर उधर इतराती बूँदें
सखी सहेली बनकर रहतीं, आपस में बतियाती बूँदें
नई नई टोली जब जुटती, अपना बोझ बढाती बूँदें
थक जातीं जब बोझिल होकर, नभ में टिक ना पातीं बूँदें
ताल तलैया पोखर भरतीं, कागज नाव तिराती बूँदें
रिमझिम रिमझिम बारिश करके, बच्चों संग नहाती बूँदें
सुन मल्हार राग आ जातीं, कजरी गीत सुनाती बूँदें
झूले पेंगें हरियाली में, गोरी के मन भाती बूँदें
तृषित धरा की सोंधी खुशबू, गिरकर खूब उड़ाती बूँदें
विकल व्यथित वीरान हृदय में, आँसू बन बस जाती बूँदें
गंगा की पावन लहरों में, गोद भराई पाती बूँदें
लहरों पर इठलाती गातीं, सागर में मिल जाती बूँदें
ऊपर उठतीं नीचे गिरतीं, सिंधु में जा समाती बूँदें
स्वाति को सीप का साथ मिले
मोती बन रम जाती बूँदें
आती बूँदें जाती बूँदें
जीवन को कह जाती बूँदें
या तो लहरों में खो जाती
या मोती बन जाती बूँदे

-- ऋता शेखर 'मधु'

चौदह सितम्बर--
हिंदी दिवस का दिन
हिन्दीमय भारत चारों तरफ/सम्मेलन, संगोष्ठी, भाषण
सरकारी कार्यालयों, संगठनों, संघों की
दीवारों पर शोभित बड़े बड़े पोस्टर
हिंदी का गुणगान करते हुए हिंदी की शान में गर्वोक्ति
कहीं कहीं हिंदी की दुर्दशा पर स्वीकारोक्ति !!
पन्द्रह सितम्बर --
सभी समाचार पत्रों में/डंके बजाते समाचार
कि हमने कहाँ कहाँ पर/कितने कितने जोर शोर से
हिंदी दिवस मनाया/कितनी और कौन कौन सी
हिंदी प्रतियोगिताए हुईं/कितनो से क्या-क्या इनाम जीते
या यूँ कहें इनाम बटोरे
सोलह सितम्बर --
धीरे धीरे हिंदी से हिंदरेजी की तरफ बढ़ता भारत
सत्राह सितम्बर --
फिर से अपनी लहर पर लौटता इंडिया और इंडियंस
उन्नीस सितम्बर--
इधर उधर सरकारी दीवारों पर लटकते
रंग उड़े ,फटे पोस्टर और उन पर अधमिटे,
धूमिल से हिंदी की गरिमा का
बयान करते
बेरंग हो चले अक्षर
अगली चौदह सितम्बर को
फिर से रंगीन होने के इंतजार में
जय हिंदी ! जय इंडियंस !!

-- नमिता राकेश

बनना नहीं किसी की देवी/बनना नहीं किसी की दासी
भुलाना नहीं तुम हो जननी जगतजननी रूपा
भुलाना नहीं अपने जज्बातों को
निभाना अपने चुने रिश्तों को
निभाना अपने मिले दायित्वों को
डरना नहीं दहलीज पार की तो
डरना नहीं मंजिल नहीं दिख रही तो
थामना अपने हौसले के पंख को
थामना मदद मांगने वाले हांथो को
दहाड़ना दिखे कामुक आँख तो दहाड़ना
रोके कोई राह तो पकड़ना
अपने ऊपर उठे हाँथ को पकड़ना
कलम बेलन तलवार को जूझना
जो झंझावत आये तो जूझना
दक्षता का अवसर आये तो
सीखना नए युग के चलन को
सीखना पुराने युग के अनुभव को
गुर्राना हक है तुम्हारा तो
गुर्राना सही अवसर हो तो

-- विभा रानी श्रीवास्तव

पद शौहर के पास गिरवी धरा/राजनीति के गलियारों में
घूंघट ओढ़े खड़ी महिला सरपंच हूँ- मैं !
क्या हुआ आरक्षण मुझे मिला
वोटों के भंवर में बस शतरंज का एक मोहरा हूँ - मैं !
मेरा सशक्तीकरण कुछ नहीं
क्या फैसले ले रहा मेरे हक के
इससे अंजान हूँ - मैं !
क्या बदलाव चाहती समाज में
कोई सरोकार नहीं आवाज उठाऊं
तो कुलीन कहलाऊं- मैं !
कैसा भावनात्मक खिलवाड़
मेरा राजनीति की रानी सिपाहियों से घिरी खड़ी- मैं !

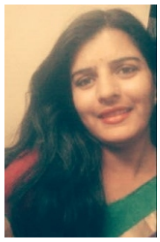

-- गीता यादव

आज भी याद है/बचपन में अपने सखियों के साथ
उपवन में जाना/छोटे -छोटे हाथों में
छोटी-छोटी डालियां/अद्भुत लगते थे
रंग बिरंगे फूल देख/मन पुलकित हो जाते थे
आज भी याद है/इधर उधर हरियाली देख
बांछें खिल जाती थीं
फूलों को चुन-चुन /डालियां भर लेते थे
उन फूलों से फिर/अपना घर सजाते थे
आज भी याद है सखियों के साथ
आपस में मिलकर
हठखेलियां खेलना
लडना मनाना
नित्य होता रहता था
आज भी याद है

-- निवेदिता चतुर्वेदी

मीडिया उन दिनों

मथुरा टाइम्स की एक खबर के अनुसार-

भाद्रपद के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को जिले में हुई दो विचित्र घटनाओं की जानकारी मिली है। मथुरा कारावास में, संभावित आतंकी गतिविधियों के लिए लम्बी सजा भुगत रहे, महाराज कंस की बहन देवकी और बहनोई वासुदेव को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। परन्तु, आधे घंटे बाद बच्चा अपनी शैया से गायब मिला। इससे पूरे राज्य में हड़कंप मच गया है।

जेल के एक अधिकारी ने गोपनीयता की शर्त पर हमारे संवाददाता को बताया कि कड़ी सुरक्षा के बावजूद यह कैसे संभव हुआ, वह किसी चमत्कार से कम नहीं है। वैसे जाँच के आदेश दे दिये गये हैं और दोषी को बख्शा नहीं जायगा। बच्चे को ढूँढने के लिये जिले के सभी चौकपोस्टों को सतर्क कर दिया गया है और आरक्षी दल जगह जगह दबिश दे रहे हैं।

उधर, मथुरा की तहसील वृन्दावन में इलाके के सरपंच श्री नंद लाल जी के घर कल रात एक कन्या रत्न पैदा हुई थी, परन्तु सुबह जब उनकी पत्नी की आँख खुली तो पाया कि रातों रात उस कन्या का लिंग परिवर्तन हो गया और वो पुत्र बन गयी है ।

इसको लोग दैवी चमत्कार मान रहे हैं और नन्द लाल जी के घर पर सवेरे से ही दर्शनार्थियों की भीड़ लगी हुई है। हमारे संवाददाता के पूछने पर कि उन्हें कैसा लग रहा है, श्री नन्द बोले कि अच्छा तो बहुत लग रहा है परन्तु आगन्तुकों की आवभगत बड़ी मंहगी

साबित हो रही है। घर का सारा दूध दही निबट गया है और पड़ोसियों से मदद देने की गुहार लगायी गयी है।

-- मनोज पाण्डेय 'होश'

निर्दोष

चंद्रपाल की पत्नी अपनी छोटी बेटी को लगातार पीट रही थी और मुँह से अपशब्द भी बक रही थी, बेटी रो-रोकर कह रही थी- 'अम्मा मैंने नहीं लिया, मैं सच कह रही हूँ। देखो न मैंने कहाँ छुपा रखा है?'

इतना सुनते ही उसकी माँ ने दो-चार तमाचे और रसीद दिए जिससे वह तिलमिला गई। माँ ने बोलना जारी रखा- 'झूठी कहीं की, जब सौ झूठे मरे हैं तब तू जन्मी है। रोज का तेरा यही धंधा है, इतना न दूँ तो और न चुराए तू।'

इसी समय चंद्रपाल खेत जोतकर आया और बैलों को बाँधकर बोला- 'क्या रोज की नौटंकी शुरू है? जब देखो किच-किच लगा रहता है। घर न हुआ महाभारत का मैदान हो गया।'

पत्नी से पूरी बात सुनकर चंद्रपाल आगबबूला हो गया और उसने भी बेटी के दो थप्पड़ जड़ दिए। शोरगुल सुनकर सारा मोहल्ला इकट्ठा हो गया और एक-दूसरे से पूछने लगे कि आखिर हो-हल्ला का कारण क्या है। एक बुजुर्ग ने आगे बढ़कर चंद्रपाल से पूछा- 'बेटा! तुम अपनी बेटी को क्यों मार रहे हो? क्या गलती है उसकी?"

चंद्रपाल ने बताया कि उसकी पत्नी ने एक किलो चीनी मंगाई थी लेकिन इसने पता नहीं पैसों का क्या किया चीनी तीन पाव ही निकली और अब बता भी नहीं रही। मैं सबकुछ लाकर देता हूँ लेकिन इसकी चोरी की आदत बन गई है सामान रोज कम लाती है।

बुजुर्ग ने पूछा कि रज्जू की दुकान से लाई है क्या? उसके यहाँ हर चीज कम मिलती है। भीड़ में से कई आवाजें आईं 'हाँ हाँ सही कह रहे हो काका' चंद्रपाल को बड़ा पछतावा हुआ उसने कहा- 'काका! आप न आए होते तो मुझे पता ही नहीं चलता कि यह माजरा है और मैं भी बिटिया को ही दोषी मानता।'

-- पीयूष कुमार द्विवेदी 'पूतू'

शिक्षक

'आप हर परिस्थिति में इतने शांत, धीर-गंभीर कैसे रहते हैं?' उसने आश्चर्य से कहा।

'मैं जीवन के रहस्य को समझ गया हूँ बेटा,' वृद्ध व्यक्ति ने अपनी उम्र से आधे उस जिज्ञासु युवा से कहा, 'क्या मैं तुम्हें बेटा कहने का अधिकार रखता हूँ।'

'हाँ-हाँ क्यों नहीं, आप मेरे पिता की आयु के हैं,' उसने मुस्कुराते हुए कहा, 'मुझे कुछ ज्ञान दीजिये।'

'बचपन क्या है?' यूँ ही पूछ लिया वृद्ध ने।

'मूर्खतापूर्ण खेलों, अज्ञानता भरे प्रश्नों और हंसी-मजाक का समय बचपन है।' उसने ठहाका लगाते हुए कहा।

'नहीं वत्स, बाल्यावस्था जीवन का स्वर्णकाल है, जिज्ञासा भरे प्रश्नों, निस्वार्थ सच्ची हंसी का समय।' वृद्ध ने गंभीरता से जवाब दिया। फिर पुनः नया प्रश्न किया, 'और जवानी?'

'मौज-मस्ती, भोग-विलास और ऐशो-आराम का दूसरा नाम जवानी है।' युवा तरुण उसी बिंदास स्वर में बोला।

'दायित्वों को पूर्ण गंभीरता से निभाने, उत्साह और स्फूर्ति से हर मुश्किल पर विजय पाने, नए स्वप्न संजोने और सम्पूर्ण विश्व को नव दृष्टिकोण देने का नाम युवावस्था है।' वृद्ध ने उसी धैर्य के साथ कहा।

'लेकिन वृद्धावस्था तो मृत्यु की थका देने वाली

(शेष पृष्ठ १५ पर)

लत

आज फिर पतिदेव से झगडा हुआ मिनी का, वैसे यह कोई नयी बात नहीं थी पर आज मिनी बहुत डरी हुई थी! अभी सवा महीने पहले ही छोटे भाई को केंसर होने की खबर ने रूह तक झकझोर डाली! वो तो पान-सिगरेट या गुटका कुछ भी नहीं खाता, शुद्ध शाकाहारी है !

पतिदेव पहले से सिगरेट और पान मसाला लेते आ रहे थे ! बेटे के पास अमेरिका गयी तो ठान लिया था वहां आदत छुड़ा देगी ! पर साथ लायी सिगरेट जब खत्म हुई तो बेटे के दोस्त, जो खुद सिगरेट पीता था, उसे साथ लेकर बाजार से और ले आये ! हाँ पान मसाला क्योंकि वहां मिलता नहीं था तो उसकी आदत छूट गयी थी! मिनी ने सोचा चलो एक बुरी लत तो छूट गयी, पर आज फिर मुंह में पान मसाले की खुशबु ने उसका पारा सातवें आसमान पर पहुंचा दिया !

"भाई की हालत देख कर भी आपको होश नहीं आ रहा? कितना जहर रोजाना लेते हैं? चाहते क्या हैं आप? चलिए अब पाउच नहीं पूरा डिब्बा लेकर आइये दोनों मिलकर खाया करेंगे" और भी ना जाने क्या-क्या

बोलती गयी ! गुस्सा तो दिखावे का था पर अंतर्मन में डर केंसर का था हालांकि वो जानती थी की लत है, दो दिन को बाज आयेंगे उसके बाद फिर से...

-- पूर्णिमा शर्मा

(पृष्ठ ८ का शेष)

परिश्रम का फल

लगीं तथा सेठ का खेत भी था तो वह उसी में गुजारा करने लगीं और दोनों बच्चों को पढ़ाने लगीं।

कुछ दिनों तक सब ठीक चला, किंतु कुछ दिन बाद सेठ बेमतलव के पैसे काटने लगा। विरोध करने पर उनको निकाल देने की धमकी देता। मुन्नी देवी के बच्चे भी अब समझदार हो गये थे, उन्हें भी बहुत बुरा लगता था, जब सेठ उनके पैसे काट लेता था। उनके बच्चो ने ये ठान लिया था कि कुछ ऐसा करना है कि हमारा परिवार भी चैन से रह सके।

एक दिन समय आ गया जब बड़े लड़के को मेट्रिक पास कर एक कंपनी में नौकरी मिल गयी, वह अपने काम पर ही ध्यान देता था तथा छुट्टी भी देर से करता था उसकी वजह से कंपनी का काफी नाम हो गया। उसे बहुत सारे प्रमोशन मिले। आज इनके पास किसी चीज की कमी नही है तथा कंपनी मालिक ने इनके कहने पर इनके गाँव में एक फैक्टरी खोली, जिससे गॉव वालों को रोजगार मिला।

आज वे सब लोग लज्जित थे जो इनकी निन्दा करते थे। इन्होंने दिखा दिया कि इंसान जो ठान ले उसे करके दिखाता है।

-- देव कुशवाहा

कुंडलियां

खाली हांडी देख कर, बालक हुआ उदास
लेकिन माँ से कह रहा, भूख लगी ना प्यास
भूख लगी ना प्यास, कह रहा सुन री माता
होती मुझको भूख, माँग खुद भोजन खाता
कहे 'अमन' कविराय, न बालक है पाखंडी
घर की स्थिति ज्ञात, सामने खाली हांडी

-- अमन चाँदपुरी

मुखपोथी पर हो रही, कवियों की भरमार
हमने भी रचना रची, तीखा किया प्रहार
तीखा किया प्रहार, सत्य का भान कराया
रचें सार्थक काव्य, सरल सा मार्ग बताया
मन से अगर रचें छोड़ कर लीपा पोती
सुन्दर बन फिर सब को भाये ये मुखपोथी

साईं हिंदी में रची, रचना है अनमोल
मिसरी जैसे ही लगें, मीठे इसके बोल
मिसरी जैसे बोल, लुभाते सबके मन को
भावों से परिपूर्ण, सजाये हर जीवन को
हिंदी में सुन्दर से गीत, रचो मेरे भाई
बहे प्रेम की सरिता, मीत बने सब साईं

-- लता यादव

मक्का हज करने गए, कई लाख जो लोग
अल्ला कैसे हो गया, दुखद बड़ा संयोग
दुखद बड़ा संयोग, मची भगदड़ कुछ ऐसी
मरे हजारों लोग, बिछी हैं लाशें कैसी
कह 'पूतू' कविराय, हुआ सुन हक्का-बक्का
पुनः हुआ इक बार, रक्त रंजित जो मक्का

-- पीयूष कुमार द्विवेदी 'पूतू'

दोहे

पल में मिलते हैं गले, पल में लातम लात।
राजनीति के खेल में, हर पल होती घात।।
लूट रहे है देश को,पहन शराफत खोल।
खण्ड-खण्ड हो जायगा, भारत का भूगोल।।
सबके अपने रंग है,सबके अपने ढंग।
कोई महलों में पले,हाल किसी के तंग।।
न्याय-व्यवस्था पंगु है, भ्रष्टाचार अपार।
लूटन को देखो खड़े, अनगिन ठेकेदार।।
हाथ जोड़कर मांगते, पहले तो ये वोट।
सुख सत्ता का जो मिले, दे महँगाई चोट।।
भले-भले से है लगे, उजले दिखते रंग।
मंत्री पद पर बैठ कर, दिखलाते फिर ढंग।।

-- गुंजन अग्रवाल

गीत-गंगा

आओ हिंदी दिवस मनाएं !

प्रात भ्रमण में जो मिल जाए, उसको अपना गीत सुनाएँ
सुप्रभात अब बोलें हम सब, गुड मॉर्निंग को बाय बाय
आओ हिंदी दिवस मनाएं!
मातु पिता गुरु के चरणों में, श्रद्धापूर्वक शीश नवायें,
आओ हिंदी दिवस मनाएं!
मुन्ने की अम्मा घरवाली, बाहर वाली सभी बहन जी
संभ्रांता देवी महोदया, माननीया फूफी हो सकती
काकी चाची मौसी फूआ, दादी नानी सासु माँजी
दीदी बहना सरहज साली, दूर कहीं बैठी है आली
कच्चे धागे से बंधे हुए, कानून बीच न कोई आये
आओ हिंदी दिवस मनाएं
इन रिश्तों में है आकर्षण नमन प्रणाम या अभिनन्दन कर
शुभ स्वागत आभार प्रकट कर, एक दूजे को गले लगायें
आओ हिंदी दिवस मनाएं
बाबूजी या स्वसुर पिताजी, काका, फूफा, मौसा, चाचा
मामा मातुल नाना दादा, साला साढ़ू सब घर आजा
आर्य पुत्र या वत्स तात हो, भगिना भांजा भैया भ्राता
अंग्रेजी में अल्प हैं रिश्ते,
बने बड़े शब्दों का भाजा
यहाँ बना अंजाना बंधन
वहां सभी कानून सिखायें
आओ हिंदी दिवस मनाएं

-- जवाहर लाल सिंह

मुक्तक

अंदर बाहर आग लगी है घर चौबारे सुलग रहे
ये हालात सुधारें कैसे कैसे कोई विलग रहे
टुकड़ा-टुकड़ा टूटा भारत टूटी उसकी ताकत भी
जांत-धर्म के झगड़े में क्योंभाई-भाई अलग रहे

पहले मुझको फूलों जैसा तेरा सँग जो प्यारा था
धीरे-धीरे जाना मैंने
तेरा रुख तो न्यारा था
मीठी-मीठी बातें तेरी
सबको ही फुसलाती थीं
मीठी बोली से जाने
कितनों को तूने मारा था

-- आशा पाण्डेय ओझा

चले गये अंग्रेज पर छोड़ गये अपनी पहचान
अंग्रेजी बोलने में कुछ लोग यहाँ समझते शान
अंग्रेजी को यूं आगे बढ़ता देख हमारी हिन्दी
अपने ही देश में बेचारी सहती है अपना अपमान

माँ की गोद में सीखा जो वो मातृ भाषा हिन्दी है
सूर्य सा चमकने वालीये भारत माँ की बिंदी है
अंग्रेजी बना है काल इसकी इसे निगल जायेगा
हिन्दी को अपनाकर बचा लो अभी ये जिंदी है

-- दीपिका कुमारी दीप्ति

गंगा माता बिलख रही थी, लाचारी के घाटों पर
क्रूर लाठियां बरस रही थीं, चन्दन लगे ललाटों पर
खाकी, लगता थूक रही थी, संतों के सम्मानों पर
यूं लगता था मुहर लगी थी, बाबर के फरमानों पर
वर्दी वाले बर्बरता की, सीमाओं को तोड़ गए
केसरिया को नोच फाड़कर, डला सड़क पर छोड़ गए
सत्ता पट्टी बांध आँख पर, बेसुध होकर सोई है
काशी इनकी करतूतों पर, फूट फूट कर रोई है
वे अपनी परम्पराओं का, आधार मांगने बैठे थे
सन्त पुजारी पूजा का अधिकार मांगने बैठे थे
ना भारत को गाली दी थी, फूंका नहीं तिरंगा था
पत्थरबाजी नहीं हुई थी किया न कोई दंगा था
बलवे बाज नहीं थे, ना ही जेहादी नौटंकी थे
ना दाऊद के गुर्गे थे, ना लश्कर के आतंकी थे
धर्म सनातन की गाथा का मान मांगने बैठे थे
वो तो गंगा माँ के प्यारे, महादेव के बेटे थे
हर हर महादेव का नारा क्यों उन्मादी लगता है?
सत्ता को हर भगवा धारी क्यों अपराधी लगता है?
सिर्फ सनातन कर्मों पर ही क्यों पाबन्दी होती है?
गणपति विसर्जनों से ही, क्यों गंगा गन्दी होती है
भजन शंख घंटे चुभते हैं बस सत्ता के कानों में
पर्यावरण शुद्ध लगता है केवल बूचड़खानों में
नहीं फड़कती कभी भुजायें, देशद्रोह के नारों पर
वीर बहादुर मौन रहे, गौ माता के हत्यारों पर
ये 'गौरव चौहान' कहे, कुछ बेड़ा पार नहीं होगा
खून बहाकर संतों का
बिलकुल उद्धार नहीं होगा
घड़ा आपका भर जाएगा
एक दिवस इन पापों से
कोई नहीं बचा पायेगा
संतों के अभिशापों से

-- गौरव चौहान

भारत का श्रृंगार है हिन्दी, हम सब का संस्कार है हिन्दी,
हर बेटे का प्यार है हिन्दी, माँ का ही अवतार है हिन्दी।
रामायण का विस्तार है हिन्दी, गीता पावन सार है हिन्दी,
माँ गंगा की धार है हिन्दी, माँ का ही अवतार है हिन्दी।
युद्धों में ललकार है हिन्दी, योद्धा की तलवार है हिन्दी,
देश की जय जयकार है हिन्दी, माँ का ही अवतार है हिन्दी।
फिल्म की शिल्पकार है हिन्दी, गानों का शब्द संसार है हिन्दी,
अद्भुत कला बाजार है हिन्दी, माँ का ही अवतार है हिन्दी।
कविता का आधार है हिन्दी, कहानी का किरदार है हिन्दी,
शब्द अलंकृत हार है हिन्दी,
माँ का ही अवतार है हिन्दी।
बड़े बड़े अखबार है हिन्दी,
बड़े बड़े व्यापार है हिन्दी,
देश की पालनहार है हिन्दी,
माँ की ही अवतार है हिन्दी।

-- नीरज पान्डेय

इज्जत

किरण सिंह

बिना किसी पूर्व सूचना दिए ही मैं नीलम से मिलने उसके घर गई. सोचा आज सरप्राइज दूं. घंटी बजाते हुए मन ही मन सोच रही थी कि इतने दिनों बाद नीलम मुझे देखकर उछल पड़ेगी. पर क्या दरवाजा आया खोलती है और घर में घुसते ही चारों तरफ सन्नाटा पसरा हुआ. मेरा तो जी घबराने लगा और आया से पूछ बैठी कि घर में सब ठीक तो है न. तभी अपने बेडरूम से नीलम आई और अपने चेहरे की उदासी पर पर्दा डालने के लिए मुस्कुराने का प्रयास करती हुई. पर मैं अपने बचपन की सहेली के मनोभावों को कैसे न पढ़ लेती. फिर भी प्रति उत्तर में मैं भी मुस्कुराते हुए उसके समीप ही सोफे पर बैठ गई.

मैंने हालचाल पूछने के क्रम में नीलम से उसकी बेटी स्नेहा का हाल भी पूछ लिया और स्नेहा के रिश्ते के लिए एक बहुत ही योग्य स्वजातीय अच्छा लड़का बताया. क्योंकि नीलम अक्सर ही मुझसे कहा करती थी कि तुम्हारे नजर में कोई अच्छा लड़का हो तो बताना. बल्कि कई बार फोन पर भी बोली थी स्नेहा तुम्हारी भी बेटी है. लड़का ढूढने की जिम्मेदारी तुम्हारी. पर क्या मैंने लड़के के बारे में बताना शुरू किया तो वो मेरी बात बीच में ही रोकते हुए 'चाय लाती हूँ' कहकर किचेन में चली गई.

मुझे अकेले बैठे देख नीलम की सास मेरे समीप आकर बैठ गई जैसे वे नीलम के अन्दर जाने की प्रतीक्षा ही कर रही थी और कहने लगीं- 'बहुते मन बढ़ गया है आजकल के बचवन का. एक से बढ़कर एक रिश्ता देखे रहे नंदकिशोर (उनका बेटा नीलम के पति), बाकी स्नेहा बियाह करे खातिर तैयारे नाहीं है.' मैंने कहा- 'पूछ लीजिए नेहा से कहीं किसी और को तो नहीं पसंद कर रखा है?' मेरे इतना कहने पर आंटी झल्ला उठीं कहने लगीं- 'तुम भी कइसन बात करने लगी किरण. अरे हमन लोग ऊँची जाति के हैं कइसे अपने से नीच जाति में अपन घर की इज्जत (बेटी) दे दें. अउर नीच जाति का स्वागत सत्कार हम ऊँची जाति वाले अपन दरवाजे पर नाहीं करे सकत हैं. अरे एतना इज्जत कमाया है हमर लड़का नन्दकिशोर. सब मिट्टी मा मिल जाई. एही खातिर पहिले लोग बेटी का जनम लेते ही मार देत रहा सब. अब ओकरे पसंद के नीच जाति मैं बियाह करब तो खानदान पर कलंके न लगी. इ कइसन बेटी जनम ले ली हमर नन्द किशोर का.'

मैं आंटी की बातें बिना किसी तर्क किए चुपचाप सत्यनारायण भगवान् की कथा की तरह सुन रही थी. और याद आने लगी आंटी की पिछली वो बातें जब मैं पिछली बार यहां आई थी.

आंटी नेहा की प्रशंसा करते नहीं थक रही थी. कह रहीं थीं एकरा कहते हैं परवरिश. आज तक नेहा पढाई में टॉप करत रह गई. पहिले बार में नौकरियो बढिया कम्पनी में हो गवा. अउर एतना मोटा रकम पावे वाली बेटी को देखो तो तनियो घमंड ना है उका. घर का भी सब काम कर लेत है. अउर खाना के तो पूछ मत. किसिम किसिम के (तरह तरह का) खाना बनावे जानत है. आदि आदि. भगवान् केकरो (किसी को भी) बेटी दें तो नेहा जइसन.' और तब मैं आंटी के हां में हां मिलाते जाती थी. तभी नीलम नाश्ते का ट्रे लेकर आ गई और मैं स्मृतियों से वापस वर्तमान में लौट आई.

आंटी की बातों से नेहा की उदासी का पूरा माजरा समझ चुकी थी मैं फिर भी मैं नीलम के मुंह से सुनना चाहती थी, इसलिए नीलम से पूछा- 'आखिर बात क्या है नीलम और स्नेहा किसे पसंद की है. लड़का क्या करता है आदि आदि.' नीलम की आँखें छलछला आईं. और आँसू पोंछते हुए मुझसे कहने लगी- 'लड़का आईआईएम से मैनेजमेंट करके जॉब कर रहा है पचास लाख का पैकेज है. देखने में भी हैंडसम है. बाप की बहुत बड़ी फैक्ट्री है.'

मैंने कहा- 'तो अब क्या चाहिए. इतना अच्छा लड़का तो दिया लेकर ढूढने से भी नहीं मिलेगा. फिर ये आंसू क्यों? मैं सबकुछ समझते हुए भी नीलम से पूछ रही थी.

नीलम कहने लगी- 'लड़का बहुत छोटी जाति का है. किसी और शहर में रहता तो कुछ सोंचा भी जा सकता था. अपने ही शहर का है. लोग तरह-तरह की बातें करेंगे. हम लोगों का शहर में रहना मुश्किल हो जाएगा.'

मैंने कहा- 'लोगों की छोड़ो पहले तुम क्या सोंचती हो ये बताओ?'

नीलम कहने लगी- 'मेरे चाहने न चाहने से क्या होगा. मेरे पति इस रिश्ते के लिए कतई तैयार नहीं हैं. और मैं अपने पति के खिलाफ नहीं जाऊँगी.' और फिर उसके आँखों से आँसू छलक पड़े. नेहा कहने लगी- 'सुबह चार बजे से उठकर दिन रात एक करके मेरे पति कितना मेहनत करके बच्चों को पढ़ाए. कितना दिल में अरमान था स्नेहा के विवाह का. मेरे बच्चे इतने स्वार्थी हो जाएंगे मैंने सपने में भी नहीं सोचा था. काश कि उसे इतना नहीं पढ़ाए होते.'

मैंने बीच में रोकते हुए नीलम से पूछा- 'इस विषय में तुम स्नेहा से खुद बात की?' नीलम ने कहा- 'हां एक दिन मेरे पति ने बहुत परेशान होकर कहा कि पूछो स्नेहा से कि वो सूसाइड करेगी या मैं कर लूँ. मेरी तो जान ही निकल गई थी मैंने स्नेहा को समझाने की भरपूर कोशिश की. पर उसका एक ही उत्तर था कि मैं यदि अंकित से शादी नहीं करूंगी तो किसी और से भी नहीं कर सकती. अंकित को मैं बचपन से जानती हूँ उसके अलावा मैं किसी और के बारे में सोच भी नहीं सकती. फिर मैंने धमकाया भी कि तब तुम्हें हम लोगों से रिश्ता तोड़ना पड़ेगा. फिर वो खूब रोने लगी. बोली प्लीज माँ मैं किसी को भी छोड़ना नहीं चाहती. अंकित यदि छोटी जाति में पैदा हुआ है तो इसमें उसकी क्या गलती है. उससे कम औकात वाले करोड़ों रुपये दहेज में मांगते हैं और उसको भी उसके स्वजातिय देंगे ही. आखिर उसमें कमी क्या है. और झल्ला कर कहने लगी रोज धर्म परिवर्तन हो रहा है क्या छोटी जाति को ऊँची जाति में परिवर्तन करने का कोई उपाय नहीं है. प्लीज मम्मी कुछ करो.'

मैं सोचने लगी सही ही तो कह रही है स्नेहा. बालिग है. आत्मनिर्भर है. तो क्या अपना जीवन साथी स्वयं चुनना गुनाह है क्या. क्या ये लोग स्नेहा से रिश्ता खत्म कर लेंगे तो इज्जत बढ़ जाएगी क्या ? क्यों नहीं ये लोग समाज को एक दिशा दे देते हैं. इतना ज्यादा पढ़ा लिखाकर फिर पुरानी सोंच की जंजीरों में क्यों जकड़े हुए हैं. अरे लोगों का क्या कुछ दिन मनोरंजन कर खुद ही चुप हो जाएंगे. वैसी इज्जत किस काम की जो बच्चों की खुशियों के कब्र पर बनी हो.

और मुझसे रहा नहीं गया और मैं बोल ही दी. देखो नीलम गलती स्नेहा की नहीं तुम लोगों की सोच में है. एक तरफ तुम लोग चाहती हो बच्चे जमाने के साथ कदम मिलाकर चलें और दूसरी तरफ चाहती हो पुरानी घिसी-पिटी परम्पराओं को भी बच्चे ढोएं. यदि हम वर्ण विभाजन की बात करें तो विभाजन कर्म के आधार पर हुआ था. इस हिसाब से तो स्नेहा और अंकित स्वजातिय हुए क्योंकि वे दोनों एक ही कम्पनी में कार्यरत हैं. अपनी जाति में विवाह का प्रावधान इसलिए था कि किसी अन्य जाति धर्म वाले घरों में लड़कियों को सामंजस्य स्थापित करने में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता.

तब तक आंटी (नीलम की सास) आ गई और मेरी बात को बीच में रोककर बोलने लगीं. किरण तुम भी कइसन बात करने लगी. तुम्हारा बेटा है न इसीलिए तुम लड़की वालों की समस्या नाहीं समझोगी. हम लोगन आज तक अपने जीवन में बहुते इज्जत कमाए हैं. जब इज्जते नाहीं बची त जिनगी काहे की. मैंने कहा आंटी ऐसा मत कहिए ऐसे में ही बच्चे आत्महत्या जैसा कदम उठा लेते हैं तो आंटी अपना सिर पीटकर बोलने लगी- 'भले मर भी जात त भला होत कम से कम इज्जत त बच जात.'

मैं मन ही मन सोंचने लगी ये कैसी झूठी इज्जत जो किसी की जान और खुशियों से बढ़कर हो ? ■

(पृष्ठ १७ का शेष) **क्या सत्य बोला...**

शाश्वत सत्य की मंजिल अभी बहुत दूर है और जब सब अपने अपने सत्य के साथ जी रहे हैं, ऐसे हालात में मैं कैसे कहूँ कि सदैव सत्य बोला जा सकता है। ■

उम्र के दायरे से अब मुहब्बत का नहीं नाता
जहाँ जेबों में गर्मी हो इश्क बिकने वहीं जाता
जमाने का यहाँ बिगड़ा हुआ दस्तूर है या रब
सेठ बाजार की कीमत बढ़ाने है वहीं आता
कब्र में पाँव हैं जिनके वो दौलत के फरिश्ते हैं
मिजाजे आशिकी के फख्र का मंजर नहीं जाता
सियासत दां कोई तालीम अब मत दे जमाने को
जिन्हें अपने मुकद्दर में शरम लिखना नहीं आता
तेरी बिकने की फितरत थी बिकी है हसरते तेरी
मुहब्बत नाम से जारी तेरा फतबा नहीं भाता
यहां कानून के रंग में हूर की कीमतें खासी
इश्क का दर्ज क्या खर्चा जरा देखो बही खाता

-- नवीन मणि त्रिपाठी

ख्वाब में जो साथ मेरे घर गए
जागती आँखों से वो मंजर गए
पूजते जो देवियों को रात दिन
जन्म बेटी ने लिया तो डर गए
जो मुझे पत्थर बुलाते थे कभी
पूज के अब पत्थरों को तर गए
राह मुझको जो दिखाते थे कभी
दूर मुझसे वो मेरे रहबर गये
रौंदते थे जो धरा को पांव से
मौत आई 'धर्म' वो भी मर गए

-- धर्म पाण्डेय

तिरे नाम खुशियों का गाँव लिख दूँ
सर पर आँचल की छाँव लिख दूँ
हर पग आलोकित हो कर्म पथ तेरा
सारी दुआयें मैं तिरे नाम लिख दूँ
फूलों सा महकता दिन हो तिरा
खुशनुमा रोशन हर शाम लिख दूँ
तिरे नाम से हो रोशन नाम मिरा
आफताब तिरा अब मैं नाम लिख दूँ
बनकर दीपक कर रोशन जहाँ
'आशा' उम्र अब तिरे नाम लिख दूँ

-- राधा श्रोत्रिय 'आशा'

दिल थामकर जाते हैं हम जब भी राहे वफा से
खौफ लगता है हमे तेरी आँखों की खता से
जितना भी मुमकिन था हमने सहा तुम्हारा गम
अब दुआ करो शायद दर्द भी लौट जाए दुआ से
हम बुरे नहीं तो अच्छे ही कहाँ हैं और कहाँ थे
दुश्मनों से जा मिले है हम तुम्हारी वफा से
आप दफन ही कर देती हमें आगोश में लेकिन
सच कहूं तो मौत बेहतर है जुदाई की सजा से

-- अखिलेश पाण्डेय

तनहा रातों का उदास मंजर जब होता है
दिल तन्हाई के साये में सिसक के रोता है
गुम होता है जब यादों के भंवर में यह
आँखों के प्यालों को अश्कों से भिगोता है
आस्तीनों में ही छुपे जब खंजरों को देखा
अंदाजा हुआ तब कैसे कोई नश्तर चुभोता है
न पूछो रुसवाई का आलम हमसे
अहद-ए-गम कैसे कोई अपना बेगाना होता है
तनहा शामों की खुशियाँ न रास आई हमें
दिल अधूरे सपनों की माला पिरोता है
गुलशन में जब रंग भरना चाहा बहार ने
देखा तब यहाँ कारोबार गुलों का होता है

-- प्रिया वच्छानी

उठाना खुद ही पड़ता है यहाँ टूटा बदन अपना
जब तक साँस चलती है कोई कन्धा नहीं मिलता
जला कर दूसरों का घर तमाशा देखते हैं लोग
करे किसका कोई उपकार वह बन्दा नहीं मिलता
यहाँ रिश्वत में चढ़ जाते हैं लाखों के कितने नोट
कहीं प्याऊ बनाने के लिए कोई चंदा नहीं मिलता
भजन गाते गवैये की नजर टिकती चढ़ावे पर
बने कोई 'सूरदास' भक्त वह अँधा नहीं मिलता
कोई व्यापार या कोई नौकरी या हो कोई सेवा
यहाँ ईमानदारी का कोई धंधा नहीं मिलता
यहाँ मजबूर जो जितना उतना ही लूटते हैं लोग
करे निष्काम की सेवा, कोई कारिंदा नहीं मिलता
सभी नाते यहाँ झूठे इक प्रभु ही रहनुमा सबका
प्रभु का आसरा है जब कोई बंदा नहीं मिलता

-- जय प्रकाश भाटिया

सोई सोई सी उम्मीदें जगा करती हैं रातों में
यादें भी तो फुसलाया करती हैं बातों बातों में
उम्मीद में बैठे थे हम प्यार और वफाओं के
अनदेखा कर तल्खी भेजते हैं वो सौगातों में
अपलक निहारती हैं नजरें फुरकत में उनको
जाने किस आस में पलकें बिछाए हैं हातों में
नादिर प्यार समेटे खड़े हैं हम उनकी राहों में
कतरा कतरा बटोरते दिखते वो रिश्ते नातों में
हिसाब मांगता है हमसे दिल उस मुहब्बत का
जाने नजरें झुकाए क्या ढूंढ़ते हैं वो खातों में
दुहाई दिया करते हैं वो जिंदगी की जरूरतों की
कैसे कहें दिल की जरुरतें मुकम्मल जज्बातों में

-- मीनू झा

कितना है दर्दनाक ये एहसास देखिए
सच्चाई जिसको समझे, है आभास देखिए
सबकी दलील सुन के पशेमां है वो बडा
सीधेपन का कैसा ये उपहास देखिए
इक एक कर के राह में ही रुक गए सभी
विश्वास ही रहा न रही आस देखिए
बच्चे को चाँद में भी है रोटी दिखाई दी
माँ का निराशापन भरा उच्छवास देखिए
मुझको अना से वास्ता तुमको गुरूर से
ये आम फर्क भी है बहुत खास देखिए
जिसकी जमानतें ली वही तो फरार है
तोड़ा यहाँ किसी ने है विश्वास देखिए
संजीदगी से जी रहे थे जिंदगी को हम
संजीदगी ही रह गई है पास देखिए

-- पूनम पाण्डेय

दुनिया में हरसू अँधियारा हरसू ही लाचारी है
पर मैं जग को रोशन करती मुझमें इक चिंगारी है
चाहे गलत हों चाहे सही हों पर जज्बात ये मेरे हैं
ताज न पहना और किसी का ये मेरी खुद्दारी है
ऊंचा उठ पाने की खातिर, गिरना है मंजूर नहीं
मेरी अना सिर ऊँचा रखती वो न बनी दरबारी है
गीत गजल की बस्ती से मैं मस्ती लेकर आती हूँ
प्रीत दिलों में भरती हूँ मैं सब कहते फनकारी है
शाही मस्ती में रह सकती फाकामस्ती सह सकती
सुख-दुःख से हँसकर मिलने की मैंने की तैयारी है
मेरे चिंतन और मनन में वो ही वो बस दिखता है
मेरी हर इक रचना उसके प्रति दिल से आभारी है

-- अर्चना पांडा

बारिश की बूंदें मन को स्पर्श कर रही हैं
लगता है वह भी भीड़ में अपनों से बिछड़ रही हैं
कोमल पत्तों से लुढकती बूंदें
अपनी जिन्दगी को बखुबी जी रही है
कंही दूब पर ठहरी कुछ बूंदें
अपना वजूद तलाश रही हैं/सिमट रही हैं जमीं में जैसे,
जमीं को जीवित कर रही हैं
हर पल ये बूंदें कुछ करतब दिखातीं
मस्ती में नंगे तारों पर झूल रही हैं
बारिश की बूंदें पत्तों पर ठहर कर
पेड़ के तने को तृप्त कर रही हैं
सागर में गिरती बारिश की बूंदें
उसके अरमान को पुरा कर रही हैं
सिढियों से फिसलती ये बूंदें
किसी झरने का अहसास करा रही हैं

-- नितिन मेनारिया

पश्चाताप असम्भव है

वैभव दुबे 'विशेष'

आज माँ की कोख में आकर बहुत खुश हूँ। नई दुनिया में आने को आतुर। कब नौ माह पूरे होंगे? माँ की आँखों से देखा मैंने सब कितने खुश हैं पिताजी तो माँ को गोद में उठाकर नाचने लगे दादी माँ चिल्लाई, 'अरे नालायक बहू पेट से है नाती आने वाला है, उतार उसे मेरे नाती को चोट लग जायेगी।' पिताजी ने माँ को उतारा और दौड़ कर दादी माँ को गोद में उठा लिया। सब जोर-जोर से हँसने लगे और मैं भी।

दादी माँ ने माँ के सिर पर हाथ फेरकर कहा, 'बेटा तुम मेरी बहू नहीं बेटी हो। अब तुम अधिक वजन नहीं उठाना, सब काम मैं देख लूँगी, बस तुम अपने खाने पीने का ख्याल रखो। तभी तो फूल जैसा नाती मुझे दोगी' ऐसा कह कर दादी माँ ने माँ को गले से लगा लिया। मैंने भी दादी माँ को इतना पास पाकर एक तरंग महसूस की। मेरे मचलने को माँ ने महसूस किया और ममत्व से मुस्कुरा दी।

कुछ दिन बाद दादी माँ के साथ कोई बुजुर्ग महिला आई। वह माँ के पेट की तरफ बैठी और उनके पेट को छूकर देखा। उसके चेहरे के रंग ही बदलते चले गए। दादी माँ से बोली- 'मेरा अनुभव कहता है यह लड़का नहीं, कलमुँही लड़की है।'

दादी माँ को तो जैसे सांप सूंघ गया। चेहरा क्रोध से तमतमा उठा। माँ से बोलीं- 'उठ करमजली, बैठी-बैठी मेरी छाती पर मूंग दलेगी क्या? घर के बहुत काम बाकी हैं। कपड़े धुलना है, खाना बनाना है और पानी भी भरना है।' माँ को लगभग धक्का लगाते हुए बोलीं। मुझे बहुत डर लग रहा था।

शाम को दादी माँ ने पापा को सारी बात बताई। पापा ने माँ को हिकारत भरी नजर से देखा और दादी माँ के कान में धीरे-से कुछ कहा। घर में मातम सा छा गया। माँ के आंसू थमने का नाम नहीं ले रहे थे। पेट को वो प्यार से सहला रहीं थीं। मेरा भी मन जोर-जोर से रोने को कर रहा था।

अगली सुबह पापा ऑफिस नहीं गए। घर के बाहर एक ऑटो आकर रुक गया। पापा ने माँ का हाथ पकड़ा और लगभग खींचते हुए ऑटो में बिठा दिया। ऑटो जहाँ रुका एक बड़ा-सा अस्पताल था। पापा ने माँ से कहा, "मैंने डॉक्टर साहब से बात कर ली है। कुछ ही देर में तुम्हारा गर्भपात हो जाएगा। बस फिर सब पहले जैसा हो जाएगा। यह तो कहो कि यहाँ मेरा दोस्त वार्डबॉय है, तो उसने डॉक्टर से कुछ ले देकर बात पक्की कर ली। नहीं तो बाहर बोर्ड पर साफ लिखा है। यहाँ प्रसव से पूर्व लिंग परीक्षण नहीं होता है और भ्रूण हत्या कराना कानूनन अपराध है। चलो, इस बोझ को अब जल्दी हटा दो।"

माँ लगभग चिल्लाई, "नहीं, यह बोझ नहीं है, यह लड़की ही सही मगर है तो हमारा ही खून। दया करो मत गिराओ इस नन्ही सी जान को। और उस अनपढ़ दाई की बातों में आकर गलत कदम मत उठाओ। एक बार डॉक्टर से चेक तो करा लो कि लड़का है या लड़की?"

पापा ने एक न सुनी। माँ को ऑपरेशन थियेटर में भेज दिया गया। मैंने पापा को आवाज दी- 'पापा मुझे मत मारो। क्या फर्क पड़ता है कि मैं लड़का हूँ या लड़की? हूँ तो तुम्हारा ही अंश!' मगर मेरी आवाज भला कौन सुनता।

डॉक्टर ने जैसे ही अल्ट्रासाउंड मशीन में मुझे देखा वो चौंक गया- 'अरे यह तो लड़का है। लगता है कि कोई गलतफहमी हुई है। मैं अभी इसके पति को सच बताता हूँ लेकिन नहीं अगर बता दिया, तो लिए गए बीस हजार रुपये भी लौटाने पड़ेंगे। नहीं, मैं कुछ नही बताउंगा। मुझे जिस काम करने के लिए पैसे मिले हैं, मैं करूँगा।' ऐसा बड़बड़ाते हुए उसने औजार उठाये। औजारो की आवाज ने मुझे अंदर तक कंपा दिया।

उसने जैसे ही मुझे बाहर निकालना चाहा तेजधार औजार से मेरा एक पैर कट के बाहर आ गया मेरी माँ की कोख खून से लथपथ हो गई। मैं भयभीत हो कर और सिमट गया शायद बच जाऊँ, मगर फिर एक चोट में मेरा एक नन्हा सा हाथ कट के बाहर आ गया। मैं दर्द से कराह उठा।

मेरी सांसे साथ छोड़ रहीं थीं और अंत में उस डॉक्टर रूपी राक्षस ने मेरे छोटे छोटे टुकड़े बाहर निकाल दिये। मेरे अर्धविकसित शरीर से आत्मा बाहर निकल गई। मेरी आत्मा माँ को निहार रही थी, उसके दर्द को महसूस कर रही थी। कुछ देर में माँ को होश आ गया। पापा भी अंदर आ गए। दादी माँ भी अस्पताल आ गईं थी।

यह सब पापा के दोस्त ने देख लिया था उसने पापा को सब कुछ बता दिया। पापा और दादी माँ रो रहे थे। दादी माँ तो बेहोश ही हो गईं थीं। पापा ने डॉक्टर के गाल पर जोर से एक तमाचा मारा और चिल्लाये- 'तुमने पैसे के लिए मेरे बेटे को मार दिया। तुम बहुत निर्दयी और गिरे हुए इंसान हो।'

तभी माँ कराहती हुई बोलीं- 'गिरा हुआ डॉक्टर है? और तुम लोग क्या हो? घटिया सोच वाले वहशी जानवर जिन्हें सिर्फ लड़का चाहिए। क्या लड़की का कोई अस्तित्व नहीं? मैं भी तो एक लड़की थी। तुम्हारी माँ भी तो लड़की थी, अगर उनके पिता ने भी उन्हें मार दिया होता, तो आज तुम नहीं होते। घिन आती है मुझे तुम लोगों से।'

पापा, दादी माँ और डॉक्टर सिर झुकाये खड़े थे और मैं उनकी मूर्खता पर हँस रहा था। माँ के चरण छूने का असफल प्रयास कर मैं चल पड़ा ऐसी कोख की तलाश में जहाँ लड़के-लड़की में कोई फर्क न हो। ■

(पृष्ठ ७ का शेष)

कहानी : गुरुदक्षिणा

वाचमैन का भी काम करता था। स्कूल के प्रधानाध्यापक उसके कामों से खुश थे। लेकिन उन्हें बहादुर में परिवर्तन दिखाई दिया। अब उन्हें पहलेवाला गँवार नहीं बल्कि पढ़ा-लिखा, तहजीबदार, साक्षरता से भरपूर बहादुर दिखाई दिया। उन्होंने उसकी प्रतिभा को देखकर नर्सरी का हिंदी शिक्षक बना दिया।

बहादुर अपने नसीब को सराहा रहा था और राधा को। उसे नई दिशा, नया आयाम मिला। उसने उसे गुरुदक्षिणा देनी चाही तो राधा ने केवल राखी बंधवाई। वह आज भी इस धागे में बंधा रक्षासूत्र के प्यार को निभा रहा है।

इक्कीसवीं सदी की राधा ने निरक्षर बहादुर को साक्षर बना गुरु दक्षिणा में लिया संवेदनाओं की राखी का स्वर्णिम प्रेम धागा। जबकि एकलव्य ने गुरु दक्षिणा में दांया अंगूठा काट कर कितना बड़ा दंड स्वीकार किया था। तब थी कितनी कुंठित, ईर्ष्यालु सीमा रेखा। सुयोग बुद्धि के पात्र का कितना बड़ा उपहास? निरंकुशता नकारात्मक सोच। सदियों ने देखा, पढ़ा और सुना! राधा की सकारात्मक, उपयोगी, परहितकारी सोच ने समाज का दृष्टिकोण ही बदल दिया। हिंदी शिक्षा के इस अर्क ने जीवन सौपान को शिखर दिया। ■

(पृष्ठ ११ का शेष)

लघुकथा : शिक्षक

प्रतीक्षा का नाम है।' वह तपाक से बोला। शायद वह बुढ़ापे पर भी वृद्ध के विचारों को जानना चाहता था, 'जहाँ न ऊर्जा का संचार है, न स्वप्न देखने की जरूरत। बीमारी और दुःख-तकलीफ का दूसरा नाम जीवन संध्या। क्यों आपका क्या विचार है?' उसने मानो वृद्ध पर ही कटाक्ष किया हो।

'वत्स, तुम फिर गलत हो। जीवन के प्रति सकारात्मक नजरिया रखो।' वृद्ध ने अपना ष्टिकोण रखा, 'वृद्धावस्था उन सपनों को साकार करने की अवस्था है, जो तुम बचपन और जवानी में पूर्ण नहीं कर सके। अपने अनुभव बच्चों और युवाओं को बाँटने की उम्र है यह। रही बात मृत्यु की तो किसी भी क्षण और किसी भी अवस्था में आ सकती है, उसके लिए प्रतीक्षा कैसी?'

'आप यदि मेरे गुरु बन जाएँ तो संभव है मुझे नई दिशा-मार्गदर्शन मिल जाये,' नतमस्तक होकर वह वृद्ध शिक्षक के चरणों में गिर पड़ा।

-- महावीर उत्तरांचली

लघुकथा

बच्चे मन के सच्चे

गुरमेल सिंह भमरा, लंदन

हरबंस सिंह के बेटे मोहन को कैम्ब्रिज से डिग्री मिली थी। घर में बहुत खुशियां थीं। इस खुशी में हरबंस सिंह ने अपने और अपने बेटे मोहन के दोस्तों को रैड लॉयन पब में पार्टी का इंतजाम कर दिया। पब में सभी बियर और अन्य ड्रिंक पी रहे थे और हरबंस सिंह को बधाई दे रहे थे। बेटे मोहन के सभी दोस्त हाथों में बुडवाइजर बियर की बोतलें लिए डांस कर रहे थे। एक के बाद एक पंजाबी गाना लगता और सभी झूम झूम कर डांस करते।

तभी किसी ने एक और पंजाबी का गाना लगा दिया "घड़िया पार लंघा दे वे, मिन्तां तेरीआं कर दी". इस गाने की धुन पर सभी मोहन के दोस्त जोर शोर से डांस करने लगे। जब गाना खत्म हुआ तो मोहन अपनी बोतल ले कर अपने डैडी के टेबल पर आ बैठा और बोला," डैडी ! यह गाना हम सबको बहुत पसंद है और इसे बार बार सुनते हैं लेकिन इसके अर्थ हमें किसी को भी पता नहीं है क्योंकि हमें पंजाबी इतनी आती नहीं।

हरबंस सिंह बोला, "बेटा ! जैसे तुम रोमिओ और जूलियट के बारे में जानते हो, इसी तरह ही सोहणी और महींवाल लवर थे जो आपस में बहुत प्यार करते थे। सोहणी के घर वालों ने उस की शादी कहीं और कर दी। महींवाल से यह सहन नहीं हुआ और सोहणी के पीछे उसके सुसराल चले गया और एक दरिया के किनारे पर रहने लगा। सोहनी रोज रात को एक घड़े पर तैरकर दरिया के उस पार महींवाल को मिलने जाती और मिलने के बाद फिर तैरकर आती और घड़े को कहीं झाड़िओं में छुपा देती।

सोहनी की ननद को इस बात का पता चल गया और एक दिन वोह एक कच्चा घड़ा ले कर सोहणी के पीछे जाने लगी। जब सोहणी अपने प्रेमी से मिलकर आई तो उसने घड़े को छुपा दिया और घर की और चल पडी। सोहणी की ननद ने उस घड़े को हटाकर उसकी जगह कच्चा घड़ा रख दिया। जब दूसरी रात को सोहनी अपने प्रेमी से मिलने के लिए घड़े पर तैरने लगी तो उसे महसूस हो गया कि घड़ा तो कच्चा था, मन ही मन में सोहणी घड़े से मिन्नतें करने लगी कि वोह उसे दरिया के उस पार ले जाए ताकि वोह अपने प्रेमी से मिल सके। सोहनी डूबने लगी और महिंवाल ने देखकर दरिया में छलांग लगा दी और दोनों मर गए। बेटा ! वोह सच्चे प्रेमी थे, तभी तो आज तक दुनिया उन्हें याद करती है और लोग उनके गीत गाते हैं "

मोहन बोला, 'डैडी ! तो क्या मेरी बहन सिम्मी का प्यार झूठा था जो अर्जन के साथ शादी करना चाहती थी मगर आप माने नहीं थे और मेरी बहन को हमेशा के लिए घर छोड़ना पड़ा, oh come on dad! why this double standard?'

हरबंस सिंह को ऐसा लगा जैसे बीअर के ग्लास में डूब गया हो। ■

कविता

मत जाओ दूर मेरे सखा, निकट मम रहो
कुछ मन की कहो, हिय की सुनो, चाहते रहो
आत्मा में रहे पास सदा, दूर कब हुए
अपने पराये भेद कभी, हम को ना छुए
जो भी था रहा हृदये, तुरत तुम से कह दिए
पाए तुम्हारी सीख, सफल जग में हम हुए
पाए हुए हैं जो भी भाव, तुम्हारे दिए
सूने पने में तुमरे
बिना, कैसे हम जिए
मिलवा दिए गुरू को,
मिला ब्रह्म जो दिए
दे प्रीति मीति अपनी
व्यथा, उर में बस रहो

-- गोपाल बघेल 'मधु', कनाडा

लघुकथा

मनचले

लॉन्ग रूट की बस सर्पीली पहाड़ी सड़क से गुजर रही थी। कंडक्टर की सीटी के साथ ही बस सवारियों को चढ़ाने के लिए एकाएक रुकी। अन्य सवारियों के साथ दो किशोरियां भी बस में चढ़ी। दो मनचले लड़के भी उनका पीछा करते बस में चढ़ गए थे। बस की सभी सीटों पर सवारियां बैठी थी , इसीलिए दोनों लड़के बस की बीच वाली गैलरी नुमा जगह पर खड़े हो गए। दोनों किशोरियों को सीट पर बैठी सवारियों ने आगे-पीछे, जैसे -तैसे एडजस्ट करके बिठा दिया।

तभी एक मनचले ने आगे वाली सीट पर बैठी किशोरी के साथ बुदबुदाहट के साथ छेड़खानी शुरू कर दी और दुसरा मनचला पीछे वाली सीट पर बैठी किशोरी के साथ अपनी टांग सटाकर खड़ा हो गया। यही क्रम काफी देर तक चलता रहा। पीछे वाली किशोरी के सामने की सीट पर सिद्धांत अपनी ५ साल की बेटी और पत्नी के साथ बैठा था। किशोरी की नजर सिद्धांत पर पड़ी तो वह लज्जा से झेंप सी गई थी। मानो, सहायता के लिए कहना चाहती हो मगर संकोचवश कह न पा रही हो।

बस में भीड़ ज्यादा होने के कारण किसी का भी ध्यान उन मनचलों की हरकतों पर नहीं गया। सिद्धांत ने जैसे ही पीछे वाली किशोरी से कहा कि 'अगर आपको बैठने में कोई परेशानी हो रही है तो आप मेरी सीट पर बैठ जाइये।' इससे पहले कि वह किशोरी कुछ प्रतिक्रिया देती, पीछे वाला मनचला सचेत हो गया। सिद्धांत ने उस मनचले को उग्र भावों के साथ घूर कर देखा तो उसके माथे पर बल पढ़ने लगे। सहारे का अहसास पाकर, आगे बैठी किशोरी ने भी हिम्मत जुटाकर ऊँचे स्वर में विरोध कर दिया। सभी सवारियों की नजर अब उन मनचलों पर थी। दो-तीन सवारियों ने उन्हें हड़का भी दिया था। ये देखकर दोनों मनचलों पसीने-पसीने हो गए थे। उनकी टांगों में पैदा हो चुकी कंपकपी से उनका बस में खड़ा रहना अब मुश्किल हो गया था। सवारियों को उतारने के लिए जैसे ही बस रुकी तो वो मनचले तेजी से बस से नीचे उतर गए।

दोनों किशोरियों के चेहरों पर अब मुस्कान तैर रही थी। शायद वे समझ चुकीं थी कि निडरता और आत्मविश्वास से हर मुसीबत का सामना किया जा सकता है।

कुछ ही देर में उनका स्टॉप आ गया। उन्होंने निश्चल नेत्रों से सिद्धांत को एक नजर देखा और धन्यवाद करते हुए बस से उतर गई। सिद्धांत ने भी मुस्कुरा कर संतोष की सांस ली। उसका सफर लम्बा था, इसीलिए उसने आँखे मूंद ली थी। बस अब पुनः पहाड़ी -सर्पीली सड़क पर निर्बाध दौड़ रही थी।

-- मनोज चौहान

माँ कितनी महान होती है
उसके चरणों में जन्नत होती है
माँ की महिमा का क्या करुँ वर्णन
वो तो सारे ब्रह्मांड की माँ होती है
देवता भी जिन्हें पूजते नहीं थकते
ऐसी माँ हम सबकी पहचान होती है
वो भूखी रहकर हमको खिलाती है
ये उसके ममता की पहचान होती है
माँ कितनी महान होती है
जिसकी माँ नहीं होती वो कितने अभागे हैं
पर माँ ही उनकी भी पहचान होती है,
फिर क्यों भूल जाते उसके त्याग
वो तो बच्चों के मुख की मुस्कान होती है
माँ कितनी महान होती है
बीबी आने के बाद भूल जाते लोग माँ को
पर माँ को अपने बच्चों की परवाह होती है
हर दुःख अपने पर लेकर बच्चों के
हर सुख सेहत की परवाह होती है,
माँ कितनी महान होती है
उसके चरणों में सारा जहाँ होता है!

-- गरिमा पाण्डेय

क्या सदैव सत्य बोला जा सकता है?

कैलाश शर्मा

क्या मैं सदैव सत्य बोलता हूँ? बोल पाता हूँ? क्यूँ? एक ऐसा प्रश्न जिसका उत्तर आसान भी है और बहुत कठिन भी। बहुत आसान है यह कहना कि जिसे मेरा मन या अंतरात्मा सच मानता है उसे मैं बिना किसी भय या परिणाम की चिंता किये स्पष्ट कह देता हूँ, क्यूँ कि ऐसा करने से मेरे मन को संतुष्टि मिलती है. लेकिन क्या यह सत्य जिसे मेरा मन सत्य मानता है, वास्तव में सम्पूर्ण और सार्वभौमिक सत्य है? क्या मेरी अंतरात्मा इतनी निर्मल और निर्पेक्ष है कि वह सत्य का मूल्यांकन कर सकती है? क्या मेरी शिक्षा, संस्कार, ज्ञान-संचय, आसपास के वातावरण, जीवन अनुभवों आदि ने मेरी आत्मा को अपने आवरण से नहीं ढक रखा है, जिससे मेरा सत्य का मूल्यांकन व्यक्तिगत, सापेक्ष हो गया है और इसको मैं शाश्वत सत्य कैसे मान लूँ? फिर मैं कैसे कैसे कह दूँ कि मैं हमेशा सत्य बोलता हूँ?

सत्य क्या है एक ऐसा प्रश्न है जिसका उत्तर बहुत कठिन है। मैं जो आँखों से देखता हूँ, कानों से सुनता हूँ वह केवल मेरा सापेक्ष, व्यक्तिगत, अर्ध सत्य है. मैंने जो देखा है उससे परे भी उस घटना के पीछे कोई सत्य छुपा हो सकता है जिससे मैं अनभिज्ञ हूँ. इसलिए मेरा देखा सुना सत्य कैसे सम्पूर्ण, सार्वभौमिक सत्य हो सकता है? हम वस्तुओं और घटनाओं को उस तरह नहीं देखते जैसी वे हैं, बल्कि उस तरह जैसा हम देखना चाहते हैं. प्रश्न उठता है कि सत्य क्या है? भारतीय दर्शन के अनुसार ब्रह्म ही परम सत्य है जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। अपनी आत्मा को उस परम आत्मा से आत्मसात करके और उसमें स्वयं को समाहित करके ही उस निरपेक्ष परम सत्य का अनुभव कर सकते हैं. लेकिन इस सत्य का दर्शन और पालन एक साधारण व्यक्ति के लिए संभव नहीं है. गाँधी ने कहा था 'सत्य की खोज के साधन जितने कठिन हैं, उतने ही आसान भी हैं। अहंकारी व्यक्ति को वे काफी कठिन लग सकते हैं और अबोध शिशु को पर्याप्त सरल।'

हमें बचपन से सिखाया जाता है 'सत्यम् ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्, न ब्रूयात् सत्यम् अप्रियं', लेकिन सत्य अधिकांशतः कड़वा होता है और अगर उसे प्रिय बनाना पड़े तो फिर वह सत्य कहाँ रहेगा, अधिक से अधिक उसे चासनी में पगा अर्ध सत्य कह सकते हैं। अगर सत्य अप्रिय है तो उसे न कहना क्या सत्य का गला घोटना नहीं है? अप्रिय सत्य कहने के स्थान पर अगर मौन का दामन थाम लिया जाय तो क्या यह असत्य का साथ देना नहीं होगा? ऐसे हालात में क्या किया जाए?

आज के समय जब चारों ओर स्वार्थ और असत्य का राज्य है, कैसे एक व्यक्ति केवल सत्य के सहारे जीवन में आगे बढ़ सकता है? लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि कुछ पल की खुशी के लिए असत्य को अपना लिया जाये। सत्य बोलना आसान है क्यों कि आपको याद नहीं रखना होता कि आपने पहले क्या कहा था, लेकिन एक बार झूठ बोलने पर उस झूठ को छुपाने के लिए न जाने कितने झूठ बोलने पड़ते हैं।

अपने व्यक्तिगत और कार्य क्षेत्र पर जब दृष्टिपात करता हूँ तो मेरे लिए यह कहना बहुत कठिन होगा कि मैंने सदैव सत्य ही बोला या नहीं, लेकिन इतना अवश्य कहूँगा कि मैंने अपने कार्यों और निर्णयों में निस्संकोच और बिना किसी डर के वही निर्णय लिया जो मेरी अंतरात्मा ने तथ्यों के आधार पर सही माना और अपने आप को और अपनी अंतरात्मा को कभी धोखा नहीं दिया. अपने व्यक्तिगत और कार्य क्षेत्र में सदैव कोशिश की कि ऐसा कोई कार्य न करूँ जिसे मेरी आत्मा सही स्वीकार नहीं करती। किसी को अपने शब्दों से चोट न पहुंचे इस लिए कई बार सत्य कहने की बजाय मौन का दामन थाम लिया। किसी को कुछ पल की खुशी देने के लिए असत्य का सहारा लेना मेरे लिये संभव नहीं, और न ही ऐसे अप्रिय सत्य को कहना जिससे किसी को दुःख पहुंचे। यह मेरा सत्य है और यह सत्य है या असत्य इसका निर्णय मैं भविष्य पर छोड़ता हूँ। सार्वभौमिक और

(शेष पृष्ठ १३ पर)

बुढ़ापे का दर्द

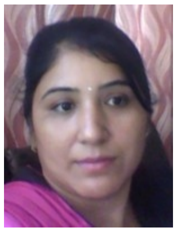

कामनी गुप्ता

आज फिर रीटा और अभय घर देरी से आए थे ! लक्ष्मी के देहांत के बाद श्यामलाल बहुत तन्हा और बेबस महसूस करते थे उनकी तो जिन्दगी थम सी गई थी। अपने कमरे मे सारा दिन बस घड़ी को निहारते रहते! साठ की आयु थी जब लक्ष्मी अचानक ही बीमारी से पीड़ित होकर चल बसी थी। लाख कोशिशों के बावजूद भी वो लक्ष्मी को बचा नहीं पाए। कहने को तो उनके दो बेटे और एक बेटी भी थी मगर फिर भी अपने दिल की बात वो खुलकर किसी से कह नहीं पाते थे बस सबकी जरूरतों के साथ ही उलझे रहते थे। खुद के लिए जीना तो वो जैसे भूल ही गए थे। बेटा और बहू दोनों नौकरी करते थे। बहु सुबह खाना बनाकर निकल जाती थी। ध्यान तो बहू और बेटा बहुत रखते थे पर उम्र के इस पड़ाव में जो देखभाल जीवन साथी कर सकता है वो शायद कोई नहीं कर सकता। श्यामलाल भी उसी दौर से गुजर रहे थे जब दोनो बेटे अपनी अपनी गृहस्थी में व्यस्त थे ।

हर हाल में बस अपने बच्चों का ही भला सोचने वाले श्यामलाल बहुत तन्हा महसूस करते थे, कभी-कभी तो उन्हें लगता कि वो सिर्फ घर की देखभाल के लिए हैं। बहु और बेटे को अगर कोई छुट्टी होती भी तो वो अपने ऊपर व्यतीत करना पसंद करते। कहीं घूमने चले जाते या अपने काम निबटाने में मगन हो जाते। श्यामलाल बस जैसे खाना खाने के हिस्सेदार रह गए थे शायद! अगर उनको कुछ दिन के लिए कहीं जाना होता तो श्यामलाल खुद ही जैसे तैसे अपना खाना बना लेते। वो अपनी मर्जी से अपने लिए नहीं वक्त निकाल पाते थे। अगर शहर से बाहर अपने भाई या बहन के पास जाने का मन करे तो उनको लम्बा इन्तजार करना पड़ता। दोनो बेटे अलग अलग रहते थे। अपना जाने का प्रोग्राम वो स्थगित करते रहते कि बच्चों को कोई दिक्कत ना आए। बेटी भी कम ही आती जाती थी ।कभी अपने किसी हम उम्र दोस्त से मुलाकात हो जाती तो बातों के किस्से शुरू होते और वही दर्द उभर कर किसी ना किसी रूप में सामने आ जाता कि आखिर इस उम्र में इन्सान इतना बेबस और तन्हा क्यों हो जाता है। चाहकर भी अपनी मर्जी से अपने लिए नहीं जी पाता। जवानी अपने बच्चों की देखभाल में गुजर जाती है और बुढ़ापा बच्चों के बच्चों का ध्यान रखने और बस घर की रखवाली में ही।

श्यामलाल को ज्यादा दिक्कत अकेलेपन से हो रही थी। इस उम्र में शरीर में थकावट दर्द तो आम बात है पर बेटा बहू व्यस्त होने के कारण वक्त नही निकाल पाते थे। जाने श्यामलाल जैसे और कितने ही बुजुर्ग होंगे जो ऐसे हालात से गुजरते हैं औरतों की भी यही दास्तां होगी जरुरत है तो बस इस दर्द को समझने की और सहलाने की बस जरा सा वक्त निकालकर अपने वयस्त जीवन से यदि घर के बड़ों के साथ बिताया जाए अहम फैसलों में उनकी रजामंदी ली जाए कभी उनको भी साथ घुमाने ले जाएं क्योकि मन तो सबका एक जैसा होता है कहीं मन के किसी कोने मे जीने की ख्वाहिश तो होती है हंसकर !बस इन छोटी बातो से ही वो कितना खुश होंगे हम कल्पना भी नहीं कर सकते थोड़ा सा दबा देना मानो उनके दर्द को बरसों की राहत दे जाएगा ! ■

(पृष्ठ ६ का शेष)

लघुकथा : प्रेम

हुए मैं तेरे पलड़े देखती हूँ, तू हमेशा उसकी चख-चख में उसे ज्यादा संतरे तौल देती है ।

बूढ़ी माँ नें साथ सब्जी बेचने वाली से कहा, 'उसकी चख-चख संतरे के लिए नहीं, मुझे संतरा खिलाने को लेकर होती है। वो समझता है कि मैं उसकी बात समझती नहीं, पर मैं बस उसका प्रेम देखती हूँ, पलड़ों पर संतरे अपने आप बढ़ जाते हैं।'

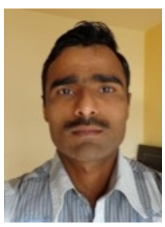

-- धर्म सिंह राठौर

आरक्षण पर नये सिरे से बहस जरूरी

मृत्युंजय दीक्षित

संघमुखपत्र पांचजन्य व आर्गनाइजर में संघप्रमुख मोहन भागवत ने आरक्षण के विषय में अपने जो विचार व्यक्त किये हैं वह समय के अनुकूल हैं लेकिन बिहार के चुनावों में जिस प्रकार जातिवाद का जहर फैलाया जा रहा है उसमें जातिवाद की आग पर अपनी रोटी सेंकने वाले नेताओं का आगबबूला होना स्वाभाविक है। इन तथाकथित सेकुलर दलों को संघप्रमुख के बयान के बहाने भाजपा व संघ परिवार पर तीखा हमला बोलने का अवसर मिल गया है। संघप्रमुख मोहन भगवत ने अपने साक्षात्कार में ऐसा कुछ नहीं कहा है कि जिससे इन दलों व समाज के पिछडों व अतिपिछडों का किसी भी प्रकार से अहित हो रहा हो।

लेकिन बिहार चुनाव के मददेनजर मोहन भागवत जी का बयान बिहार में भाजपा के लिए नयी मुसीबत तो ले ही आया है। मोहन भगवत के साक्षात्कार को ठीक से पढ़े बिना ही चारा घोटाले के आरोपी व मंडल पार्ट-२ का आधार बनाने वाले घोर जातिवादी नेता लालू यादव ने बयान दिया है कि 'यदि माई का दूध पिया है तो आरक्षण हटाकर दिखाओ। हम तो आबादी के हिसाब से आरक्षण लेकर रहेंगे।'

उधर बसपा सुप्रीमो मायावती जो कि लोकसभा चुनावों में बुरी तरह से मात खा चुकी हैं और उनका मानसिक संतुलन भी गड़बड़ा गया है वह भी संघ के बहाने भाजपा पर ही हमलावर हो रही हैं। मायावती को तो अब हर बात पर मोदी-मोदी ही नजर आ रहे हैं। वैसे भी अब बसपा सुप्रीमो मायावती पर घोटालों की फांस कसने जा रही है जिससे घबराकर वे ऊल-जलूल बयानबाजी करने लग गयी हैं। मायावती का बयान आया है कि देशभर के दलित भाजपा से नाराज हैं और अपने अपमान का बदला लेकर रहेंगे। बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार और उप्र के जातिवादी राजनीति करने वाले नेताओं ने भी संघप्रमुख के खिलाफ जमकर बयानबाजी करी है।

उधर सोशल मीडिया और टीवी चैनलों पर संघ के खिलाफ गर्मागर्म बहस शुरू हो गयी है। इसी बीच एक पूर्व आईबी प्रमुख का सनसनीखेज बयान आया कि संघपरिवार ने भी इंदिरा गांधी के शासनकाल में लगाये गये आपातकाल का समर्थन किया था, जो कि पूरी तरह से बकवास है और ऐसा प्रतीत हो रहा है कि यह बयानबाजी संघ परिवार के बहाने पीएम मोदी के विकास रथ के पहिये को रोकने के खिलाफ गहरी सेकुलर व विदेशी ताकतों की साजिशें हो रही है। संघ प्रमुख मोहन भागवत की आरक्षण पर सलाह समयानुकूल तो है लेकिन राजनैतिक लाभ की दृष्टि से देखा जाये तो उन्हें भी इस विषय पर विचार व्यक्त नहीं करने चाहिये थे। आज आरक्षण पर उनके बयान के कारण ही भारतीय जनता पार्टी व केंद्र सरकार को काफी असहज स्थिति का सामना करना पड़ा और केंद्रीय मंत्री रविशंकर प्रसाद को मीडिया में विधिवत बयान देने के लिए आगे आना पड़ा। भागवत जी के बयान से एक बड़ा खतरा यह पैदा हो गया है कि भाजपा विरोधी सभी ताकतें अब उनके बयान को चुनाव प्रचार के दौरान पूरी ताकत के साथ भुनाने का प्रयास करेंगी। जबकि भागवत जी ने केवल और केवल एक समिति बनाकर आरक्षण पर नये सिरे से विचार करने पर ही बल दिया है। साथ ही साथ यह भी विचार व्यक्त किया है कि आरक्षण पर दबाव बना रहे नये समूहों के आगे अब और न झुका जाये।

ज्ञातव्य है कि वर्तमान समय में गुजरात में हार्दिक पटेल के नेतृत्व में पाटीदार आरक्षण आंदोलन चल रहा है वहीं दूसरी ओर राजस्थान में गुर्जर और उप्र में जाट समुदाय के लोग आरक्षण की मांगकर रहे हैं जबकि धार्मिक आधार पर भी आरक्षण की मांग की जा रही है। संसद में अभी तक महिला आरक्षण बिल पास नहीं हो सका है। इस प्रकार चारों ओर से केवल आरक्षण समर्थकों और उनके विस्तार की ही गूंज सुनायी पड़ रही है। अतः संघप्रमुख का यह कहना सही है कि आरक्षण के बहाने देश के सभी दल राजनीति कर रहे हैं। देश के बहुसंख्यक हिंदू समाज की एकता को जातिवाद के माध्यम से तोड़कर अपने निहित राजनैतिक स्वार्थो की पूर्ति कर रहे हैं।

आज नहीं तो कल आरक्षण पर नये सिरे विचार-विमर्श करना ही होगा। वैसे भी समय आ रहा है कि आरक्षण पर नये सिरे से व्यापक विचार विनिमय हो और आवश्यकता पड़ने पर संविधान संशोधन व आरक्षण समर्थकों व विरोधियों के बीच जनमत संग्रह भी कराना चाहिये। केवल गाली गलौच के माध्यम से आरक्षण अधिक समय तक नहीं लिया जा सकता। उप्र और बिहार में तो आरक्षण का लाभ उन लोगों को भी नहीं मिल पा रहा जो आरक्षण में आते हैं। यहां तो केवल हर जगह परिवारवाद और जातिवाद की ही राजनीति हो रही है। लोकतंत्र में हर समय बहस और नये विचारों का आदान प्रदान होना चाहिये तभी लोकतंत्र भी बचेगा नही तो यह तो लाठीतंत्र और बयान तंत्र में ही परिवर्तित हो जायेगा। ■

रोड के नाम परिवर्तन पर रुदाली गान

डा. विवेक आर्य

जैसा कि अपेक्षित था वैसा ही हुआ। औरंगजेब के नाम पर सड़क का नाम परिवर्तन करने पर रुदाली गान प्रारम्भ हो गया हैं। मुसलमान, वामपंथी, सिविल सोसाइटी के आदर्श एक्टिविस्ट, छदम इतिहासकार, पेज थ्री के मानव अधिकार कार्यकर्ताओं के पेट में सबसे अधिक मरोड़ हो रही हैं। कोई औरंगजेब को न्यायप्रिय शासक, कोई जिन्दा पीर, तो कोई महान विजेता बताता है। इसलिए औरंगजेब के जीवन के कुछ पहलुओं से आपको परिचित करवाना हमारा दायित्व है।

१. औरंगजेब की सनक ने मुगल सल्तनत को बर्बाद कर दिया। करीब २० वर्षों तक दक्षिण में चले युद्ध ने सरकारी खजाना समाप्त कर दिया, उसके सभी सरदार या तो बुड्ढे हो गए या मर गए। मगर विजयश्री नहीं दिखी। अपने उत्कर्ष से मुगल सल्तनत जमीन पर आ गिरी और ताश के पत्तों के समान ढह गई। यह औरंगजेब की गलती के कारण हुआ।

२. औरंगजेब ने तख्त के लिए अपने तीन भाइयों दारा शिकोह, शुजा और मुराद को मारा था। अपने बुढ्ढे बाप को आगरा के किले में एक अँधेरी कोठरी में कैद कर दिया था। उस कोठरी में एक छोटी सी खिड़की से शाहजहाँ ताजमहल को निहारकर अपने दिल की कसक पूरी करता था। शाहजहाँ को पूरे दिन में एक घड़ा पानी भर मिलता था। जेठ की दोपहरी में कंपकपाते बूढ़े हाथों से पानी लेते समय वह मटका टूट गया। शाहजहाँ ने दूसरे मटके की मांग करी तो हवलदार ने यह कहकर मना कर दिया की बादशाह का हुकुम नहीं हैं। तब पूर्व शंहशाह के मुख से निकला। हे अत्याचारी तुझसे भले तो हिन्दू हैं जो मरने के पश्चात भी अपने पूर्वजों को श्राद्ध के नाम पर भोजन करवाते है। तू तो ऐसा नराधम है जो अपने जिन्दा बाप को भूखा-प्यासा मार रहा हैं।

३. औरंगजेब ने अपने तीनों भाइयों को निर्दयता से मारा था। उसे उनकी स्मृतियाँ तंग करती रही। वह इतना शक्की हो गया कि अपने ही पुत्रों को कभी अपने समीप नहीं आने दिया। उन्हें सदा डांटता डपटता रहता था। क्यूंकि उसे लगता था कि वे गद्दी के लिए उसे ठीक वैसे न मार दे जैसा उसने अपने सगों के साथ किया था। उसकी इस नीति के चलते उसके बेटे उसके जीवनकाल में ही बुड्ढे हो गए मगर राजनीति का एक पाठ भी न सीख सके। उसके मरने के बाद वे सभी राजकाज में अक्षम सिद्ध हुए। मुगलिया सल्तनत का दिवाला निकल गया। उसी के चिरागों ने उसी के महल में आग लगा दी।

४. औरंगजेब ने अपने पूर्वजों की राजपूतों से दोस्ती की नीति को तोड़ दिया। वह सदा राजपूत सरदारों को काफिर और इस्लाम का दुश्मन समझता था। इस नीति के चलते राजपूत सरदार उसकी ओर से किसी भी युद्ध में दिलोजान से नहीं लड़ते थे। मुसलमान सरदारों को इस्लाम की दुहाई देकर औरंगजेब भेजता। मगर शराब और शबाब में गले तक डूबे हुए सरदार

(शेष पृष्ठ २२ पर)

जंगलराज बनाम मंडलराज पार्ट-२

श्याम स्नेही

मौसम चुनाव का है। बिहार विधान सभा चुनाव के सन्दर्भ में उपरोक्त जुमला सुर्खियों में आया है जो बुद्धिजीवी वर्ग को सोचने के लिए मजबूर कर रहा है।

मंडलराज और जंगलराज पार्ट-२ तो भविष्य के गर्त में है। पार्ट-१ के ही दंश से जूझता बिहार अब तक उबर नहीं पाया है, जिसके परिणाम स्वरूप भूख, गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा और अराजकता स्पष्ट दीख रहा है, जब महानगरों में बिहारी मजदूरों की बढती संख्या पर दृष्टि जाती है या जब त्योहारों के मौसम में अपने घरों को लौटते लोगों का स्थानीय रेलवे स्टेशनों पर जनसैलाब दिखता है तो बिहार की वास्तविक तस्वीर उभरकर नजरों के सामने नाचने लगती है। यह उमड़ता जनसैलाब विकास और कानून-व्यवस्था के ढपोरशंखी दावे की हवा निकाल जाता है। ऐसे जन सैलाब विकास के दावे करनेवालों का मुँह चिढ़ा जाते हैं।

मंडल राज के जातिवादी जहर भरे मंजर की कल्पना मात्र से ही रोम-रोम सिहर उठता है। मंजर कुछ ऐसा बना था, जहाँ अगडी जाति की बाहुल्यता होती तो पिछड़े पिट जाते और जहाँ पिछड़ों की बाहुल्यता होती तो अगड़े पिट जाते। अगडी-पिछड़ी जातियों में खासकर युवावर्ग मानसिक विक्षिप्तता की चरम सीमाएं लांघ रहे थे। स्थिति तो यहाँ तक पहुंच चुकी थी की प्रशासनिक अमला भी जातिग्रस्त मानसिकता से फैसले लेने लगा गया था। यह एक ऐसा जहर था, जिसका असर आज तक बिहार ही नहीं देश की रग-रग में समाया हुआ है और यही कारण है कि उसके बाद के चुनाव भी जाति के आधार पर ही लड़े जाते रहे हैं।

इस तथ्य से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछडी जातियों का शोषण किया गया था। निश्चय ही वे समाज के सम्भ्रान्तों द्वारा शोषित और उपेक्षित रहे। उन्हें समाज की मुख्यधारा में लाने का कार्य श्रेयस्कर ही कहा जायेगा। मगर आरक्षण का जो रूप वर्तमान में दीख रहा है, क्या वह न्याय संगत है ? जाति के नाम पर चंद समृद्ध लोग ही लाभ क्यों पा रहे हैं ? यह भी एक विचारणीय यक्ष प्रश्न खड़ा कर जाता है और जो नहीं पा रहे, वे भी अब आंदोलनरत हो रहे हैं।

संकुचित और स्वार्थलोलुप सत्ता के भिखारियों ने तत्कालीन आपातकाल के विरुद्ध जे.पी. के सुनहरे सपनों को बलि चढानेवाले लोग, अपने एक राजनैतिक प्रतिद्वन्दियों को नीचा दिखाने के निमित्त मंडल कमीशन का आन्दोलन आरक्षण के नाम पर घिनौना खेल खेलने से बाज नहीं आये और समाज को कलंकित ही नहीं किया बल्कि स्पष्टतः विभाजित भी कर दिया।

अब तो हर कुएं में भांग पड़ी है। इससे यू. पी. बिहार ही नहीं, बल्कि पूरा का पूरा देश जातिवाद बनाम अगडे-पिछड़े के जहर से जूझ रहा है। सभी जाति के नाम पर जाति का मुखौटा लगाकर सत्ता की मलाई काट रहे हैं। नहीं तो क्या कारण है कि आरक्षण का लाभ चंद लोगों में ही सिमटकर रह गया है और दलितों-पिछड़ों की स्थिति बद से बदत्तर हो रही है। बेरोजगारी, गरीबी और बदहाली बढ़ती चली जा रही है। जाति के नाम पर लूट की छूट के नाम पर क्या पाया लोगों ने ?

अराजकता की स्थिति से जूझता बिहार आज उद्योगविहीन हो चुका है। छोटे-मोटे उद्योग भी वही चल पा रहे हैं, जो सत्ता तन्त्र और अराजक तत्वों से तालमेल कहें या उन्हें लाभ में हिस्सेदार बना रखे हैं। इन परिस्थितियों में यू.पी.-बिहार में उद्योग की कल्पना भी बेईमानी प्रतीत होती है। ऐसे में राजनेता उद्योगपतियों को लुभाने के नाम पर विदेश यात्राओं और मोटे-मोटे यात्रा-भत्तों का भरपूर आनन्द तो उठा ही रहे हैं। साथ में सरकारी कोष, चाहे राज्य का हो या केंद्र का बन्दरबांट हो रहा है।

और उसी अराजक स्थिति से कराहते बिहार में १९९०-२००५ तक १५ वर्षों के लालू-राबड़ी राज को जंगलराज की संज्ञा से नवाजा गया जहां कानून व्यवस्था ध्वस्त ही नहीं हुई बल्कि एक जाति विशेष के चंगुल में फंसकर दम तोड़ चुकी थी। रंगदारी और अपहरण का बाजार गर्म था जिसके हिस्सेदार राजनेता भी हुआ करते। इस आशंका को निर्मूल तो कहा ही नहीं जा सकता।

२००५ में सत्ता परिवर्तन के साथ थोड़ी राहत लोगों ने जरुर महसूस की। मगर 'आसमान से गिरा तो खजूर पर अटका' की स्थिति में आ गया बिहार। यह भी एक प्रमुख कारण रहा कि आज तक लुभावने वादों के बावजूद एक भी बड़े उद्योग बिहार में नहीं लगा। उपरोक्त तथ्यों को देखते हुए यह कहना भी अतिशयोक्ति नहीं होगी कि मंडल राज पहले और जंगलराज बाद में समानांतर चलते रहे।

अब बात, मंडलराज और जंगलराज पार्ट-२ की खासकर यू. पी., बिहार के सन्दर्भ में। ऐसी मान्यता रही है कि गुजरा कल ही अच्छा था तो आनेवाला कल और भी भयानक और अराजक होगा, यदि पार्ट-२ के लोगों का सत्ता पर नियन्त्रण होगा तो। जिसका स्पष्ट संकेत राजनैतिक मंचों से एक जाति प्रमुख यदुवंशी नेता उन्माद में दे भी चुके हैं। जबकि उन्हें यदुवंशी का ज्ञान ही नहीं। वे ही नहीं कई लोग गोपाल और गौपाल का शाब्दिक अंतर ही नहीं समझ रहे। ऐसी बातें खुलेआम मंच से कहना तो मात्र जातिगत उन्माद को बढ़ावा देने के अलावा और कुछ भी नहीं। पता नहीं, ये बिहार के लोगों और चुनाव आयोग को धमकी थी या चेतावनी। दोनों परिस्थितियों में आयोग और आम जनता को चेतने की आवश्यकता है। यह भी निश्चित है कि चुनाव के बाद राज्य सत्ता की थोड़ी सी भी ढिलाई बिहार की जनता को अराजकता की धधकती ज्वाला में धकेल देगी।

अब देखना यह होगा की आम जनता जाति, भाषा, सम्प्रदाय के आधार पर मतदान करके मंडलराज और जंगलराज पार्ट-२ देखना चाहती है या विकास के मार्ग पर चलते हुए सुशासन का रसास्वादन करना चाहेगी ? आखिर निर्णय तो आमजन को ही करना है।

अंततः निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि आम जनता को बड़ी समझदारी और विवेक के साथ चुनाव में अपने मताधिकार का प्रयोग करना होगा, स्वयं के लिए भी और अपनी आनेवाली पीढी के लिए भी। ■

मौन

नीरजा मेहता

जीवन में मौन का बहुत अधिक महत्व है। स्वयं में परिवर्तन लाने का सर्वाधिक सरल उपाय मौन रहना है क्योंकि यह मानव की आंतरिक ऊर्जा की वृद्धि करता है। मनुष्य का मन सदैव बात करता रहता है और मौन हमको स्वयं से साक्षात्कार कराने का सर्वोत्तम साधन है।

किसी भी कार्य में एकाग्रता के लिए मौन का बहुत महत्व है क्योंकि यदि किसी कार्य को करते समय हम चुप रहेंगे तो हम अधिक सोच पायेंगे। हमारे मस्तिष्क के सर्वांगीण विकास के लिए मौन रहकर उसको उत्तम विचारों से घेर लेना चाहिए जिसके फलस्वरूप वो और अधिक तीव्रता से कार्य करेगा।

मन की पूर्ण शान्ति मौन पर निर्भर है। हमारे ऋषियों मुनियों ने मौन रहकर साधना द्वारा ईश्वरीय शक्ति प्राप्त की ईश्वर से मिलन का सरल उपाय है मौन। मनुष्य स्वयं को आत्मा के साथ आत्मसात कर खुद को जानने में समर्थ हो सकता है।

मौन मन में उठती क्रोधाग्नि को शांत करता है, झगड़े से बचाता है और संताप तथा क्लेश से दूर रखता है। एकांत अवस्था मौन रहने में सहायक सिद्ध होती है। प्रेमपूर्ण शब्दों का तथा धड़कनों को जोड़ने का आवाह है मौन। प्रेमियों द्वारा आँखों आँखों में बात करने का तरीका सदियों से चला आ रहा है।

कविताओं, विचारों को वृद्धि देता हुआ ह्रदय के शब्दों को लेखनी के माध्यम से कागज पर उतारने का साधन मौन है। यद्यपि मौखिक रूप से विचारों का आदान प्रदान हमको सोचने के लिए विषय देता है किन्तु मानव मन में उमड़ते घुमड़ते भावों को सार्थक रूप देता है मौन। ■

हास्य-व्यंग्य

बिहार का विकास

श्याम स्नेही

रविवार यानी छुट्टी का दिन. खुशमिजाज मौसम में सभी मित्र इंडिया गेट के हरी-हरी दूब पर बैठ शाम के सूरज के ढलने का आनन्द ले रहे थे. चर्चा चल गयी चुनाव की वो भी बिहार की. हमारे एक मद्रासी मित्र ने मजाकिए बिहारी मित्र विकास को आखिर छेड़ ही दिया.

शुरू-शुरू में विकास तो कुछ सहमा-सहमा सा रहता था. पहले हम सभी उसे बिहारी कहकर चिढाया करते. मगर, अब तो विकास बिलकुल खुल चुका था और हर-दिल-अजीज बन चुका था. हम सभी लोग उसके हाजिर जबाबी के कायल थे. उसकी एक खासियत थी कि कभी भी बिहार की प्रतिष्ठा पर आंच नहीं आने देता. जबाब भी ऐसा कि सबकी बोलती बंद करा दे. इसलिए भी लोग अक्सर उसे छेड़ा करते. हंसी मजाक में माहिर इतना कि रोते को भी हंसा दे.

विकास ने भी मजाक में ही सही, लेकिन चेतावनी के मुद्रा में हिदायत देता हुआ बोला- 'आज के बाद बिहार के विकास से विकास की बात नहीं पूछना यार!' और भाषण की मुद्रा में बोलने लगा- 'यूँ तो पूरे विश्व में और भारत देश के पूर्वान्चल में स्थित राज्य बिहार का बड़ा ही विशिष्ट, वरिष्ठ और गरिष्ठ स्थान रहा है. विश्व का शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र है जहाँ बिहारी का वास न हो. प्राचीनता में भी राम-सीता को यहीं की भूमि ही रास आई. ज्ञान से अज्ञान तक, आरती से अजान तक, साधना से निर्वाण तक, भूत से वर्तमान तक हर हमेशा विश्व को आईना दिखाता ही रहा बिहार. आदिगुरू शंकराचार्य को भी एक बार घुटने टेकवाने वाला, भगवान बुद्ध को भी ज्ञान करानेवाला, सम्राट अशोक को भी वैरागी बनाने वाला रहा हमारा बिहार. सब में बिहार आगे रहा है और भविष्य में भी रहेगा.

ये तो हुई पुरानी बात. अब उपलब्धियां गिनाते हैं मंडल पार्ट-१ की. इस अवधि में इतना विकास हुआ कि विश्व का कोई भी देश उतना नहीं कर सका होगा, यहाँ तक कि अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, रूस, जर्मनी चीन भी नहीं. मैं तो यहाँ तक कहता हूँ कि विश्व के सभी देशों के विकास को मिलाकर जो पैमाना बनता हो उससे भी कहीं ज्यादे विकास किया है बिहार ने. जिसका साक्षात और जीता-जागता प्रमाण तो मैं स्वयं हूँ, जो बिहारी विकास के कारण यहाँ देश की राजधानी दिल्ली में आप सबों के बीच खूंटे की तरह खड़ा हूँ. है कोई विश्व का वैज्ञानिक जो मेरी तरह रूप-रंग और काठी का आदमी बना सके ? नहीं न ! तो फिर मान गये न बिहार के विकास को.

आगे सुनो बिहारी विकास के मुख से बिहार के विकास की गाथा. बेशक, दुनियाँ मंगल ग्रह पर आदमी भेज ले, दुनियाँ भर का ज्ञान सहेज ले, बेशक, चाँद पर भी दौड़ा ले आदमी. मगर, जानवर का चारा आदमी को खिलाकर मुख्य मंत्री के कुर्सी तक तो दौड़ा कर दिखा दे. तब मानूंगा विकास.

दुनियाँ में जंगल तो बहुत सारे देशों में होंगे मगर, कोई देश आज तक जंगलराज के सर्वश्रेष्ठ सम्मान से सम्मानित हुआ क्या ? बेशक लोग अपमान ही समझें, उसमें भी मान-सम्मान के साथ तमगा तो बिहार ने ही अर्जित की है . लोगों की सोच ही यही रही है कि "जिस भोज में मुझे निमन्त्रण नहीं उसमें बेशक पारा (भैंस) ही क्यों न मरे. यानी नहीं मिले तो अंगूर खट्टे हैं."

और कितना विकास खोजते हो प्यारे भाईयो ! और जगह तो विद्यार्थी पढकर परीक्षा पास करते होंगे. हमारे बिहार में तो बिना पढ़े ही मन माफिक डिग्रीये ले लेते हैं. नहीं तो ठांय-ठांय की डिग्री तो रखले ही है.'

उसका भाषण और भी चलता, पर सबको भूख लग आयी थी। अतः 'जय बिहार-जय विकास' के नारे और धन्यवाद ज्ञापन के साथ सभा विसर्जित हुई. ■

(पृष्ठ ४ का शेष)

बुखार

जाता है। इससे बुखार में बहुत लाभ होता है और रोगी को नींद भी अच्छी आती है।

यदि शरीर का तापमान १०० डिग्री से अधिक हो, तो रोगी को अनिवार्य रूप से पूर्ण उपवास कराना चाहिए और केवल उबाला हुआ पानी ठंडा करके पीने के लिए देना चाहिए। इसके साथ ही प्रत्येक दिन शरीर को गर्म पानी से पोंछना और पेडू पर ठंडे पानी की पट्टी दिन में दो या तीन बार १५-२० मिनट तक रखना आवश्यक है। यदि तापमान १०२ डिग्री या उससे अधिक हो, तो सिर को भी गर्मी से बचाना आवश्यक है, ताकि बुखार का कुप्रभाव दिमाग पर न पड़े। इसके लिए पेडू के साथ-साथ माथे पर भी ठंडे पानी की पट्टी अवश्य रखनी चाहिए। ऐसी पट्टी तब तक रखनी चाहिए जब तक तापमान कम न हो जाये। कई बार आधा-आधा घंटे तक पट्टी रखनी पड़ती है।

इस प्रकार इलाज करने से कैसा भी बुखार हो, चार-पाँच दिन या अधिक से अधिक एक सप्ताह में अवश्य चला जाता है और रोगी को अधिक कमजोरी भी अनुभव नहीं होती। इसके विपरीत रोगी बुखार उतर जाने के बाद काफी स्वस्थ अनुभव करता है। बुखार के इलाज में मूल मंत्र यह है कि यह धीरे-धीरे आता है और धीरे-धीरे ही जाना चाहिए। एकदम से बुखार चढ़ना और एकदम से उतरना दोनों ही स्वास्थ्य के लिए खतरनाक हैं। ■

समीक्षा

छोटी-छोटी रचनाओं का प्रभावशाली संग्रह

काशी में लिख रहे लोगों में तेजी से पहचान बनाने वाली और संप्रति राजकीय महिला महाविद्यालय, डीरेका, वाराणसी में संस्कृत विभागाध्यक्ष के पद पर कार्यरत रचना शर्मा ने हिन्दी कविता में भी अपनी आत्मीय उपस्थिति दर्ज की है। स्त्री-अस्मिता को लेकर उनकी कवितायें बेबाकी से अपनी बात कहती हैं। 'नींद के हिस्से में कुछ रात भी आने दो' शीर्षक अपने नये संग्रह में वे छोटी-छोटी कविताओं, शेरों और मुक्त छंद में स्त्री की अनुभूति और संवेदना के नए इंदराज सामने लाती हैं जिन्हें सोशल मीडिया पर लोग बेहद पसंद करते रहे हैं।

काशी में जन्मी और काशी खंड पर काहिविवि से संस्कृत में पीएचडी की उपाधि प्राप्त रचना शर्मा ने वाराणसी के प्राचीन मंदिरों के नष्ट होते जाने की पटकथा भी लिखी है तथा वाराणसी की अक्षुण्ण सांस्कृतिक परम्परा में मौजूद विरल लोककथाओं का संग्रह किया है। इसीलिए उनकी कविताओं में लोक में प्रचलित शब्दों की आवाजाही इधर प्रबल हुई है। शब्दों की महिमा पहचानते हुए वे कम से कम शब्दों से अपनी अनुभूतियों की क्यारी सजाती हैं। वे बातों ही बातों में आज की युगीन सचाई का बयान करती हैं- 'आज हर ईमानदार चेहरा उदास है। और हर बेईमान की बांछें खिली हुई।'

इंसानी रिश्तों का फरेब उस दुनिया को हर वक्त बेनकाब करता रहता है, जिसमें हम कई कई चेहरों और नाटकीय अन्विति के साथ मुखातिब होते हैं। रचना शर्मा मनुष्य के इस चरित्र को महज दो पंक्तियों में उद्घाटित करती हैं- 'हिफाजत में था वो मेरी, महफूज रखा था मैंने। वो कोई फूल नहीं था, एक जख्म था मेरा।' कविता न किसी परिभाषा में बंध सकती है न किसी नियमन में। वह हमेशा अपनी शर्तों और कौशल से कवि के करघे पर बुनी जा रही होती है। रचना के पास कविताई का वह सलीका है कि जिससे वे कविता के रूठे हुए पाठकों को ठिठककर पढ़ने को विवश कर सकें।

-- डॉ. ओम निश्चल

संग्रह - नींद के हिस्से में कुछ रात भी आने दो
रचनाकार- डॉ. रचना शर्मा
प्रकाशक- हिन्द युग्म, नई दिल्ली
पृष्ठ संख्या-१२०, मूल्य-रु. २००

बाल कहानी

मित्रता में स्वार्थ कहाँ?

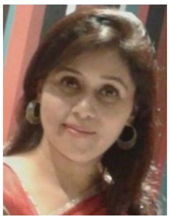

रोचिका शर्मा

रिंकी सात वर्ष की बहुत ही प्यारी बच्ची थी। लेकिन थी बहुत चंचल व शैतान। स्वाभाव से थोड़ी स्वार्थी भी थी। हर रविवार को अपने पिताजी के साथ बाजार जाती और कोई न कोई नया खिलौना खरीद लाती। फिर वह जब बगीचे में खेलने जाती नया खिलौना ले जाती एवं किसी भी मित्र को छूने भी न देती। सभी मित्र उसके इस व्यवहार से बहुत दुखी होते। इस बार जब वह अपने पिताजी के साथ बाजार गयी तो एक सतरंगी बॉल खरीद लाई और अगले ही दिन एक टिफिन बॉक्स में चिप्स और हाथ में बॉल ले कर सही समय पर बगीचे में पहुँच गयी।

सभी मित्र उसकी सतरंगी बॉल देख कर बहुत खुश हो गये व उस बॉल से खेलना चाहते थे। लेकिन रिंकी आज अपना बॉल लेकर बगीचे में उनसे दूर बेन्च पर जाकर बैठ गयी। सभी मित्र उस से बार-बार बॉल माँगते किंतु वह नाक चढ़ा व कंधे उचकाकर उन्हें बॉल छूने को मना कर देती। सभी मित्रहार कर अलग जाकर खेलने लग गये। अब वह अपना टिफिन बॉक्स खोल कर उसमें से चिप्स खाने लगी। वह बार-बार चटखारे लेती और उसके मित्रों के मुँह में चिप्स के लिए पानी आ जाता। वे उससे कहने लगे- 'ए रिंकी हमको भी एक-एक चिप्स दे ना' पर रिंकी तो उनकी बात को अनसुना कर चिप्स खाने में व्यस्त रही। और उसने एक भी चिप्स अपने मित्रों को चखने को न दिया। सभी मित्रों को बहुत बुरा लगा।

सभी मित्रों ने उसे आगाह करते हुए कहा इस बार जब हम भी कुछ खाने को लाएँगे तो उसे न देंगे और अपने खिलौने भी उसे न देंगे और न ही हम तुम्हारे साथ में खेलेंगे। रिंकी ने उन सबकी परवाह न करते हुए कहा कोई बात नहीं 'आई डोंट केयर'। तभी उसकी एक सहेली पिंकी बोली तुम तो बैठ कर चिप्स खा रही हो तब तक तो हमें तुम्हारी बॉल से खेलने दो। रिंकी ने फिर से कंधे उचकाकर उसे बॉल छूने के लिए भी मना कर दिया। सभी मित्र नाराज होकर वहाँ से चले गये।

अब उन्होंने रिंकी को सबक सिखाने की ठान ली थी। उन्होंने एक योजना बनाई। सभी मित्र बगीचे से गायब हो गये और रिंकी को वहाँ अकेला छोड़ दिया। वे सब पास के दूसरे बगीचे में खेलने लगे। थोड़ी देर तो रिंकी अपने चिप्स खाने में व्यस्त रही किंतु अकेले चिप्स खाते-खाते वह बोर हो गयी। उसने अपना टिफिन बॉक्स बंद कर बॉल से खेलना शुरू किया। वह बॉल को इधर-उधर फेंकती लकिन सामने बॉल को केच करने वाला कोई न था। खुद अकेले ही बॉल के पीछे भागती और लेकर आती। इस बार उसने बॉल को जोर से किक मारी और बॉल पास वाली झाड़ियों में जा गिरी। वह बॉल को ढूँढने लगी, तभी झाड़ियों में से एक डरावना गिरगिट बाहर निकला। रिंकी जोर से चीखी और वहाँ से भागी।

उसे लगा वह गिरगिट उसका पीछा कर रहा है ,वह और तेज भागी और गिर गयी। वह उठकर फिर से भागी उसके घुटने में चोट लग गयी और खून बहने लगा। भागते-भागते वह अपने सभी मित्रों को आवाज लगा रही थी राजू, मिन्ना, पिंकी, गोपी तुम सब कहाँ हो? मेरी मदद करो मेरी मदद करो। लेकिन किसी ने उसकी आवाज न सुनी। वह भागकर फिर से बेंच पर जाकर बैठ गयी और जोर-जोर से रोने लगी। उसके रोने की आवाज सुन कर उसके सभी मित्र दौड़कर वहाँ आ गये और पूछा क्या हुआ? पिंकी ने पानी से उसका बहता हुआ खून साफ किया और गोपी पड़ोस से उसकी माँ को बुला लाया।

रिंकी ने सारी बात अपने मित्रों को बताई और उनसे माफी माँगी। वह बोली- 'आई एम सॉरी, अब मैं मेरे खिलौने व खाने-पीने की चीजें सबसे शेयर करूँगी और तुम सबसे मिल कर खेलूँगी। मुझे इस बार माफ कर दो। मैं तुम सबके साथ खेलना चाहती हूँ। मैं समझ गयी हूँ मित्रों के बिना कुछ मजा नहीं है न खाने का न खेलने का। मित्र तो सबसे अच्छे साथी होते हैं।'

सभी मित्र उसे माफ करके झाड़ियों में उसकी बॉल ढूँढने लगे और बॉल मिल गयी। एक मित्र ने दूसरे को केच दिया, दूसरे ने तीसरे को। बगीचे में फिर से हँसी-खुशी का माहौल छा गया। रिंकी अब दोस्ती का असली मतलब समझ गयी थी। ■

शिशु गीत

१. अखबार

सुबह-सुबह आता अखबार, सबके मन भाता अखबार
दुनियाभर की खबर बताता, दिल भी बहलाता अखबार

२. डोरबेल

जैसे ही कोई आए, इसका स्विच दबाता है
टिंग-टिंग कर ये हमको, दरवाजे तक लाता है

३. परदा

दरवाजे सा इसका काम, लटका रहता सुबहो-शाम
रंग-बिरंगा या सादा, घर-घर में दिखता ये आम

४. काँच

खिड़की-दरवाजे में फिट, अलग-अलग रंगों में हिट
लिखो चॉक से इसपर जो, पानी से झट जाता मिट

५. कुशन

सोफे पर रखते इसको
उछल-कूद हम करते हैं
बहुत मुलायम होता ये
नहीं चोट से डरते हैं

-- कुमार गौरव अजीतेन्दु

बाल गीत

आसमान में सूरज-चंदा और सितारे हैं
देखो-देखो दोस्त हमारे कितने सारे हैं
एक बार भी कभी किसी ने, हमें नहीं है टाला
जो जितना दे सकता, उसने, उतना दिया उजाला
जग को रौशन करते हैं ये कितने प्यारे हैं
आसमान में सूरज-चंदा और सितारे हैं
हम तो इन्हें भुला दें पर ये, हमको नहीं भुलाते
हमसे हाय-हेलो कहने को, ये रोजाना आते
इसीलिए ये सबसे अच्छे दोस्त हमारे हैं
आसमान में सूरज-चंदा और सितारे हैं
ऐसे दोस्त बनें हम सब भी,
ऐसे दोस्त बनायें
और दोस्ती का रिश्ता भी,
यों ही सदा निभायें
दोस्त,दोस्ती के रिश्ते ही होते न्यारे हैं
आसमान में सूरज-चंदा और सितारे हैं

-- डॉ. कमलेश द्विवेदी

बाल कविता

चाँद ने चाँदनी बिखेरी
मुन्ना मुन्नी को नानी याद आई
मुन्नी बोली- मैं नानी की कहानी सुनूँगी
मुन्ना बोला- मैं तुमको नहीं सुनने दूँगा
फिर दोनों में हुई लड़ाई, इतने में नानी आ गई
दोनों का झगड़ा सुलझा गई
बोली- मैं दोनों को सुन्दर कहानी सुनाऊँगी
अब तुम दोनों सुनो
मेरी सीख भरी कहानी
आपस में लड़ते न कभी
नहीं कभी करते बैर
एक दूसरे से मिलकर
करते रहना मीठी बात

-- निवेदिता चतुर्वेदी

(पृष्ठ २२ का शेष) **बच्चे आचरण से...**

आगंतुकों के लिए पानी या जलपान स्वयं ले जाने की ज़िद करना उनका अभिवादन ही तो है। आप मेहमानों के लिए पानी या नाश्ता वगैरा ले जाते हैं तो बच्चा भी ऐसा ही करने की कोशिश करता है। तो आप अपने बच्चों से मेहमानों का जैसा स्वागत या अभिवादन करवाना चाहते हैं वैसा ही आप स्वयं कीजिए। यदि आप में शिष्टाचार है तो बच्चा भी वही शिष्टाचार अपना लेगा। इसलिए बच्चों को अच्छे संस्कार देने के लिए उनके सामने अच्छे व्यवहार का प्रदर्शन करना चाहिए। दुनिया में ऐसी कोई किताब या पाठ्यक्रम नहीं है जो बच्चों को शिष्ट, व्यवहारकुशल व नैतिक बना सके। दादा-दादी, माता-पिता व अन्य नज़दीकी रिश्तेदारों से ही बच्चा शिष्टाचार व नैतिकता का पाठ सीखता है। ■

बच्चे हमारे आचरण से सीखते हैं

आशा गुप्ता

एक बार अपनी एक मित्र के घर जाने का मौक़ा मिला। मेज़बान मित्र ने अपनी नन्ही सी पोती से कहा कि आंटी को नमस्ते करो। सहमी हुई सी बच्ची ने मुँह पफेर लिया। उसकी दादी ने बच्ची का मुँह मेरी ओर घुमाते हुए बच्ची से पिफर कहा कि आंटी को नमस्ते करो। बच्ची ने नमस्ते नहीं करनी थी सो नहीं की। दादी ने बच्ची को डांटते हुए कहा, 'गंदी बच्ची नमस्ते करना भी नहीं जानती, भाग यहाँ से।' बच्ची रुआंसी सी होकर वहाँ से चली गई। बच्ची ने घर आए हुए मेहमान का अभिवादन क्यों नहीं किया इससे पहले ये सवाल उठता है कि क्या एक नन्ही बच्ची का घर आए हर एक मेहमान या आगंतुक का अभिवादन करना ज़रूरी है और वो भी जिस रूप में हम चाहें उसी तरह से? क्या बच्चों को इसी तरह से संस्कारित किया जाता है?

हम प्रायः बच्चों को इसी प्रकार से संस्कारित करने का प्रयास करते हैं। उन्हें कहते हैं कि ऐसा करो या ऐसा मत करो। सारे दिन उपदेश देते रहते हैं। बच्चा इन उपदेशों से दुखी सा रहता है। कई व्यक्ति खुद तो मेहमान का यथोचित स्वागत अथवा अभिवादन नहीं करते लेकिन अपने बच्चों से चाहते हैं कि वो हर आने-जाने वाले का स्वागत व अभिवादन ठीक से करें। कुछ व्यक्ति न तो स्वयं मेहमानों की ठीक से आवभगत करते हैं और न अपने बच्चों से ही ऐसा चाहते हैं। दोनों ही स्थितियाँ अच्छी नहीं कही जा सकतीं। जहाँ तक बहुत छोटे बच्चों का संबंध है उनका बड़ों की ही तरह स्वागत या अभिवादन करना बिलकुल ज़रूरी नहीं। इसका ये अर्थ नहीं है कि वो आगंतुकों से मिलना-जुलना या उनका प्यार पाना नहीं पाना चाहते। वो भी सबसे मिलना-जुलना व उनका प्यार पाना चाहते हैं लेकिन अपने तरीक़े से। हो सकता है बच्चा संकोच कर रहा हो अतः नए लोगों अथवा मेहमानों से घुलने-मिलने के लिए उसे कुछ समय देना चाहिए। संकोच के समय बच्चे से बलपूर्वक कुछ करवाना उसे ज़िद्दी बनाना है।

बच्चों की अपनी दुनिया होती है। वो अपने ढंग से शुरूआत करना चाहते हैं। एक बार एक परिचित के घर गए। उनका बच्चा कभी बिस्कुट लाकर सामने रख देता तो कभी दूसरी खाने-पीने की चीज़ें और अपनी तोतली ज़बान में कहता कि 'आप तो तुछ था ही नहीं रए।' क्या यह किसी अभिवादन से कम था? बच्चों का मेहमानों या

(शेष पृष्ठ २१ पर)

गीत

जल ही जीवन है

बचपन से हमें याद दिलाती थी दादी नानी।
जितनी आव यकता हो, उतना ही खर्च करो पानी।।
बड़े बूढ़ों की बात पर हमने कभी नहीं मानी।
पीने के पानी के लिए भी आज हो रही है परे ाानी।।
तालाबों कुओं, नदियों में कम हो गया है पानी।
इंसान की आंखों में भी अब नजर नही आता पानी।।
पराए होते जा रहे अपनों की आखों में नहीं पानी।
अपने बने हुए परायों की आखों में दिखता है पानी।।
नदियों में हम हैं डाल रहे हमारा कूड़ा कचरा।
जल प्रदूशण गंभीर चुनौती है वर्तमान का खतरा।।
पर्यावरण प्रबंधन आई.एस.ओ १४००१ करिए प्राप्त।
पर्यावरण संरक्षण के लिए उपाय करिए पर्याप्त।।
ईंधन ऊर्जा के साथ पानी की करिए बचत।
कम करनी होगी प्रति व्यक्ति पानी की खपत।।
प्रति व्यक्ति सौ लिटर प्रतिदिन पानी खर्च होता।
पांच लिटर पानी बचाकर भी प्यासों पर अहसान होगा।।
बाथरूम किचन के वेस्ट पानी का करिए सदुपयोग।
गार्डन सफाई में उपयोग कर कम कीजिए दुरुपयोग।।
खुले नल, रिसते, बहते, लीक होते पानी पर रहे ध्यान।
पानी की बचत से होगा तरसते लोगों पर एहसान।।
सागर के पानी के निर्लवणीकरण के लिए लगाऐं संयंत्र।
समुद्र के पानी को पीने योग्य
बनाने के लिए सीखें मंत्र।।
जल चेतना की क्रांति लाऐं
यही करें सभी संकल्प।
जल है तो कल है पानी
का नहीं है कोई विकल्प।।

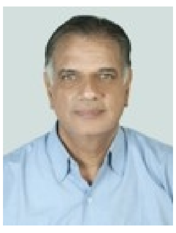

-- दिलीप भाटिया

गीत

बेटी की शिक्षा

कलम उठाई है जो तुमने बेटी का अधिकार लिखो
शिक्षित हो बेटी हर घर में वीणा का अवतार लिखो
लिख दो सारे अधिकार अभी बेटी का दामन भरना है
तोड़ पुरानी जंजीरो को आज नया कुछ करना है
वर्णों में हुंकार भरी हो आज वही अंगार लिखो
शिक्षित हो बेटी हर घर में वीणा का अवतार लिखो।
बेटी को घर घर मान मिले लक्ष्मी आज समझना है
बेटा बेटी इक जैसे है ध्यान सदा अब रखना है
हर मोड़ मिले आजादी का खुशियों का अम्बार लिखो
शिक्षित हो बेटी हर घर में वीणा का अवतार लिखो।
हर हाथो में कलम किताबें हर बच्चे को अब पढ़ना है
पढ़ता भारत बढ़ते हम हो इस सपने को गढ़ना है
विद्या ही दौलत है उसको तुम अपना आधार लिखो
शिक्षित हो बेटी हर घर में वीणा का अवतार लिखो।
पढ़ लिख बेटी देश बढ़ाये यह राज सभी को कहना है
गाँव शहर कस्बों तक फैले घर घर वीणा रखना है
हो निर्भय हर बेटी अब विश्वास यहाँ हथियार लिखो
शिक्षित हो बेटी हर घर में वीणा का अवतार लिखो।
दान दहेज मिटा देना अब शिक्षा ही उसका गहना है
हर सपने को साकार करे
अब ऐसी बिटिया रचना है
बोझ नहीं समझो अब बेटी
नमन हजारों बार लिखो
शिक्षित हो बेटी हर घर में
वीणा का अवतार लिखो।

-- पुष्प लता शर्मा

(पृष्ठ १८ का शेष)

औरंगजेब रोड के नाम परिवर्तन पर रुदाली गान

अपने तम्बुओं में पड़े राजकोष के पैसे बर्बाद करते रहे। परिणामस्वरूप मुगल साम्राज्य युद्ध पर युद्ध हारता चला गया। प्रान्त प्रान्त में अनेक सरदार उठ खड़े हुए। महाराष्ट्र में वीर शिवाजी, बुंदेलखंड में वीर छत्रसाल, पंजाब में सिख गुरु, राजपुताना में दुर्गादास राठौड़ आदि उठ खड़े हुए। इस प्रतिरोध ने मुगल साम्राज्य की ईंट से ईंट बजा दी। अपने साम्राज्य के हर कौने से उठे प्रतिरोध को औरंगजेब न संभाल सका।

५. औरंगजेब ने गैर मुसलमानों और मुसलमानों पर अनेक अत्याचार किये। उसने सुन्नी फिरकापरस्ती के चलते मुहर्रम के जुलुस पर पाबन्दी लगा दी, पारसियों के नववर्ष त्यौहार को बंद कर दिया, दरबार में संगीत पर पाबन्दी लगा दी, हिन्दुओं की तीर्थ यात्रा पर जजिया कर लगा दिया, यहाँ तक की साधु-फकीरों तक को नहीं छोड़ा। औरंगजेब के इस फरमान से आहत होकर वीर शिवाजी ने औरंगजेब को पत्र लिख कर चुनौती दी थी कि अगर हिम्मत हो तो उनसे जजिया वसूल कर दिखाये। औरंगजेब ने होली पर प्रतिबन्ध लगाकर, मंदिरों में गोहत्या करवाकर, अनेक मंदिरों को तुड़वा कर अपने आपको 'आलमगीर' बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। काशी का विश्वनाथ मंदिर, मथुरा का केशवराय मंदिर औरंगजेब के हुकुम से नष्ट कर उनके स्थान पर मस्जिद बना दी गई। मगर उसका परिणाम वही निकला जो हर अत्याचारी का निकलता है- बर्बादी।

औरंगजेब को उसके कुकर्मों, उसके बाप के शाप, उसके भाइयों की हाय, हिन्दुओं के प्रति वैमनस्य की भावना और मजहबी उन्माद ने बर्बाद कर दिया। ऐसे अत्याचारी के नाम से दिल्ली में सड़क का नाम होना बड़ी गलती थी। अब अगर यह गलती सुधर रही है तो इसे अवश्य सुधारना चाहिये। एक आदर्श, राष्ट्रवादी, वैज्ञानिक, महान व्यक्तित्व के धनी डॉ. अब्दुल कलाम के नाम पर सड़क के नामकरण में छद्म जमात को परेशानी हो रही है। एक अरब हिन्दुओं के देश में जहाँ पर हिन्दुओं की जनसंख्या २०११ के आकड़ों के अनुसार ७८% के लगभग हैं। मगर एकता के अभाव के चलते मुट्ठी भर लोग हमसे ज्यादती करने का प्रयास करते हैं। हिन्दुओं के मध्य एकता ऐसी होनी चाहिए कि इसी सड़क का नाम वीर शिवाजी के नाम पर हो तो उसका प्रतिरोध करने का भी साहस किसी में न हो। अभी अकबर, तुगलक जैसी कई रोड दिल्ली में हैं। ■

आखिर कुर्सी को मुंह खोलना ही पड़ा!

डा. मनोहर लाल भंडारी

अचानक कुर्सी ने मुझे पुकारा और बोली- 'हां जो भी पूछना हो, पांच मिनट में पूछ डालो।'

मैं भौचक रह गया, समझ में नहीं आया कि क्या करूं, क्या पूछूं, क्या नहीं पूछूं। हालांकि कई सालों से कुर्सी से बात करने की मैं भरसक कोशिशें करता रहा था, परन्तु उसने कभी मुंह नहीं खोला था। कुर्सी फिर बोली, 'मैंने अपनी बदनामी से परेशान होकर ब्रह्माजी की तपस्या की थी, उन्होंने मुझे अपनी निर्दोषिता सिद्ध करने के लिए केवल पांच मिनट दिए हैं, पांच मिनट होते ही मेरी बोलती अपने आप बन्द हो जाएगी।'

मैंने एक गहरी सांस ली और खुद को तैयार करने की कोशिश की- 'कुर्सीजी ! मेरा पहला सवाल है कि क्या आप पर बैठने वाले को आप अहंकारी, शक्की, झक्की, चमचापसन्द, ईर्ष्यालू, तानाशाह, क्रोधी, निर्मम, बदमिजाज, बदतमीज, भ्रष्ट वगैरह बना डालती हैं? लोग कहते हैं भैया, हम क्या करें, यह सब तो कुर्सी करवाती है तथा कुर्सी बड़ी कमीनी और कुत्ती चीज है। वे कहते हैं, कुर्सी के कारण सब करना ही पड़ता है।'

कुर्सी बोली, 'हां, इसी बदनामी से दुखी होकर तो मैंने सालों तक तपस्या की है। चलो मैं तुमसे ही पूछती हूं, मैं प्राणवान हूं या कि मुझ पर बैठने वाले?'

इस अप्रत्याशित प्रश्न से अचकचाकर मैं बोला, 'जी, जी, वो तो आप पर बैठने वाले ही प्राणवान हैं, आप तो निष्प्राण हैं।'

'क्या कुर्सी पर बैठकर अच्छे काम करने वाले भले मानुषों ने कभी बोला कि यह कुर्सी का असर है?'

मैंने जवाब दिया- 'नहीं, कभी नहीं। ऐसे कई लोग आज भी अपनी कुर्सियों पर विराजमान हैं और वे कुर्सी को अपनी अच्छाइयों का श्रेय कभी नहीं देते हैं।'

कुर्सीजी बोली, 'यही तो, अरे भई, सीधी सी बात है, जो व्यक्ति के भीतर है, वही बड़े पद का अधिकार पाकर बेखौफ प्रकट होने लगता है, इसमें मेरी कोई भूमिका ही नहीं है। दोनों किस्म के लोगों के बड़े पद पर बैठते ही कुछ शातिर किस्म के कामचोर लोग उन्हें अपनी ठकुरसुहाती बातों के चंगुल में फांसने की कोशिश करते हैं और अक्सर सफल हो जाते हैं। वे उसके आसपास मंडरा कर उसकी बौद्धिक क्षमता को कुंद करने लगते हैं। शुरुआती दौर में बॉस की प्रशंसा करते हैं, बॉस को प्रशंसा की लत लगा देते हैं, फिर वे बड़ी तरकीब से अपना उल्लू सीधा करने के साथ साथ उन लोगों को निपटाने लगते हैं, जिनको वे स्वयं या बॉस नापसन्द करता है। समय कम है, इसलिए थोड़े से संवादों से तुम्हें बात समझाने की कोशिश करती हूं।

(ऑफिस का दृश्य, चमचे और बॉस का संवाद)

'सर, गुप्तासाहब कह रहे थे कि शर्माजी को पब्लिक सेक्शन से हटाने का आपका निर्णय गलत था। पर सर, मेरी दृष्टि में तो आपने सही समय पर एकदम सही कदम उठाया है।'

बॉस- 'हां, तुम सच कह रहे हो, मुझे भी यह लग रहा था, इसीलिए उसके पर काटना जरूरी था, हां वह गुप्ता और क्या कह रहा था ?'

'गुप्ता कह रहा था कि इस निर्णय से विभाग का नुक्सान होगा और हम लोग इसका विरोध भी करेंगे।'

'लगता है, गुप्ता को भी जल्दी निपटाना पड़ेगा।'

'सर, मैं क्या कहूं, आपको जो ठीक लगे करिएगा। वैसे भी आपके निर्णयों में दूरदृष्टि साफ दिखाई देती है।'

'सर, मुझे तीन चार घंटे के लिए साढ़ू के यहां जाना था, उधर से गर्मागर्म पेटिस लेते आऊंगा, छोटी बिटिया को खूब पसंद है, घर देते हुए निकल जाऊंगा।'

'अरे, सिन्हाजी आपने तो मेरे मुंह की बात छीन ली, जरूर लेते आइयेगा।'

'सर, मुझे बिटिया रानी की पसन्द के बारे में पता है। एक बात आपको बतानी थी कि मैंने कुछ ग्रामीणों को आज का समय दिया था, वैसे मैंने वर्माजी को बोल दिया है कि उन्हें कल बुलवा लेना।'

'अरे ठीक है, कोई वी.आई.पी. थोड़े हैं, कल परसों कभी भी आ जाएंगे। हां भई, तुम्हारे काम से मैं बहुत खुश हूं, इस बार तुम्हारी कान्फिडेन्शियल रिपोर्ट एक्सीलेन्ट लिखने वाला हूं, फिर देखना ये गुप्ता-शर्मा तुम्हारे नीचे काम करते नजर आएंगे, साले।'

सिन्हाजी ने भाव विभोर होकर साब के पांव पकड़ लिए। सिन्हाजी को चरणों से उठाते हुए, बॉस बोले, 'सिन्हाजी, आप कल बनारस से जो साड़ी लाये थे, पत्नी को बहुत पसंद आई है। कितने की होगी ?'

'सर, कैसी बात करते हैं, घर की बात है। बनारस प्रवास की चार दिनों की छुट्टी की अर्जी तो घर पर ही भूल गया हूं, कल लेता आऊंगा।'

'अरे भई, हम हैं तो काहे की अर्जी? अर्जी वर्जी छोड़ो, जल्दी जाओ, आपके साढ़ूजी इंतजार कर रहे होंगे। कहते हैं न कि सगे में साढ़ू और भोजन में लाडू।' और अनावश्यक हंसी का ठहाका गूंज उठा, हा हा हा।

इतना कह कर कुर्सी बोली, 'राष्ट्र का दुर्भाग्य है कि चिलमची किस्म के चापलूस लोग घण्टों तक बॉस के आसपास बैठे रहते हैं परन्तु बॉस कभी नहीं पूछता कि तुम अपनी ड्यूटी क्यों नहीं करते हो ?'

और इसके साथ ही अचानक समय समाप्त हो जाने के कारण कुर्सी चिर मौन को प्राप्त हो गई।

मैंने मन ही मन ब्रह्माजी और कुर्सीजी दोनों को प्रणाम किया और कुर्सीजी की इच्छा का पालन करते हुए इस साक्षात्कार को प्रकाशन के लिए जस का तस भेज रहा हूं। ■

(पृष्ठ ५ का शेष)

लेख : वेद और धर्मसम्मत शासन प्रणाली

लोग दण्ड ही को धर्म कहते हैं। यदि राजा दण्ड को अच्छे प्रकार विचार से धारण करे तो वह सब प्रजा को आनन्दित कर देता है और जो विना विचारे चलाया जाय तो सब ओर से राजा का विनाश कर देता है। विना दण्ड के सब वर्ण अर्थात् प्रजा दूषित और सब मर्यादा छिन्न-भिन्न हो जाती है। दण्ड के यथावत् न होने से सब लोगों का राजा व राज्य व्यवस्था के विरुद्ध प्रकोप हो सकता है। दण्ड के बारे में मनुस्मृति में बहुत बातें कही गई हैं। यह भी कहा है कि दण्ड बड़ा तेजोमय है जिसे अविद्वान् व अधर्मात्मा धारण नहीं कर सकता। तब ऐसी स्थिति में वह दण्ड धर्म से रहित राजा व उसके कुटुम्ब का ही नाश कर देता है। यह भी कहा गया है कि जो राजा आप्त पुरुषों के सहाय, विद्या, सुशिक्षा से रहित, विषयों में आसक्त व मूढ़ है, वह न्याय से दण्ड को चलाने में समर्थ कभी नहीं हो सकता।

मनुस्मृति में विधान है कि सब सेना और सेनापतियों के ऊपर राज्याधिकार, दण्ड देने की व्यवस्था के सब कार्यों का आधिपत्य और सब के ऊपर वर्तमान सर्वाधीश राज्याधिकार इन चारों अधिकारों में सम्पूर्ण वेद शास्त्रों में प्रवीण पूर्ण विद्यावाले धर्मात्मा जितेन्द्रिय सुशीलजनों को स्थापित करना चाहिये अर्थात् मुख्य सेनापति, मुख्य राज्याधिकारी, मुख्य न्यायाधीश, प्रधान और राजा ये चार सब विद्याओं में पूर्ण विद्वान होने चाहिये। कम से कम दस विद्वानों अथवा बहुत न्यून हो तो तीन विद्वानों की सभा जैसी व्यवस्था करे, उस धर्म अर्थात् व्यवस्था का उल्लंघन कोई भी न करे। मनुस्मृति में आगे कहा गया है कि सभा में चारों वेद, हैतुक अर्थात कारण अकारण का ज्ञाता न्यायशास्त्र, निरुक्त, धर्मशास्त्र आदि के वेत्ता विद्वान् सभासद् हों। जिस सभा में ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद के जानने वाले तीन सभासद् होके व्यवस्था करें उस सभा की की हुई व्यवस्था का भी कोई उल्लंघन न करे। यदि एक अकेला, सब वेदों का जाननेहारा व द्विजों में उत्तम संन्यासी जिस धर्म की व्यवस्था करे, वही श्रेष्ठ धर्म है क्योंकि अज्ञानियों के सहस्रों लाखों करोड़ों मिल के जो कुछ व्यवस्था करें उस को कभी न मानना चाहिये। जो ब्रह्मचर्य, सत्यभाषण आदि व्रत, वेदविद्या वा विचार से रहित जन्ममात्र से अज्ञानी वा शूद्रवत् वर्तमान हैं उन सहस्रों मनुष्यों के मिलने से भी सभा नहीं कहलाती। जो अविद्यायुक्त मूर्ख वेदों के न जाननेवाले मनुष्य जिस धर्म को कहे, उस को कभी न मानना चाहिये क्योंकि जो मूर्खों के कहे हुए धर्म के अनुसार चलते हैं, उनके पीछे सैकड़ों प्रकार के पाप लग जाते हैं। इसलिये तीनों विद्यासभा, धर्मसभा और राज्यसभाओं में मूर्खों को कभी भरती न करें। किन्तु सदा विद्वान और धार्मिक पुरुषों का ही स्थापन करें।

हमने इस लेख में महर्षि दयानन्द द्वारा सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में प्रस्तुत वेद एवं वेदमूलक मनुस्मृति के आधार पर कुछ थोड़े से विचारों व मान्यताओं को प्रस्तुत किया है। पाठकों से निवेदन है कि वे इस पूरे अध्याय को पढ़ कर लाभान्वित हों। ■

राष्ट्र के विकास व सुशासन का मूलतत्व श्रमिक : इन्द्रेश कुमार

लखनऊ। 'श्रमिक राष्ट्र के विकास व सुशासन का मूलतत्व है। जहां श्रमिकों का सम्मान होता है और श्रम से प्यार किया जाता है वह समाज और देश विकास की नई इबारत लिखता है। वहां पर संघर्ष के बजाए संवाद का जन्म होता है और संवाद से समस्या का समाधान होता है। आज के समय में दत्तोपंत ठेंगड़ी जी का जीवन समस्या के अन्दर समाधान का मार्ग है।' ये बातें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय कार्यकारिणी के सदस्य इन्द्रेश कुमार ने कही। वह १६ सितम्बर को माधव सभागार निरालानगर में भारतीय मजदूर संघ के संस्थापक दत्तोपंत ठेंगड़ी के जीवन पर आधारित पुस्तक 'दत्तोपंत ठेंगड़ी-जीवन दर्शन' के प्रथम दो खण्डों के विमोचन अवसर पर कही।

उन्होंने कहा कि आज गरीबी, भुखमरी, अपराध, अशिक्षा और बेरोजगारी रूपी राक्षसों से मुक्ति का मार्ग क्या है? ठेंगडी जी ने इन राक्षसों से जीत और मुक्ति का मार्ग क्या हो सकता है इसका दर्शन श्रमिक कार्यों से दिया है। इन्द्रेश कुमार ने कहा कि आज के भोगवाद से अगर निकलना है, देश को शोषण, अत्याचार,हिंसा से मुक्त रखना है तो उसके लिए ठेंगड़ी जी का जीवन प्रकाश स्तम्भ के समान है।

भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व लखनऊ के महापौर डा. दिनेश शर्मा ने कहा कि आज के युवाओं को ठेंगड़ी जी के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। उनका आर्थिक चिन्तन पूंजीवाद और साम्यवाद के अधूरे चिन्तन से उकताये विश्व के लिये एक नई दिशा है। दुनिया भारतीय अर्थव्यवस्था के अनुरूप चले इस ओर सबकी निगाहें हैं। महापौर ने कहा कि ठेंगड़ी जी ने इंटक में भी काम किया।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि मजदूर संघ के क्षेत्र संगठन मंत्री पवन कुमार ने कहा कि दत्तोपंत जी के बताये रास्ते पर चलना आज का युगधर्म है। उनसे सम्पर्क वाले हर व्यक्ति को लगता था कि दत्तोपंत जी हमारे हैं। दत्तोपंत ठेंगड़ी जी का जीवन हिमालय से भी ऊंचा और समुद्र से भी गहरा था।

सह प्रान्त संगठन मंत्री अनुपम ने कहा कि दत्तोपंत ठेंगड़ी जी ने ७० के दशक में घोषणा की थी कि साम्यवाद अधिक दिनों तक नहीं रहेगा। आज उनकी भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई। संघ का जो विचार प्रवाह आजादी से पहले चला शून्य से प्रारम्भ होकर आज शिखर पर है। कार्यक्रम की अध्यक्षता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रान्त संघचालक प्रभु नारायण श्रीवास्तव ने की। इस अवसर पर मजदूर संघ के प्रदेश महामंत्री श्रीकान्त अवस्थी, संघ के प्रान्त प्रचारक संजय, धर्म जागरण विभाग के राम लखन सिंह, भारतीय मुस्लिम मंच के महिरजध्वज सिंह, किसान संघ के वीरेन्द्र सिंह और विभाग कार्यवाह प्रशान्त भाटिया प्रमुख रूप से उपस्थित थे। ■

देहरादून पुस्तक मेला सम्पन्न

देहरादून। नगर में १२ सितम्बर से २० सितम्बर तक आयोजित मेला निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। अन्तिम दिन भी पूर्व के दिनों की ही तरह लोगों में मेले में आने का उत्साह दिखाई दिया और उन्होंने जमकर पुस्तकें क्रय कीं। रविवार का अवकाश होने के कारण पूर्वान्ह ११ बजे से ही मेले में भारी संख्या में लोगों ने आना आरम्भ कर दिया था। दिन में वर्षा भी हुई जिससे वातावरण वा मौसम सुहावन व कुछ शीतलता से युक्त हो गया था। मेले में कुछ पुस्तकों के स्टाल ऐसे भी दिखे जो कि खाली खाली दिख रहे थे जबकि दो दिन पूर्व वह पुस्तकों से भरे थे। यह सब मेले में आगन्तुकों के बड़ी संख्या में पधारने और पुस्तकों को क्रय करने से ही सम्भव हुआ। पूर्व दिनों की भांति अंतिम दिन भी रात्रि ८ बजे तक बड़ी संख्या में लोग आ रहे थे और पुस्तकें खरीद रहे थे। ■

काव्या की मासिक गोष्ठी

लखनऊ। नगर के साहित्यिक समूह काव्या की मासिक गोष्ठी ५ सितम्बर को गोमती नगर कार्यालय पर सम्पन्न हुई। गोष्ठी का आरम्भ समूह की संस्थापक निवेदिता श्रीवास्तव ने 'गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूँ पाँव' से किया। उन्होंने शिक्षक दिवस व कृष्ण जन्माष्टमी साथ होने को दुर्लभ संयोग बताया। अध्यक्षता लखनऊ वि. वि. की ऊषा श्रीवास्तव, संचालन मनोज शुक्ल व सरस्वती वंदना आभा खरे ने की।

प्रथम सत्र में लघुकथा व द्वितीय सत्र में कविता पाठ हुआ जिसमें डॉ निर्मला सिंह, कहानीकार अलका प्रमोद, प्रज्ञा पाण्डेय, दिव्या शुक्ल, प्रदीप कुशवाहा, कुन्ती मुखर्जी, शरदेंदु मुखर्जी, विजय पुष्पम, विजय राज, प्रकाश श्रीवास्तव, प्रीति श्रीवास्तव, साजिदा सबा, अजीत शेखर, पप्पू लखनवी आदि ने शिरकत की। ■

कार्टून -- काजल कुमार

जय विजय मासिक
कार्यालय– ४/३, अक्षय निवास, २, सरोजिनी नायडू मार्ग, लखनऊ - २२६००१ (उ प्र)
मो 09919997596, 08004664748, ई-मेल : jayvijaymail@gmail.com
वेबसाइट : www.jayvijay.co, www.jayvijay.co.in
सम्पादक- विजय कुमार सिंघल
सहसम्पादक- विभा रानी श्रीवास्तव, अरविंद कुमार साहू, रमा शर्मा (जापान)
'जय विजय' का नेट संस्करण ई-मेल से निःशुल्क भेजा जाता है। रचनाओं में व्यक्त किये गये विचार सम्बंधित रचनाकारों के हैं। उनसे सम्पादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।